जाहेर खबर.

पुस्तक मीलनेका ठीकांणा

अजमेर. शेठजी श्री, सोभागमलजी

ढढाकी हवेली

ठी. कडकांके चोकमें.

सुधारस संग्रहः
प्रथमभाग रागविलास.
॥ दोहा ॥

दुर्जन वन्दो प्रथम तौ सज्जन पीछे नीक ॥
मुखप्रक्षालनसें पुरा गुदाप्रक्षालन ठीक ॥ १ ॥

दोय नारंगी दोय अनार ए देशीः किसनलाल साधू गुणवांन भवजल तारक नाव समान टेर संप्रदाय श्रीपूजरतनकी उत्तम जांणे सकल जिहांन ॥ कि ॥ १ ॥ श्रीनंदराम मुंनिका चेला संतशिरोमणि दया निधान ॥ कि ॥ २ ॥ करुणारस भीनो चित दीनो ॥ षटकायाने जीतब दांन ॥ कि ॥ ३ ॥ कहण रहण सम सरल स्वभावी सौम्प निजर मनमें नहीं मांन ॥कि०॥४॥ तज परमाद रमे निजगुणमें विकथा छोड भजे भगवान ॥की०॥ ५ ॥ जब देखूं तब करमें पुस्तक एक सदा भणवाको ध्यान ॥ कि० ॥ ६ ॥ क्रोधभुजंगम निरविष कीनों पीनो उपसम रस परधान ॥कि०॥ ७ ॥ हेतुयुक्ति दृष्टांत करीनें भिनभिन वांचे खूब बखांण ॥कि०॥८॥ आगम अरथ सुधारस सुंणनें भव्य करे नित पावन कांन ॥ कि०॥ ९ ॥ तिमिर अज्ञांन मिटावण प्रगट्यो भरत खंडमें नूतन

पान ॥कि०॥ १० ॥ चिरंजीव रह्यो पद्माकर पै नि
शदिन बरसो कोटि कल्याण ॥कि० ॥ ११ ॥ वंदित
मार्गीलाल विधा मूल जयपुरवासी मङ्गल सुथान
॥कि०॥१२॥ दूसरी भैरवि ॥ मैंतो आपपूरणकि आन
गुणगांनांग करो बखान ॥ मैं ॥ माया मोह क्रोधमें
तनधर मैं गतिहींन न सूझ्यो ग्यान ॥मैं०॥ १ ॥ आ
तम निंदा करनों हानुं परनिंदामें आणेवांन मैं ॥२॥
जिनगीला देवी मैं जिनुं पै सम्यक्त्व खोयो जांन
॥ मैं ॥ ३ ॥ जग प्रपंचकी हैंनकथामें काल गमायो
न कीयो शुभ ध्यांन ॥ मैं ॥ ४ ॥ निरमल रत्न त्रय
निजगुणकी मैं सूरत नहीं करि पिछांन मैं० ॥ ५ ॥
शब्द रूप रस गंध स्पर्शमें मन छुटि जावे जिम
पांन ॥मैं०॥ ६ पुदगल धर्मी ग्यानमूरतें ममता दि
नदिन बधते थांन ॥मैं०॥७॥ रागद्वेष दोनुं दल जारी
निशदिन मोकूं करत हेरांन ॥ मैं० ॥८॥ आगमिचमें
करूं अंधेरो जांण बूझ होरह्यो अजांण ॥ मैं० ॥९॥
राजदेश भोजन तिरियाकी विकथा प्यार लगे नि
जकांन ॥ मैं० ॥ १० ॥ मैं अवतार लीयो कलयुगमें
केवल भव पूरन परिमांन ॥ मैं० ॥ ११ ॥ सबमें
मुदित भूल हमारी मैं जांणुंके श्रीभगवान॥मैं०॥१२

अवगुंण मोमें प्रभुगुंणजेता कहुं अबकेता सुणों सु
जांन ॥ में० ॥ १३ ॥ अपराधीसुत किसनकृपातर
जिमतिम करतारोबृधमांन ॥ १४ ॥

ग्रन्थकर्तृगुणवर्णनम्–शिखरिणीछन्द.

स्फुरच्छ्रीनागोराभिधनगरपौरार्चितपदः
सुपूज्यो रत्नेन्दुर्जिनचरणसेवार्जितयशाः ॥
ततस्तन्मार्गीयोऽभवदमलधीः स्वामिपदभाक्
स्वनाम्नादौ नन्दं पदमथ भजन्नामममपरम् ॥ १ ॥
नियम्यादौ लोलं विषयकुपथेष्विन्द्रियगणं
ततो भूयो भूयो विषयसुखलुब्धं निजमनः ॥
समाकृष्यैकस्मिन्परमरमणीये जिनपदे
समाधाय स्वच्छं मननिरतोऽभून्मुनिवरः ॥ २ ॥
विशुद्धस्तच्छिष्यो गतविषयतृष्णः सुहृदय-
स्तपस्वी तेजस्वी जगति च यशस्वी विजयते ॥
निधायादौ कृष्णं पद मनुपदं लालवचनं
निजाख्ये विख्यातो गुरुचरणसेवार्पितमनाः ॥३॥
स जैनाढ्यः श्वेताम्बरजनसमाराधितपद
प्रधानः सन्मानोऽपि च निरभिमानो मधुरवाक्॥
निधाने ग्रन्थानामभिमतविधानेऽतिमतिमा–
न्समाधाने माने जगति जनतायाः सुनिपुणः॥४॥

सुधा यत्रास्वादो भवति न विरागे रसवरे
नवाकैर्वाक्यार्थैः स्फुरः स्फारीकृतं गतवुरम् ॥
स्वकृत्या सद्ग्रन्थं विविधरसनाविर्भवहितं
तथा श्राद्धो नागो रचितजनबोधैर्विनयुतः ॥५॥
विरागो रागाद्यः सकलरसभागाः प्रकटिता
विरागः संसारात्सकलजनरागो जिनवरे ॥
स रागो यत्र प्रोल्लसति विनयः सत्प्रकरः
सरागैर्नीरागैः श्रवणमननीयः सुहृदयैः ॥ ६ ॥
सुधारसंबन्धीयां रसमगन सुसंपद इति
कृतस्तेन ग्रन्थो जनहितकरः कृष्णमुनिना ॥
विनागारुह्लागे जगति पुरुषार्थो इव मता
विरागो रागाद्यः प्रथमगणनायां निनिहितः ॥७॥
द्वितीयो रागोऽत्र प्रभवति मनोरञ्जन इति
समाश्रुत्य प्राज्ञः किमु च कितचित्तो न भवति ॥
तृतीयो जैनानां गुणगणकथासंयुतहितो-
पदेशानां मालेति समनिहितो ग्रन्थविषये ॥ ८ ॥
चतुर्थोऽलङ्कारोत्तरनिहितचूडामणिरिति
समाख्यातो ग्रन्थे विविधविषये श्रीमुनिकृते ॥
विरागः संसाराज्जिनचरणरागोजनिमतां
सुधाया आस्वादो भवति सुलभो यत्कृतपातः॥ ९ ॥

विभागस्त्वाद्योऽयं स्वजनकथनेनाङ्कित इह
त्रयो भागा अन्ये क्रमपरतया यन्त्रखचिताः ॥
भविष्यन्ति व्यक्ताः सुहृदयसमालोचनगता
स्ततस्तैरानन्दोल्लसितमनसो वै परिषदः ॥ १० ॥
समालोक्य ग्रन्थं विविधरसरागाङ्गसहितं
कथासंदर्भारम्भणपरमनिर्वाणललितम् ॥
सहर्षोयं नारायणवचनवाच्यो द्रुतमना
मुनीन्द्रं कृष्णाख्यं कथयति चिरं जीवतु भवान्॥११॥

॥ शार्दूल विक्रीडित ॥

शान्तः शीतरुचा समो व्रतधरः कारुण्यपाथोनिधि-
र्वाचालोऽन्यगुणादिवर्णनविधौ स्वीये च मौनं दधत्
शास्त्राभ्यासविलोकनैकनिपुणः श्रीमाञ्छ्रुतशोऽनिशं
ध्यानासक्तमना जनार्चितपदःकृष्णोमुनी राजते॥१२॥

विज्ञापना—

धर्मार्थ काममोक्षेषु यस्यैको पिन विद्यते॥ अजा गलस्तन स्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥ १ ॥ इस अपार निःसार संसार पारावारके विषें डूबते हुवे प्राणियोंकों दशदृष्टान्तों करके यह मनुष्यजन्म पाना अत्यन्तही कठिन हैं तिसमेंभी उत्तमदेश जाति कुल संत्संगति इन्द्रियादिकका सामर्थ्य पाना यह अति

कठिनतर है परन्तु पुण्यवानके अल्पमें उनकी प्राप्त होसकती। जिस मनुष्यने जो गुरु देव और धर्मका निर्णय नहीं किया और सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र पहिचाननेके लिये यत्न नहीं किया और न धर्म अर्थ काम मोक्ष इन च्यार पुरुषार्थनमेंसे एककी नहीं किया तो उसका जन्मलेना अजागल स्तनवत् निरर्थक है परन्तु इनचारों पुरुषार्थोंमें भी धर्मही प्रधान और उत्कृष्ट मङ्गलोत्पादक है। और उभय लोकमें आनन्द दायक है। यदुक्तम्– 'धर्मः शर्म परत्र चेह च नृणां धर्मोन्धकारे रविः, इति। और त्रिवर्गमें भी धर्म ही प्रधान कहा है "त्रिवर्ग संसाधन मन्तरेण पशोरि वायुर्विफलं नरस्य॥ तत्रापि धर्म प्रवरं वदन्ति नतं विनायद्भवतोर्थ कामौ,, इति॥ जिससे अर्थ काम सिद्ध होते हैं। अन्यथा–'न धम्मकलापर मत्यिकलं' इस लिये धर्माचरण करणा यह संपूर्ण जनोंको पूर्णतर लाभदायक है जिसमें भी जो इस लोकमें अनेक सुख और परलोकमें स्वर्गादिमोक्ष पर्यन्तका देनेवालातो श्रीवीतरागप्रणीत अहिंसा रूप धर्म है सो परम सूक्ष्महै उस धर्मकी प्राप्ति श्रुत ज्ञानसे है। यद्यपि मतान्तरोंसे धर्म अनेक प्रकारका है तथापि

श्रीतीर्थंकर देवाधिदेवोंनें तो द्विविधही धर्मनिरूपण किया हैं श्रुत धर्म और चारित्र धर्म श्रुत धर्मसेंही चारित्र धर्म होता हैं अन्यसे नही। श्रुत धर्म वह हैं कि जो सर्वज्ञ सर्वदर्शी अनन्तज्ञानी वीत राग प्रणीत हैं क्यों के उसके श्रवण करनेसें श्रुत ज्ञान-की प्राप्ती होती हैं अन्यसें नही। इस लिये बुद्धि-मान् पुरुषोंकों श्रुत धर्मकी प्राप्तिके अर्थ अवश्य यत्न करणा चाहियें कारण श्रुतज्ञानके विना हेयज्ञेय उपादेयका विज्ञान नही होता हैं। और सम्यक् प्रकारसें अहिंसारूप परमधर्मका मर्म नही जान सक्ता हैं। इससें सर्व साधारण जनोंकी रुचिके लि ये लोक भाषामें एक सुधारससंग्रह नामक ग्रन्थ बाललीला माफिक किया हैं जिसमें च्यार भाग हैं प्रथम रागविलास नाम हैं तिसमें मङ्गलाचरण और कविताकी विधि श्रीगुरुदेवजी महाराजके गुण पञ्च परमेष्ठि गुणमाला समकित लहरी विवेक मञ्जरी चतुर्दश गुणस्थानकरचना सनत्कुमार राज ऋषि-चौढा लियो और औपदेशिक फुटकर स्तवनादिक है। और द्वितीय सद्भारज्ञान विलास नाम हैं जि-समें हितोपदेशीय वैराग्य रसभृत विचित्रप्रकारके

कठिनतर है परन्तु पूर्वपुण्यके उदयसे उसकी प्राप्ति होसकती। जिस मनुष्यने भी शुभ देवगुरु धर्मकी निराशा नहीं। किया और सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र पहिचाननेके लिये यत्न नहीं किया और न धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चार पुरुषार्थोंमेंसे एककी। नहीं किया तो उसका मनुष्यजन्म अकारथ निरर्थक है परन्तु इसमें मनुष्यपनकी धर्मही प्रधान और उत्कृष्ट मङ्गलोत्पादक है। और उभय लोकमें आनन्द दायक है। यदुक्तम्- 'धर्म एव परं मित्रं न नृणां धर्मान्धकारे रविरिव। । और त्रिवर्गोंमेंभी धर्म ही प्रधान कहा है "त्रिवर्ग संसाधन मन्तरेण पशोरिवायुर्विफलं नरस्य॥ तत्रापि धर्म प्रवरं वदन्ति न तं विना यद्भवतोऽर्थ कामौ,, इति॥ जिससे अर्थ काम सिद्ध होते है। अन्यच्च 'न धर्मकल्पतरु मस्तिकल्प' इस लिये धर्माचरण करना यह संपूर्ण जनोंको पूर्णतया आनन्ददायक है जिसमेंभी जो इस लोकमें अनेक सुख और परलोकमें स्वर्गादिमोक्ष पर्यन्तका देनेवाला तो श्रीवीतरागप्रणीत अहिंसा रूप धर्म है सो परम सूक्ष्म है उस धर्मकी प्राप्ति श्रुत ज्ञानसे है। यद्यपि मतान्तरोंसे धर्म अनेक प्रकारका है तथापि

श्रीतीर्थंकर देवाधिदेवोंनें तो द्विविधही धर्मनिरूपण किया हैं श्रुत धर्म और चारित्र धर्म श्रुत धर्मसेंही चारित्र धर्म होता हैं अन्यसे नही। श्रुत धर्म वह हैं कि जो सर्वज्ञ सर्वदर्शी अनन्तज्ञानी वीत राग प्रणीत हैं क्यों के उसके श्रवण करनेसें श्रुत ज्ञान-की प्राप्ती होती हैं अन्यसें नही। इस लिये बुद्धि-मान् पुरुषोंकों श्रुत धर्मकी प्राप्तिके अर्थ अवश्य यत्न करणा चाहियें कारण श्रुतज्ञानके विना हेयज्ञेय उपादेयका विज्ञान नही होता हैं। और सम्यक् प्रकारसें अहिंसारूप परमधर्मका मर्म नही जान सक्ता हैं। इससें सर्व साधारण जनोंकी रुचिके लि ये लोक भाषामें एक सुधारससंग्रह नामक ग्रन्थ बाललीला माफिक किया हैं जिसमें च्यार भाग हैं प्रथम रागविलास नाम हैं तिसमें मङ्गलाचरण और कविताकी विधि श्रीगुरुदेवजी महाराजके गुण पञ्च परमेष्टि गुणमाला समकित लहरी विवेक मञ्जरी चतुर्दश गुणस्थानकरचना सनत्कुमार राज ऋषि-चौढा लियो और औपदेशिक फुटकर स्तवनादिक हैं। और द्वितीय सज्जनरञ्जन विलास नाम हैं जि-समें हितोपदेशीय वैराग्य रसभृत विचित्रप्रकारके

स्तवन स्वाध्याय हैं । तृतीय जैनकथा रत्नमाला नाम हैं जिसमें विक्रमसेन पद्मावतीनमिराजर्षी स श्रमण सार्थीकोराग और वर्धमान देशनाके जितने दीक आगमशोता कृष्णजादिकों के गौतमशिष्यांप ह्रदाशिया अष्टनवदाक्षिपादि वैराग्यका विचार है । चतुर्थ चित्र काव्यालङ्कार नाम है जिसमें अनेकप्र कारके चक्रबन्ध कुमला मनोहर पद्मबन्ध गाथि याबन्ध गतागत मतगयंद हस्तनागपादिकबन्धके व्या ख्यानोपयोगी दोहाकवित्त कुण्डलियादिछन्द प्र न्थहै । इसप्रकारसें च्यार भाग रचना करकें व्याख्या नमें धर्मोपदेशना दिई तिस समयमें श्री संघनें प्र सन्न होकर प्रार्थना करी कि महाराज यह पुस्त क तो हम सवलोगोंको मिलनी चाहिये हम अना यासमेंही जैनधर्मको जाणकर हमारा कल्याण सं पादन करे । यह बात सुनकर महाराजनें कहा कि भाई पुस्तक देनेका तो हमारा कल्प नही और य हांपर यत्नाचारसें जो कोइ लिख लेवे तो उनकी इछा है । तव कितनेक श्रावकोने लिखाया तथापि सर्व जनोकी इछा पूर्ति न हुई तव कितनेक साध र्मिक भाइयोने परोपकार वा धर्मोन्नतिके कारणसें

छपानेका उद्योग किया सो यह ग्रन्थ छपवानेकों मुम्बई भेजा सवाई जयपुर निवासी श्रावक मगन मलजीचरड्याके पास केवल रागविलास प्रथम भाग। इसका तीन भाग फेर हैं सो समयानुसारे छपवानेका इरादा हैं सो फिर देखा जावेगा। इस वास्ते सर्व जैनी भाइयोंसे यह ही कहना हैं कि निष्फल कार्योंमें द्रव्यका व्यय नही करे और ज्ञान की वृद्धि वा धर्मोन्नतिके लिये धनका व्यय अवश्यही करे क्यों के यह ही सर्वोत्कृष्ट है॥

॥ कवित्त ॥

"भयद अपारयो असार भवसिन्धु तामें तरणि समान गुरु नमो नित्यमेवजी लोहाके समान नर पारस बनावे गुरू साहूपूज्यनीक पद देवे स्वयमेवजी ऋद्धिदेत सिद्धिदेत भक्तिज्ञान बुद्धिदेत मुक्तिदेत भव्य जीव सारे ज्यांकी सेवजी महिमा निकेत मुनि कृष्णलाल राज तेसु देवराज शिष्य कहे धन्य गुरु देवजी ॥ १ ॥

॥ अस्यार्थः ॥

अनेकप्रकारका भयको देनेवाला इस संसाररूप

हिमाके घर मुनि कृष्णलाल राजते सुकहिता ज्ञली प्रकारे शोज्ञत हैं तासों देवराज नामे निज शिष्य वारंवार धन्यवाद देता हैं ॥

निवेदनम्–

सम्यक् दृष्टिसर्व साधर्मी ज्ञाइयोसें प्रार्थना हैं कि इस पुस्तकमें दृष्टिदोषसें अथवा प्रमादके वस लिखनेंमें तथा गापनेमें ज्यो कोई अशुद्ध बप गया हो तो विद्वज्ञान शिरोमणि मेरेपर पूर्णतर कृपाकर सुधारलीजिये और इस पुस्तकको अविनय आसातनासें नही पढें यत्नाचारसें इसको पढें पढावें कारण अजैनासें पढणेमें कर्मवंध होता हैं और नंदीसूत्रमें तीन प्रकारकी पुरुषदा कही हैं। तं जहां–जाणिया अजाणिया डुवियड्ढा, जिसमेंसे प्रथम सुजाण पुरुषदा तो सुगमतासें जरूर धर्मोपदेशना देने योग्य है ज्ञेर द्वितीय अजाण पुरुषदा समजावणमें तो अति कठिनतर हैं परंतु धर्म कथा कहनेके योग्य है तृतीय डुवियड्ढ अनेक प्रकारके दोषोंसे ज्ञरीहुई फूटे गूमडेके सदृश खच्चर वा दग्धवीजके समान वायूंज्ञरी चर्मदीव

समुद्रत नगसि कहिये तिहुंलोकमाहान पर्वतमाही श्रीगुरुदेवजी महाराजकों है सन्मतीसों सिधिहुईक निरन्तर नमस्कार करो। कैसे है श्रीगुरुदेवजी महाराज छाड़ा ज्यों कृशानु है अगकै समान नर कहिये मनुष्य तरु आदि है तिनकों अनादी पारस बनावे है अर्थात पारसमें सिर्फ इतनीही शक्ति है कि लोहेका सोना बनावे है और श्रीगुरुदेवजी महाराजकी ऐसी अतिशय शक्ति है कि खुद पारसही बनावे तिस से जो चाहे जितनाही सुवर्ण बना लेवे। और सातु रत्नत्रय चला पत्तनीक पर आपही कृपा कर देते है। अर्थात साधकभा सब कोई धरे परन्तु श्रीगुरुदेवजी महाराज साधकाका सिध पत्तनीक करदेवे है। फिर कैसे है श्रीगु० अनेक प्रकारकी ऋद्धिके दाता अणिमादि अष्ट सिद्धिके दाता विनयादि शक्तिके दाता समस्त आनन्द दाता उत्पत्तिया, विणिया, कम्मिया, परिणामिया ए च्यार प्रकारकी बुद्धिके दाता किंबहुना स्वर्गादि मुक्तिपर्यन्त सुखोंके देनेवाले। और श्रीगुरुदेवजी महाराजकी सेवा तन मनसें करे है उसीको निकट नहीं जाने। ऐसे शीलादि स-

हिमाके घर मुनि कृष्णलाल राजते सुकहिता जली प्रकारे शोजत हैं तासों देवराज नामे निज शिष्य वारंवार धन्यवाद देता हैं ॥

निवेदनम्–

सम्यक् दृष्टिसर्वे साधर्मी जाइयोसें प्रार्थना हैं कि इस पुस्तकमें दृष्टिदोषसें अथवा प्रमादके वस लिखनेंमें तथा गपनेमें ज्यो कोई अशुद्ध ठप गया हो तो विद्वज्जान शिरोमणि मेरेपर पूर्णतर कृपाकर सुधारलीजिये और इस पुस्तकको अविनय आसातनासें नही पढें यत्नाचारसें इसकों पढें पढावें कारण अजैनासें पढणेमें कर्मवंध होता हैं और नंदीसूत्रमें तीन प्रकारकी पुरुषदा कही हैं। तं जहां–जाणिया अजाणिया डुवियद्धा, जिसमेंसे प्रथम सुजाण पुरुषदा तो सुगमतासें जरूर धर्मोपदेशना देने योग्य है उर द्वितीय अजाण पुरुषदा समझावणमें तो अति कठिनतर हैं परंतु धर्म कथा कहनेके योग्य है तृतीय डुवियद्ध अनेक प्रकारके दोषोंसे जरीहुई फूटे घूमडेके सदृश खच्चर वा दग्धवीजके समान वायूजरी चर्मदीव

ईर्षा तृषा अभिमान करनेवालोंको पुस्तक बिल्कुल धर्मोपदेश न देने योग्य नहीं है उनको यह पुस्तक न देना चाहिये इस कथनको प्रयोजन यह है कि जगह जगह ग्रन्थोंमें जिनमत धर्म निरूपण किया है परंतु इस पंचम कालके प्रभावसे भारतमें जिन मूल धर्म दिनों दिन न्यून हुआ चला जाता है और राग द्वेषकी प्रबलतासे पक्षपातके झगडेमें पडे हुवे कितनेक लोगोंकी बुद्धि भ्रष्टतासे कुगुरोंके नहि जानेसे विपरीत हो गई है जिससे कुमतकेही वन स्थापनाके जालादि मतोंमें लगनेसे करनेके समदृष्टि और प्रवृत्तिमें विषम दृष्टि आपनी उन्नति और परनिंदापर ईर्ष्याके सिवाय जड बुद्धि कुछ भी तो नहीं जानते हैं कि जिनय मूल धर्म क्या चीज होता है और जैनधर्म किसके कहते है ग्रन्थ कहा है कि

॥ दोहा ॥

कंचन तजवो सहज है सहज त्रियाको नेह ॥ परनिन्दा पर ईर्ष्या तुलसी दुर्लभ एह ॥ १ ॥ हरदी जरदीनां तजे खटरस तजे न आंम ॥ असली तो अ

वगुण तजे गुणकूं तजे गुलाँम ॥ २ ॥ गुण छोडी अ
वगुण करे श्रावक सोक समान ॥ अवगुण तज गु
णकूं ग्रहै सो श्रावक गुणवान ॥३॥ गुणवतांतो गुण
सुणी पामें मन परमोद ॥ सोकजोखसा मानवी अ
वगुण काढे खोद ॥ ४ ॥ निन्दक सम उपगार कुण
करे जगतमे कोय ॥ जलसावूं रुजगार विना करम
मैलदे धोय ॥५॥ और समयसार नाटकमे ज्यो पञ्च
प्रकारके जीव कहे है डूंघा चूंघा सूंघा ऊंघा घूंघा
इ समेसे चूंघा चतुर हलूकर्मी भव्य जीवोकूं यह पुस्तक
रामसीतावत् सुप्यार लगेगा। लिखनेमे दलगीरी आवे
हैं कि आधुनिक जैनी लोगोमे पठन पाठनका प्र
चार वहुत कम हो गया हैं यहांतक है कि सामा
यिक प्रतिक्रमणका अर्थ तो दूर रहा परंतु सूत्रपा
ठभी तो शुद्ध नही आते हैं अंव देखिये कि जिस
को उभयकाल नित्य करणेमें वभी भारी कर्मों की
निर्जरा होय उत्कृष्ट रसायन आवे तो तीर्थंकर पद
की प्राप्ति होय सोभी शुद्ध नही आवे तो ये कि
तनी वभी भारी भूलकी वात है यह मेरा कथन
विवेकी सज्जन पुरुषोके विचारणे लायक हैं ॥

हीनत्व हुआ कलिकाल कलिकालकी पुस्तक निषधा धर्मोपदेश न देवै गोप्य नहीं है उसकी गरज पुनः न देना चाहीये इस कालको पंचमकाल कहते हैं कि ठांम ठांम सूत्रोंमें जिनप्रभृत भी निरूपण किया है परंतु इस पंचम कालके प्रभावसे आजकल जो जिन मूल धर्म दिनों दिन दुर्लभ हुवा चला जाता है और राग द्वेषकी प्रबलतासें पक्षपातके जालेंमें पडे हुवे कितनेक लोगोंकी बुद्धि अज्ञानताकी कुयुक्ति ग्रहि करनेमें विपरीत हो रही है जिससे सूत्रकी वत स्याद्वादके जलादि मदोंमें गुंथकर करुणाके समदृष्टि और प्रवृत्तिमें विषम दृष्टि आगई। पक्षनि और परनिंदापर ईर्ष्याके सिवाय उन बुद्धि कुछ भी तो नहीं जानते हैं कि विनय मूल धर्म क्या चीज होता है और जैनधर्म किसकुं कहते हैं सत्य कहा है कि

॥ दोहा ॥

कंचन तजवो सहज है सहज त्रियाको नेह ॥ प रनिन्दा पर ईर्ष्या तुलसी दुर्लभ एह ॥ १ ॥ हरदी जरदीनां तजे खटरस तजे न आंम ॥ असली तो अ

वगुण तजे गुणकूं तजे गुलाँम ॥ २ ॥ गुण छोडी अ
वगुण करे श्रावक सोक समान ॥ अवगुण तज गु
णकूं ग्रहै सो श्रावक गुणवान ॥३॥ गुणवतांतो गुण
सुणी पामें मन परमोद ॥ सोकजोखसा मानवी अ
वगुण काढे खोद ॥ ४ ॥ निन्दक सम उपगार कुण
करे जगतमे कोय ॥ जलसावूं रुजगार विना करम
मैलदे धोय ॥५॥ और समयसार नाटकमे ज्यो पञ्च
प्रकारके जीव कहे है डूंघा चूंघा सूंघा ऊंघा घूंघा
इ समेसे चूंघा चतुर हलूकर्मी भव्य जीवोकूं यह पुस्तक
रामसीतावत् सुप्यार लगेगा। लिखनेमे दलगीरी आवे
हैं कि आधुनिक जैनी लोगोमे पठन पाठनका प्र
चार वहुत कम हो गया हैं यहांतक है कि सामा
यिक प्रतिक्रमणका अर्थ तो दूर रहा परंतु सूत्रपा
ठभी तो शुद्ध नही आते हैं अंब देखिये कि जिस
को उभयकाल नित्य करणेमें बडी भारी कर्मों की
निर्जरा होय उत्कृष्ट रसायन आवे तो तीर्थंकर पद
की प्राप्ति होय सोभी शुद्ध नही आवे तो ये कि
तनी वडी भारी भूलकी वात हैं यह मेरा कथन
विवेकी सज्जन पुरुषोके विचारणे लायक हैं ॥

हीन पुरुषा अभिमान धरनेवालों पूर्वापर विरुद्ध धर्मोपदेश न देवे योग्य नहीं है उसको यह पुस्तक न देना चाहीये इस कथनका प्रयोजन यह है कि ठांम ठांम सूत्रोंमें विनयमूल धर्म निरूपण कियाहै परंतु इस पंचम कालके प्रभावसें आगे तो विनय मूल धर्म दिनों दिन दुर्लभ हुवा चला जाता है और राग द्वेषकी प्रबलतासें पक्षपातके कारणसें दबे हुवे कितनेक लोगोंकी बुद्धि भ्रष्टताकी कुगुरूके बहिकानेसें विपरीत हो रही है जिससें कुगुरूकी चत स्वात्मनरे जात्यादि मदोंमें चढेहुवे कहतेहैं समदृष्टि और प्रवृत्तिमें विषम दृष्टि आपकी बडाई और परनिंदापर ईर्षाके सिवाय जड बुद्धि कुछ भी तो नहीं जानते हैं कि विनय मूल धर्म क्या चीज होता है और जैनधर्म किसकूं कहते हैं सत्य कहा है कि

॥ दोहा ॥

कंचन तजवो सहज है सहज त्रियाको नेह ॥ परनिन्दा पर ईर्ष्या तुलसी दुर्लभ एह ॥ १ ॥ हरनी जरदीनां तजे खटरस तजे न आंम ॥ असली तो अ

वगुण तजे गुणकूं तजे गुलाँम ॥ २ ॥ गुण छोडी अ
वगुण करे श्रावक सोक समान ॥ अवगुण तज गु
णकूं ग्रहै सो श्रावक गुणवान ॥३॥ गुणवतांतो गुण
सुणी पामें मन परमोद ॥ सोकजोखसा मानवी अ
वगुण काढे खोद ॥ ४ ॥ निन्दक सम उपगार कुण
करे जगतमे कोय ॥ जलसावूं रुजगार विना करम
मैलदे धोय ॥५॥ और समयसार नाटकमे ज्यो पञ्च
प्रकारके जीव कहे है डूंघा चूंघा सूंघा ऊंघा घूंघा
इसमेसे चूंघा चतुर हलूकर्मी भव्य जीवोकूं यह पुस्तक
रामसीतावत् सुप्यार लगेगा। लिखनेमे दलगीरी आवे
हैं कि आधुनिक जैनी लोगोसे पठन पाठनका प्र
चार वहुत कम हो गया हैं यहांतक है कि सामा
यिक प्रतिक्रमणका अर्थ तो दूर रहा परंतु सूत्रपा
ठभी तो शुद्ध नही आते हैं अव देखिये कि जिस
को उभयकाल नित्य करणेमें वडी भारी कर्मों की
निर्जरा होय उत्कृष्ट रसायन आवे तो तीर्थंकर पद
की प्राप्ति होय सोभी शुद्ध नही आवे तो ये कि
तनी वडी भारी भूलकी वात है यह मेरा कथन
विवेकी सज्जन पुरुषोके विचारणे लायक हैं ॥

हीन तथा अभिमान करनेवाली पुरुषको विशुद्ध धर्मोपदेश न देने योग्य नहीं है उसको यह पुस्तक न देना चाहीये इस कथनको प्रयोजन यह है कि जांम जांम सूत्रोंमें विनयमूल धर्म निरूपण किया है परंतु इस पंचम कालके प्रभावसे आगमोंमें विनय मूल धर्म दिनों दिन छुपता हुवा चला जाता है और राग द्वेषकी प्रबलतासें पक्षपातके फंदेमें पडे हुवे कितनेक लोगोंकी बुद्धि ब्रह्मचारी कुगुरोंके नहि फंदेमें विपरीत हो रही है जिसमें सूत्रोंकरी वन गामनगरे जलादि सबोंमें ठहरके कहनेके समदृष्टि और प्रवृत्तिमें विषम दृष्टि अपनी उन्नति और परनिंदापर ईर्षाके सिवाय जड बुद्धि कुछ भी तो नहीं जानते हैं कि विनय मूल धर्म क्या चीज होता है और जैनधर्म किसकूं कहते हैं सत्य कहा है कि

॥ दोहा ॥

कंचन तजवो सहज है सहज त्रियाको नेह ॥ परनिन्दा पर ईर्ष्या तुलसी दुर्लभ एह ॥ १ ॥ हरदी जरदी नां तजे खटरस तजे न आंम ॥ असली तो अ

वगुण तजे गुणकूं तजे गुलाँम ॥ २ ॥ गुण छोडी अ
वगुण करे श्रावक सोक समान ॥ अवगुण तज गु
णकूं ग्रहे सो श्रावक गुणवान ॥३॥ गुणवतांतो गुण
सुणी पामें मन परमोद ॥ सोकजोखसा मानवी अ
वगुण काढे खोद ॥ ४ ॥ निन्दक सम उपगार कुण
करे जगतमे कोय ॥ जलसावूं रुजगार विना करम
मैलदे धोय ॥५॥ और समयसार नाटकमे ज्यो पञ्च
प्रकारके जीव कहे है डूंघा चूंघा सूंघा ऊंघा घूंघा
इ समेसे चूंघा चतुर हलूकर्मी भव्य जीवोकूं यह पुस्तक
रामसीतावत् सुप्यार लगेगा। लिखनेमे दलगीरी आवे
हैं कि आधुनिक जैनी लोगोमे पठन पाठनका प्र
चार वहुत कम हो गया हैं यहांतक है कि सामा
यिक प्रतिक्रमणका अर्थ तो दूर रहा परंतु सूत्रपा
ठभी तो शुद्ध नही आते हैं अब देखिये कि जिस
को उभयकाल नित्य करणेमें वडी भारी कर्मों की
निर्जरा होय उत्कृष्ट रसायन आवे तो तीर्थंकर पद
की प्राप्ति होय सोभी शुद्ध नही आवे तो ये कि
तनी वडी भारी भूलकी वात हैं यह मेरा कथन
विवेकी सज्जन पुरुषोके विचारणे लायक हैं ॥

कवित—

सोम लोकपाल जैसो रावहीकों पौत्र है
जानुसो प्रकाश जोनिमाण्डलमें जागो है
गरव गुमानकी तो जानहून जेयाकों
मनको उदार धर्म काममें मगायो है
लक्ष्मी निवासजाके मन्दिरमें कीधो आय
जीनमें पीयूषरस बोलनां सुहायो है
मेरे शुद्ध देवगुरु धर्मगु सना तनसो
रवि अनिधान आदिवरनमें बनायो है ॥
इति सुधारस संग्रह प्रथम भाग संपूर्णम

इति श्री सुधारस संग्रहः

प्रथम भाग संपूर्ण.

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ श्रीरागविलासप्रारंभः ॥

॥ ॐनमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

तत्रादौ मंगलाचरणम् ॥

॥ शिखरिणीछन्दः ॥

णमो अर्हन्ताणं[1] करमरिपुजेता[2] जगतमे ॥
णमो सिद्धाणं ते रुधिसिधि विधानं दुखहरम् ॥
णमो आचार्याणं सकलसुखदं मुक्तिसुवरं ॥
छतीसौ है जामे शुभगुणसदाचारयुत जो ॥ १ ॥
उवज्झायाणं च प्रकृतिजपचीसोगुणनिधं ॥
णमो लोए सव्वोज्ज्वलचरणसाहूणमनघम् ॥
सहस्रछू कोटी जगतमधि साधू जघन है ॥
तथोत्कृष्टासाधू नवसहसकोमान प्रणमू ॥ २ ॥

---

१ अरिहंताणं अर्हंताणं अरुहंताणं, मध्यमपदं देहलीदीपकन्यायेन, २ जि जयें, इत्यस्य लुटि रूपम्, वेदनी आयु नाम गोत्र इन च्यार कर्मोंकू जीतेगा, ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय मोहनीय अंतराय इन च्यार कर्मोंकूं जीतलिये, तृन् प्रत्ययेऽपि रूपम् ॥

नमः [illegible] ॥
[illegible] ॥
मुने [illegible] ॥
स मे [illegible] ॥ ३ ॥
नमो ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभ अजितं संभवजिनं ॥
अभीनन्दन स्वामी [illegible] ॥
सुपार्श्वं श्रीचन्द्रप्रभमुनिविधि वा शीतलप्रभुं ॥
श्रेयांसं वासुपूज्यं विमलमनन्तं धर्मं प्रभुम् ॥ ४ ॥
नमः शान्तिं कुन्थुं अरमल्लिमुनिं सुव्रतविभुं ॥
नमिं नेमिं पार्श्वं चरणयुगलं नौमि सततम् ॥
महावीरं वन्दे परमपददानैकसुविधं ॥
जिनेन्द्राद्यांगात्रं ददतु कुशलं मे गणधराः ॥ ५ ॥
रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ॥ (इति वृत्तरत्नाकरे) ॥

॥ यद्यपि पद्यनिर्माणे छन्दोविचितिर्व्याकरणं कोशो नैपुण्यादिकं च सर्वमेवापेक्षतेऽन एवोक्तं मम्मटेन-शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्राद्यवेक्षणात् ॥ काव्यज्ञशिक्षया चेति॥इमानि चत्वारि कारणानि परिगणतानि तथापि स्वसंवेद्ये परमानन्दात्मके सर्वे

ऽे दत्तनमस्का महानुभावा इमान्क्लेशकदम्बानविग णय्यैव भक्तिभरान्तःकरणेन मनसा पद्यनिर्माणे प्र वर्तन्ते तो दोषान्वेषणस्यावकाश एव नास्तीति सुधियो विदाङ्कुर्वन्त्वित्यभ्यर्थयते ॥

॥ कवित्त ॥

आदिवन्दू आदिनाथ, दूसरा अजितजिन ॥ ती सरा संभवस्वामी, चोथा अभिनंदना ॥ पांचमां सु मतिनाथ, छठमा पदम प्रभु ॥ सातमा सुपास वसु चन्द्रप्रभे वन्दना ॥ नवमा सुबुद्धिनाथ, दशमा शितलजिन ॥ ग्यारमां श्रेयांस दुःख मेटो, भवफंद ना ॥ बारमां सुवासुपूज, तेरमां विमलनाथ ॥ चउ दमां अनन्त सुखदायक आनन्दनां ॥ १ ॥ तिथिमां धरमनाथ, सोलमां सुशान्तिजिन ॥ कुन्थु अर मल्लि नाथ, जीको ध्यान ध्यावसुं ॥ वीसमां मुनि सुव्रत, एकीसमा नमीनाथ ॥ बावीसमां नेमनाथ, नमू शु ऊ भावसुं ॥ तेवीसमां पासप्रभू, चौवीसमां महावी र ॥ मनवचकायकरि प्रणमू उठावसुं ॥ मंगलाचरन र धुकरन किसनलाल ॥ विद्यमान चौवीसीकूं, वन्दू चितचावसुं ॥ २ ॥

॥ अथ संक्षेपमात्र कविताकी रीति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कविता माता दरपकी, कविता करो न कोइ ॥
कविता करिये नरेइ कोऊ जो अभिमान न होइ
कविताके करता कवी, चारि भांतिके होत ॥ वरम
सादि निदध्यासि पुनि, गुरुमुखि अरु शास्त्रोक्त ॥२॥
एकमात्रिका ह्रस्व है, द्वीमात्रिक गुरु ज्ञात ॥ त्रिमा
त्रिकसो प्लुत है, व्यंजन अर्द्धही मान ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ कविता करनको उछाव हुवे मनमें तो पिंगलपुरा
... गुरुगम्य धारिये ॥ अइउ ये ह्रस्व नन्द वर्ने
चोथो भेद संजोगादि और सबे दीर्घ उचारि
। हजधरघनरवननददाखरआठदमगढठटयणदसप
।दि वारिये ॥ कृष्णलाल कहैं आठों गणांको
. थार सुयमाताराजभान सगले संभारिये॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ मगन वरन गुरु तीनको त्रीलघु नगनप्रमान ॥
...न आदिगुरु आदिलघु यगन वखानि सुजान॥५॥
जगन मध्यगुरु जानिये रगन मध्यलघु होय ॥ सगन
अन्तगुरु अन्तलघु तगन कहै सब कोय ॥ ६ ॥ जग

न नगन अरु मगनही यगन आदि शुभ जोय ॥
रगन तगन अरु सगनही जगन अशुभ कवि सोय
॥ ७ ॥ आठों गनके देवता अरु गुनदोष विचार ॥
छन्दोग्रन्थनिमें कह्यो तिनको सब विस्तार ॥ ८ ॥
मही देवता मगनकी नाक नगनको देखि ॥ जल
जिय जानहु यगनको चन्द भगनको लेखि ॥ ९ ॥
सूरज जानहु जगनको रगन शिखी मन आनि ॥
पवन समझिये सगनको तगनाकाश बखानि ॥ १ ॥

॥ अथ फलम् ॥

॥ छपय ॥

॥ भूमि भूरि सुख देइनी रनित आनंदकारी ॥
आगि अङ्गविनु दहे सूर शोषै सुखभारी ॥ समझो
अफल आकाश प्रभञ्जन देश उदासे ॥ मङ्गल चन्द
अनेक नाक बहु बुद्धि प्रकाशे ॥ इह विधि कवित
सब जानिये करता अरु जांकौ करे॥तजि प्रबन्ध सब
दोष गन सबे शुभाशुभ जानि परैं ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥मगन नगन गन मित्रहै भगन यगन भृत लेख॥
उदासीन जत जानिये पुनि सर शत्रुविशेष ॥ १२ ॥

॥ सवैया ॥

॥ मित्रते जु मित्र होंइ यातें बहु ऋद्धि सिद्धि मित्रते जु दास त्रास जुकों न जानियें ॥ मित्रते उदा सगन होत गोन दुःख वदो मित्रनें जु शत्रु होइ मित्र बन्धु हानियें दासते जो मित्रगन काजसिद्धि कृष्णलाल दासतें जु दास बस जीव मत्र मानियें ॥ दासते उदास होत धननाश आश पास दासनें जो शत्रु मित्र शत्रुसो बखानियें ॥ १३ ॥ जानियें उदास ते जो मित्रगन स्वल्पफल प्रगट उदासतें जो दास प्रभुनाइये ॥ होय जो उदासतें उदास तो न फलाफल जो उदासहीतें शत्रु तो न सुख पाइये ॥ शत्रतें जो मित्रगन ताहि तो अफल गति शत्रुतें जो दास आशु वनिता नसाइये ॥ शत्रुतें उदास कुलनाश होइ कृष्ण लाल शत्रुतें जो शत्रुनाश नायककूं गाइये ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आखर दग्ध्है आदिमे शुभ गनदोष नशाय ॥ गन अनशुभतो शुगनसूं बहुरि दोष मिटजाय ॥१५॥ मेरुपताका मरकटी पोमशकर्महि और ॥ अन्य ग्रन्थसे रीतिसो जानो कवि शिरमोर ॥ १६ ॥ इति कविताविधिः ॥

॥अथ गुरुदेव श्रीनन्दरामजीमहाराजका गुणवर्णनम्॥

॥ दोहा ॥

॥ ओंकार प्रणमूं सदा परमेष्टी पदवांण ॥ अर्ह त्सिद्धाचारये उवज्झाय मुणिजांण ॥ १ ॥ श्रीजिन वाणी भारती वन्दू मन वच काय ॥ जोरु कला दीज्यो घणी मेहर करी मुजमाय ॥ २ ॥ परउपगारी परमगुरु भरम मिटावण सूर॥परम नरम होय गुण करूं करमकरण चकचूर ॥३॥ बृहस्पती नहि कथसके गुरु गुणसिन्धु अपार ॥ तोपिण किंचित् वरणवुं निज-बुद्धी अनुसार ॥ ४ ॥ बालब्रह्मचारी महानन्दराम ऋषिराज ॥ मानवभव सफलो कियो दियो घणाने साज ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

॥ धरम अराधियेजी अरणकश्रावकजेम ए देशी ॥

॥ जंबूद्वीपनां भरतमेंजी देश ढुंढार उदारडुंणी ढिंग आवां ग्राममेंजी सुखियावसे नरनार चरमोदधि जिम गुणे भरियामुनिनन्दराम॥ १ ॥ वगेरवाल तारा चन्दजी धर्णजीवूं सुखदाय ॥ तासो दरे गति सुभग सूजी उपनागरभमे आय ॥ च०॥२॥ संवत् अठाराने

१ 'स्त्री'

एसियेजी श्रावण शुद्ध तज सार ॥ जन्म हुवो निशि पाछलीजी हरख्यो सहु परिवार ॥ च० ॥ ३ ॥ सुन्दर नारी सोहागणीजी गाया अभिनव गीत ॥ जनम महोछव पुत्रनोजी कीधो जिम जगरीत ॥ च० ॥४॥ गणक कथन मनमोदसुंजी नाम दियो नन्दराम ॥ बीज निशाकर जिम वधेजी दिनदिन वधकरि नाम ॥ च० ॥ ५ ॥ लघु वये बाललीला करीजी ते किम वरणविजाय ॥ पुन्यवन्तना पग फेरसुंजी कमला वधी घरमाहि ॥ च० ॥ ६ ॥ भेज्या भणवा पोसालमेंजी बे बन्धव तिणवार ॥ भ्राता कनिष्ठ नोवानजीजी पढिया गृहस्थ आचार ॥च०॥७॥ श्रावकधरम समाचरेजी ताराचन्दजी सदीव॥मुनिपद उत्तम एकदाजी वसियो हृदय अतीव ॥च०॥८॥ लघुकरमी मन जाणियोजी शिरपर घूमे छे काल ॥ किणराधन सुत कामणीजी छोडूं सर्व जंजाल ॥ च० ॥९॥ लागो भय अतिमरण कोजी धिग संसार असार ॥ नरभव सफल करूं हिवेजी लेकर संजमभार ॥ च० ॥ १० ॥

॥ सवैया ॥

भयभोगमें रोग वसें कुलहीनता ज्युं धनमे नृपको

---

१ 'अच्छे' २ 'छोटो'

भय है॥पुनिमानमे दीनपनो बलमे रिपुरूपहुंकी रम
नी भय है ॥ सदग्रन्थमें वादिगुनी खलको भय का
या कृतान्तहुंते लयहै सब वस्तुसही भयसंजुत
ओ सुविराग सदा जग निर्भय है॥१॥ वीति गये अ
गले सुभले दिन आन लगे दिनअन्तके एही । सेत
शिरोरुह रंग जरा घर कंपत नाम न भावत केही॥
अस्थिको अंक अरोपित ऊपर दूरहितें लखिके जिम
जेही ॥ कूपचंडालनिको तिम जान तजे तरनी तव
ही जनतेही ॥ २ ॥ गात सबै सकुच्यो विगतागति
दन्त परे मुखकें दरवाना लार परै नहि सूझत
नैन नवै न सुने कहिको कटुकाना ॥ बन्धु न मान
तहै जेहि वात प्रिया नहि पूजत जान दिवानां ॥
हातन जीरन है जनको तव पुत्रहुं होत अमित्र
समाना ॥ ३ ॥ लकरी पकरी सुकरी करमे पग पन्थ
परे भभरे झगरी॥ न धरी भर वेंठ भज्यो सुहरी कथ
कूर करी जगरी सगरी ॥ नगरी तनरी सुपुरी निप
री भगरी अब लूटतहें ठगरी । अवरा विरधापन
वात बुरी सुअरी सम होत सबै सुतरी ॥ ४ ॥

---

१ 'काल'

॥ ढाल तेहीज ॥

॥ इम चिन्तव नागानन्दजीजी कहि सुतां नाणि प्रेम ॥ अब तू मुनि पद आदरे जी तुम कह्यो करस्यो केम ॥ च० ॥ ११ ॥ पभणे अंगज विनयसूंजी तात सुणो सुज वात ॥ जो तुमे संजम आदरोजी तोपिण करस्यां साथ॥च०॥१२॥ रसियो मन वैरागमेंजी सुत जाण्या अनुकूल ॥ सूंप्यो निज घर सारनेजी जाणी अनरथमूल ॥ च० ॥१३ ॥ खरच्य निमित पुण्यठायमेंजी रुपिया तीनालाख ॥ बाकी तृण तनु मेलज्युंजी छोडी सगली आथ ॥ च० ॥१४॥ प्रथम ढाल इम वरणवीजी श्रोता सुणो एकचित्त ॥ किसरह्या परम संवेगमेंजी दिक्षा हुवे किणरीत॥च०॥१५॥

॥ दोहा ॥ माता सुत राखण तणी कीधा घणा उपाय॥ पिण मानी नहि एकही धवं सुत तेहनी वाय ॥१॥ विलापात कीधा घणा पतिसुत जानि वियोग ॥ पुत्रविना किम पामियें उत्तम चारित जोग ॥२॥ पिता कहे धन पुत्र थे पुत्र कहे धन तात ॥ लोक सुणी विस्मित हुवा वसी असंभव वात ॥ ३ ॥ घरसे निकल्या तिहु जणा मन वैराग वाल ॥ जणजण मुख

१ 'पति'

सें इम कहे धन्य पिता वेहुं वाल ॥४॥ सुध आचारी जो मिले मनमांन्या गुरुदेव ॥ दिक्षा ले करणीसही तस पदपङ्कज सेव ॥ ५ ॥ इम चिन्तव फिरिया घणा मरु धर देशे जाय ॥ संप्रदाय देखी घणी पिण न हि आवीदाय ॥ ६ ॥ संप्रदाय रतने सरी दीपे जेम दिणन्द ॥ श्रवणसुनी यह वारता पाम्या परमानंद ॥ ७ ॥ अनुक्रमे चलता आविया पाली पीठमजार ॥ भाग्य योग भल भेटिया धीरज मल अणगार॥८॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥देख रे नेणासे गोयम एछे अम्बा मोरीरे॥एदेशी॥

॥ वंदणा करके वखाण सुणवा वैठ्या हरष अपारी रे ॥नरनारीका ठाट जुड्या मानू खिलरही केसर क्यारी रे॥धीरजमल गुरु धार लिया नन्दराम मुनी सुखकारी रे॥महिमएरुलमें धरम दिपायो जाणे बहु नर नारी रे ॥ १ ॥ धी० टेर ॥ भविक चकोर मोद धरि निरखे मुद्रा मोहन गारी रे ॥ दुरगतिहरणी भवजलतरणी धरमकथा विस्तारी रे ॥ धी० ॥ २ ॥ देशव्रती अरु सरवव्रती ए धरमसु दोय प्रकारी रे ॥ सुरपद पावै शिवपुर जावे काटण करम कुठारीरे ॥ धी० ॥ ३ ॥ रमन कियो परगुनमें चेतन निजगुन

रूप विसारी रे ॥ लख चोरासी च्यार गतीमे भमि यो जेम निस्यारी रे ॥ भी० ॥४॥ आक्षेपणि विक्षेप संवेगणि निर वेगणि ए च्यारी रे ॥ जिन निस कर संवेग रचावे मिथ्या तिमिर निवारी रे ॥ भी० ॥५॥

॥ कवित्त ॥

॥ रविके उदय अस्त होत नित आयु जात जिनकों न जाने ठाने पापको पसारो है ॥ कारज विचारे भूरि भार शिर धारे कूरि नेनना निहारे शत्रु कालसो करारो है ॥ जनम जराकुं देखे विपति मर न पेखे भयको न लेस उर होत न उजारो है ॥ गयो सब ज्ञान यूं प्रमादके प्रताप भयो मोहमद पानतें जिहान मतवारो है ॥ १ ॥ गहे बहुकालतें जो विषयविलासते तो तजिके चलेंगे तोहि वार नहि लावेगा·इनके वियोगमे न लेसहू अन्देस यातें पहिले तजे तू क्यों न जोलो नही जावेगा ॥ आपहीतें तोकों तजि विषय चलेंगे जब करिके पुकार विनपार पिछतावेगा ॥ आदिहूंतें तजिके भजे ज्यो भगवन्तनाम अन्तहूके तन्तमें अनन्तसुख पावेगा ॥२॥

॥ ढाल तेहिज ॥

॥ इत्यादिक उपदेश सुणीने गई पुरुषदा सारीरे॥

गुरु पूछी कही वात पुरवली मनसा येह हमारी रे ॥ धी० ॥ ६ ॥ भवभयभीता तीनु जणाह्मे लेस्यां शरण तुह्मारी रे ॥ सद्गुरु वोल्या देवानूपिया ए तुम भली विचारी रे ॥ धी० ॥ ७ ॥ साधुपणांकी रीती सगली सीख्या आलस टारी रे ॥ मिलकर श्रावक वर्ग[1] दिक्षारो महोछव कीधो भारी रे ॥ धी० ॥ ८ ॥ अष्टादश चोराणूं वरसे पाली पीठमजारी रे॥ कातीसुद तेरसने लीधा पञ्चमहाव्रतधारी रे ॥ धी० ॥ ए ॥ चोमासो उतस्था पालीसें कर विहार उपगारी रे ॥ वसु गणापालासणी आया करता उग्रविहारी रे ॥ धी० ॥ १० ॥ जोधनगरसे पूजरतनपिण वरसा काल उतारी रे ॥ पालासणी पधास्या सवही हरष हुवा अणपारी रे ॥ धी० ॥ ११ ॥ भव्य प्रतिबोधन श्रीमुखसे अद्भुतकथा उचारी रे ॥ चतुरसंघमें घन जिम गाजे अमृतगिरा[2] उदारी रे ॥ धी० ॥ १२ ॥

॥ सवईया ३१ ॥

॥ शोभत पुरुष नांहि भूरि भुजबन्धहूतें चन्दकी प्रभासे शुभ्रमोता हल हारतें ॥ शोभत सनान तें न चन्दनके लेपतें न केशके सवारतें न फूलनकी मारतें ॥

---

१ 'समूह' २ 'वाणी'

विडुपवखानी नीति धर्मकी निशानी जानी शोनत सुझानी सुरवानीके सिंगारतें॥वानीको विभूषनसो सत्य पहिचानियतु कहाहै असत्य ठर भूषनके भारतें॥१॥ आशाकी नदीमें पानी पूरन मनोरथ सो तृष्णाकी तरङ्ग तातें आकुल अनन्त है ॥ कामादिक मत्र क छप छीहैं कुतर्ककोटि धीरजसें तरु ताको तोरत बह न्तहै ॥ मोहसे भंवर भूरि डुस्तर गहनतातें देखिये करारे तहां चिन्ताके डुरन्तहै ॥ पार पहुंचेहैं इनसरि ता अपारहूते योगीजन वृन्दते आनन्दकोलहंतहै २

॥ ढाल तेहीज ॥

॥ कहुं कठालग ठटा वखाणकी बोधबीजदा तारीरे। कुन्थ्यावरणी डुकानमे मानव जो मांगे सो त्यारी रे ॥ धी० ॥१३॥ तीन चोमासा पूजरतनके पास किया सुविचारी रे। च्यार चोमासा किया हरपसूं पूजहमीरके लारी रे ॥धी०॥१४॥ सात चोमासा पूजक जोमी साथ किया तिणवारी रे। पांच कियाक नी राममुनी संग खप कीधी जणवारीरे ॥धी०॥१५॥ सोसो गाथा नित्य करी मुखविगथा डूर निवारी रे। किया थोकमा मुखे डोडसें बुद्धि तणी बलिहारीरे

१ 'समूह'

॥ धी० ॥१६॥ ज्ञक्तिविनयकरि आगम सीख्या गुरु आज्ञा शिरधारी रे। अङ्ग उपङ्ग मूलछेदादिक कंठ किया सिरिकारी रे धी०॥१७॥ सूत्र केवली घणां जीवांरे समकित घटमे डारी रे। बीजी ढाल मनो हरज्ञीषी सुणतां लागे प्यारी रे॥ धी० ॥ १८॥

॥ दोहा ॥

लाखों ग्रन्थ लिख्यो जिणें संचररहित उदार॥ अक्षर मुक्ताफल जिसा शङ्का नही यलिगार॥१॥ विविधापनन्ती आदिदे सूत्र लिख्या अजिराम॥ पेखतमन प्रफुलित हुवे यत्रादिक सब ठाम॥२॥ सारस्वत पुनि चन्द्रिका अमरकोश उर धार॥ अरथ युक्त लिखि सीखिया प्राकृत व्याकरणसार॥३॥ तव न चोढाल्या चोपियां फुटकर पत्र अनेक॥ नव तत्वादिक थोकडां लिखिया धरिय विवेक॥४॥ टब्बो टीका दीपिका अवचूरी सुविशाल॥ वांचत शुद्ध उचारणी वचन दीज रसाल॥५॥ जगवई सूत्र प्रमाद तज वांची चवदेवार॥ जिंनजिंन कर समजावणी जाणे वहु नरनार॥६॥ पण्डिताई जलकी नही कोठेइ सो गम्जीर॥ प्रक्रतीना जद्रिक इसा विरला साधु सधीर॥७॥

॥ कवित्त ॥

॥ नमेंहे नमन्त परगुनकों कहन रन्त आनने अनन्तगुन जाहर जनावे हे ॥ सारग अरावे पर कारज विशेष सावे प्रेमरस पावे तिन तापन नसावे हे ॥ मूढमति मकरतें कहुं कहु अकरपे छिमा गहि छूपनसो तिनमे दिखावे हे ॥ नरे जस पूरनारे से वत सदैव सारे एते गुनवारे साधू किनने कहावे हे

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ रसीयानी देशी ॥

॥ छितितले विचरेहो आतमनावता अतिशय वन्त अतीव सुज्ञानी ॥ अमल अखाम प्रताप दिण न्द ज्युं प्रतिवोधे नवि जीव सुज्ञानी ॥ १ ॥ परउप गारी हो मुनि नन्दरामजी घनतरु सरवर जेम सु ज्ञानी ॥ शशिजिम शीतल वदन सुहामणो पेखत ऊपजे प्रेम सुज्ञानी ॥ पर० ॥ २ ॥ पाखण्डमतने हो [illegible] प्रसनपमुत्तरदेय ॥सु०॥ निजउतपात [illegible] ; डुरजय वादी जेय ॥सु०॥पर० ॥३॥ [illegible] सांक धह्न कियो अथवा हरी घनगा [illegible] त वखाण चतुर्विध संघमे पकती

घोर अवाज ॥ सु० ॥ पर० ॥ ४ ॥ एकप्रकार असं
जेम परहस्यो दोयविध बन्धन टाम सु० ॥ गारव स
ल्लन[3] दण्ड[3] विराधना[3] विगथासें[4] नहि काम ॥सु०॥पर०
॥५॥ चतुरगति दुःख मेटण उर वसे शरणा च्यार
प्रधान ॥ सु० ॥ वेदे[4] कषाय संज्ञा[4] तज ध्यावतां धरम
सुकल दोय ध्यान ॥ सु० ॥ पर० ॥६॥ पञ्चमहाव्रत
निरमल पालता पाले पञ्च आचार ॥ सु० ॥ पञ्चप्र
माद तजे सुमती भजे पञ्चविषयसुख वार ॥सु०॥ पर०
॥ ७ ॥ षट् दरसन षटदरव प्रकाशता छकायने हण
वारो नेम ॥ सु० ॥ सात नयां लख वसु मद परहरे
प्रवचन मातसुं प्रेम ॥ सु० ॥ पर० ॥ ८ ॥ वाडस
हित वसे ब्रह्मचरजमे धरमयती दशधार ॥ सु० ॥
अंग[11] उपंग[12] अरथयुत सुध भण्यां किरिया[13] स्थानक
टार ॥ सु०॥ पर०॥ ९ ॥ चवदे पूरवनोहो सार हृदय
धस्यो पनरे जोग पिछाण ॥ सु० ॥ षोडशभेद कषा
य विवरजता सोले विभक्त्यारा जाण॥सु०॥पर०॥१०॥
संजम[17] पाले हो कलुष[18] निवारने ज्ञाताध्ययन[19] भणन्त
॥ सु० ॥ असमाधिना हो स्थानक वीसते टाले मन
धर खन्त ॥ सु०॥ पर० ॥ ११ ॥ एकविस सवला हो

---

१ 'इन्नत' २ 'मध्यविपयकषायनिंदाविकथा' ३ 'खंत्यादि. ४ पाप.

इपण पग्वरे परिसह उवना अनङ्ग ॥ सु० ॥ पांच इन्द्रानी द्रो विषय तेवीसने नरके नास प्रसंग ॥ सु० ॥ पर० ॥ १२ ॥ तीरथनाथ तणे नवनावसुं नावनां वरज पचीस ॥ सु० ॥ छवीस अध्ययन तणों तिहू सूत्रना राजत गुण सगवीस ॥सु०॥पर०॥१३॥ वसतर पातर अहार उपासरो निरवद्य नोगवे ज्यार ॥सु०॥ निशदिन लीन रहे श्रुतज्ञानमें जाणे देग्ताण हार. ॥ सु० ॥ पर० ॥ १४ ॥ मेरु भग वायु अहि तरी हरी करि रवि शशि सिन्धु मेह ॥ सु० ॥ खग नारण नत्र फटिक रतन तणी पावनि उपमा एह ॥ सु० ॥ पर० ॥ १५ ॥ इत्यादिक गुणकर मुनि दी पता विहरे शुचि मता नाग ॥ सु० ॥ जिनमारगरो उद्योत हुवो घणो कियो उपगार अथाग ॥ सु० ॥ पर० ॥ १६ ॥ गुण ग्राहक गुणिजन मन मोहनी प नणी ए तीजी ढाल ॥ सु० ॥ सतगुरुजीरा गुणग्राम क्रिया थकां प्रगटेमंगल माल ॥सु०॥ पर० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिवे सहु चउमासा तणी विगत सुणो चित लाय ॥ नवजल कूवत तारिया जीवघणां समजाय

१ 'सुमेरु पृथ्वी सर्प जिहाज सिंह हस्ती सूर्य चन्द्र समुद्र गेंडो पक्षी आकाश.

॥ १ ॥ दिल्ली हरिगढ राणिपुरे बीकानेर सुवास ॥ हरसाले पण क्षेत्रमें एक एक चउमास ॥ २ ॥ आंब ग्राम कोटे रियां दो दो वरसा काल ॥ पण जयपुर अजमेर वसु पण पाली सुविशाल ॥ ३ ॥ वडलू च्यार पिपाड त्री ॥ तिथिं नागोर सुठाम ॥ शेर जोधाणां सहिरमे चतुर मास अभिराम ॥ ४ ॥ ए छपन चउ मासमे आनंद वरस्या मेह ॥ आप रह्या जिण क्षेत्रमे सुजस लियो गुणगेह ॥ ५ ॥ नितनव कलपें विचरिया ग्राम नगर पुर सहेर ॥ तन शक्ती कम देखने ठाणे रह्या अजमेर ॥ ६ ॥ भक्तिभाव बहु भांतिसुं करे सकल नरनार ॥ पण्डित मरणो किम हुवे ते दाखूं अधिकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ४ ॥

॥ महलांमें बेठी हो राणी कमलावती ॥ ए देशी ॥

॥ संवत उगणीसे हो वरस पचासमे मधु[१] सुध पञ्चमी उपवास ॥ कीधो पारणदिन आहार चल्यो नहीं आयु स्थित जाणी आवी पास ॥ १ ॥ ज्ञानी गुरु थारा दरशण बिनतरसे हो मनडो मांहरो आं कडी ॥ सातमने आंबिल करणा मांडिया ठायो नव पदजीको ध्यान ॥ चउसरण पइनो हो सरणा च्या

१ चैत्र.

रनो आठमने वांच्यो सरस गमाण ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ नवमीने औषध मन विन में दियो नहि लीनो वो व्या सुखसें एम ॥ अवतो संथारो हो करणो योगते खाली भेजे तूं मुजने केम ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ दशमीके दिन पिण आहार कियो नही एकादशीने श्रावक आय विनव्यो कर जोडी स्वामी आपरे आगमण करवारो अवसर नाय ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ तारो त्रवि जीव घणांने आपतो सारोछो निजपर आतमकाज ॥ तुमचो आलम्बन च्यारू तीरथने देवो श्रुतज्ञानादी साज ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ दर्शन प्रियकारी नयणे निरखतां प्रगटे धरमानु राग ॥ उत्तम पुरुषारो हुवो विराजणो धनछे इणक्षेत्रका नाग ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ मुनि कहे सुणो श्रावक टालिकुंणसके केवली देख्या जे नाव संजम मन्दिरके हो कलश चढावणो छे मुफ मनमे अधिक उछाव ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ यतः बाल मरणाणि बहुसो अकाम मरणाणि चेव बहुयाणि ॥ मरिहन्ति ते जीवा जिणवयणं जे नयाणन्ति ॥ वारसने विधिसुंकरि आलोवणा अरिहन्त सिद्धारी साख सवहीजीवांसें खमत खमावणा खमज्यो सहु योन चोरासी लाख ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ संथार पइनो

हो वांचो अरथनो पिण्ड विशुद्ध्या तुरपचखाण दोहा रणजीत रुशान्ति प्रकाशनां लागो इम अणसण को ध्यान ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तेरसने प्रातसमें मुनि वो लिया में तो करलीनो संथार जीवुं जहां लग मुजने त्यागछै असणा दिक चउविध आहार ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ अण सण कीधो मुनिनन्दे आजतो थई सारा सहेरमे वात धन धन सहुको मुखसे उच्चरे दरसण करवाने मंडीजात ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥ जोधा णा अहिपुर पाली सहेरका श्रावक गण ततकाल ह रि गढ वडलू नगर नवा तणां संथारो सुणकर आया चाल ॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ चउदसने तनमे व्यापी वे दना चोथा पहोर मजार सास वधियो पिण सुणियो पाक्षिको पडिकमणो साहसधार ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥ चैत्री पूनमने हो श्रीजिनराजनो धरतां सुध मन ध्यांन ग्यारापर पैंतीस मिनट गयां पछे छूट्या तत खिण प्राण ॥ ज्ञा० ॥ १४ ॥ आयो संथारो बावीस पहरनो पूरी निज मनकारी आस मेली उदारिक देही छोडने कीधो स्वर्ग निवास ॥ ज्ञा० ॥ १५ ॥ प्राते संथारो सीझो सांभली मिलिया मानव थोक वैकुंठी महोछव वदृ आडंबरे कीधो श्रावक लोक ॥ज्ञा०

॥ १६ ॥ कीधी उजाली गढ़रा अरधंनी नीको धरम सुं राग मनमे उदासी आंसू लोचने दीधो कुल नन्द न मे दाग ॥ ज्ञा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सकल अथिर संसारमे जन मिन को मरि जात ॥ जनम जिनहुंको जानिये वंश करन विख्यात ॥ १ ॥ कञ्ज फुलावत भानुकर चन्द कमोदनि वृन्द ॥ बिनजाचे घनदेत जल ऐसेहि साधु अनन्द ॥२॥

॥ ढाल तेहिज ॥

॥ धरम दिवाकर हुं तो भरत मे आथमियो आज्ञो अणगार ॥ पण्डिता चारीह्रो मुनिवर नन्दसा थिर ला होसी हणवार ॥ ज्ञा० ॥ १८ ॥ उगणीसे चोपन आश्विन मासमे वदिपक्षे द्वुतिया सोम विशाल ॥ सुजग पुरुपाने प्रेम प्रकाशनी जयपुर मे जोडी च्यारू ढाल ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वन्दो श्रीगुरुदेवके चरणाम्बुजकी कोर ॥ जो लोक परलोकके हितू सहायक मोर ॥ १ ॥ गुरु १ चिन्तामणी वा सुरतरु सुरधेन ॥ विनमांगे फल च्यारि शुभ तुरत देत सकुचेन ॥ २ ॥ गुरु सम

१ 'धन, २ 'धर्म अर्थ काम मोक्ष,

हूजी उपमा नहि देखी जगमांय ॥ किसनलाल खोजी घणी पिण कोइ पांमीनांहि ॥ ३ ॥ धन्य धन्य गुरु देवजी धन्यवाद गुरु तोय ॥ पशुता टाली नरपणो सद्गुरुदीनो मोय ॥ ४ ॥ अनुत्तरवासी सुर सवे जवलेखक पटु होय ॥ महिमा श्रीगुरु देवकी लिखे निरन्तर सोय ॥ ५ ॥ सवधरती कागज करे लेखनि सहुं वनराय ॥ सर्वसिन्धुकी मषि करे गुरु गुण लिख्या न जाय ॥ ६ ॥ तूठो तूठो तूठोरे मुझ जगनो तारक तूठो एदे० सफल मनोरथ आजरे मुज फलियो ये ॥ टेक ॥ श्रीगुरु देवं तणां गुण करतां पयमे साकर जलियो रे मुज फलियो ॥ १ ॥ उत्तम मुनिका गुण गावन्तां पातक जावे टलियो रे ॥ मुज० ॥ २ ॥ मुज ऊपर उपगार कियो अतिकाढ्यो जवजल कलियोरे ॥ मुज० ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

अवनी अनेक मतिमन्दनके वृन्दनकी मन्दता निवारीके अमन्दता उधारे है वेननमे सांच सुधा सींचत सनेह सेती मानता महान पाप पुञ्ज तें निवारेहै ॥ वाढत विशेष चारु चित्तकी प्रसन्नताई कीर्ति सुहांइ दिश विदिश वधारे है महिमा अपारसो वखा

ने कह्ा वार वार साधू संत संग नांहीं। कोनको सु धारे है ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

सुगुरु कृपा करि मोय बतायो शिवपुर मारग स लियोरे ॥ मुज० ॥ ४ ॥ लोह समान हुं तेमें गुनि गुण रस कूंपी रस ढलियो रे ॥ मुज० ॥ ५ ॥ गुरु ज गती कर ज्ञान जंग्यो जे ते नवि जावे खलियोरे ॥ मुज० ॥ ६ ॥ किसनलाल कहे गुरुपद पङ्कजे मुज मन मधुकर हलियोरे ॥ मुज० ॥ ७ ॥ कलश ॥ इम अलप गुण नंदराम मुनिका गाविया मन मोदसें अ नघ वारी अखिल जरियो हृदय आनंद होदसे ॥ मुज बुद्धि थोरी तदपि जोरी चतुर ढाल विनोदसे चूक सगली माफ कीज्यो सुकवि पण्डित बोधसे ॥१॥ पण मास वे दिन वरस छप्पन साधु पद वर पालियो वसु मास नव दिन वरस सित्तर सकल आयु जालियो॥यथा ुणियो चरित गुरुमुख तथा मे वरणन कियो ऊंगो अधिको कह्यो जिनको मिथ्या दुष्कृत में दियो ॥२॥ कुंभे वांध्यो जल रहे जिम कुंभ जलविन थावनां ज्ञाने वांध्यो मन रहे सोही ज्ञान गुरुविन पावनां ॥

---

१ 'भ्रमर'

इम जाणके नित मेव सिरी गुरु देवका गुण गावना किसनलाल सु शिष्य जम्पै सदा हरष वधावनां ॥ ३ ॥ अथ पञ्च परमेष्ठि गुणमाला ॥

॥ दोहा ॥

मन्त्र महा नवकारके सुगुण एकसो आठ ॥ ताको कुछ विवरो कहुं सुगम अरथ मुख पाठ ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

तरू अशोक तले अरिहन्त पूठे जामएडल झलकन्त ॥ रतन जडित सिंहासण होय चामर श्वेत मनोहर जोय ॥१॥ छत्र तीन आकाशे चले देव दुन्दुभि वाजे भले ॥ अचित कुसुम वरषा विस्तरे दिव्य धुने वांणी उच्चरे ॥ २ ॥ केवल दरसन केवल ज्ञान सुख अनन्त समकित शुभ ध्यान ॥ वल वीरज द्वादश गुण वृन्दा तीने गढवारे परखन्दा ॥ ३ ॥ अतिशय धर जिणवर चोतीस वचन वांण कहिये पण तीस ॥ दोष दूर दशं आठ अनांण सहस आठ लछण गुण जाण ॥ ४ ॥ चौमुख ब्रह्मा संशय हरे चौसठ इन्द्र महो छव करे ॥ समोसरण काया परिमाण मधुरी वाणी करे वखाण ॥ ५ ॥ वाणी अरथ हिये अवधार गणधर ग्रन्थ रचै विस्तार ॥ चवदे पूरव अङ्ग इग्या

र सब विद्या तिणमांहि विचार ॥ ६ ॥ उपजे ग्यंप सदा थिर रहे त्रिपदी पाठ अरथ सुभलहे ॥ चउनाणी गणधर महातमा निग्रंथ केवली परमातमा ॥ ७ ॥ ध रम धजा आगल संचरे भूमण्डल विचरे उपगरे ॥ सुर नर मुनि जन जस गावन्त किसन कहे महिमां मनखन्त ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

राग द्वेष जीते सबल वीतराग भगवन्त ॥ आठ करम अरि दूर कर अमर भये अरिहन्त ॥१॥ केवल दरसन ज्ञान हे सुख समकित बलसार ॥ ए च्यारे गुण केवली अतिशय ठेर अपार ॥ २ ॥

॥ चौपई ॥

॥ सिधपदकी महिमा अबकहूं शिव स्वरूप सांचों सरदहुं ॥ परमेश्वर परमातम जांण परम पुरुष नहि जाति पिछाण ॥ ए ॥ सुख अंनन्त खायकपरिणाम केवल ज्ञान विमल सुध सांम ॥ केवल दरसन देखे सहु सगती सार बल वीरज बहु॥१०॥ सूक्षम गुण सुखहै सासता तीनभेदे अवगाहन छता ॥

१ तिभागहीणशेपाउ सिद्धाणो गाहणा भणिया इति न्यायात्'

अगुरु लघू अवादा जेह अष्ट करमखय अठ गुण ए
ह ॥ ११ ॥ तेज पुञ्ज दीपें द्युतिवन्त ज्योतिरूप व्यापक
भगवन्त ॥ निराकार अविकार धरन्त केवल राम
कहे सहुसन्त ॥ १२ ॥ अगम अगोचर अखय अ
भंग अजर अमर अरु अचल अखण्ड ॥ अमल वि
मल अविनाशी नांम अलख अरूपी अविचल धांम
॥ १३ ॥ मोक्ष मुगति अरु शिखर सुथान शिवम
न्दिर वैकुण्ठ वखान ॥ पञ्चमगति अविगत अभि
राम अजय अनुपम थिर विसरांम ॥ १४ ॥ सेवक
साहिब एक स्वरूप माहों माहि मिले सहु भूप ॥
ज्यूं सागरमें वूंद समाय त्यूं शिव खेत कह्यो जिन राय
॥ १५ ॥ चाकर ठाकुर नांहि शरीर जरा मरण जा
मण नहि पीर ॥ रोग सोग जिहा नाही विजोग संपति
विपति भरम नहि भोग ॥ १६ ॥ आवा गमण नि
वार्‍यो सही फिर चिहु गतिमे अवे नही ॥ सव शिव
रास नमूं गह गई किसन वीनती इण परकही॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ जनम मरन जाके नही अविनाशी पद ठाम ॥
निराकार निरलेप हे सो है केवल राम ॥ १ ॥ गुण

छतीस अड संपदा सो आचारज इन्द ॥ बहु परि वारे शोजता ज्युं ग्रहगणमे चन्द ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ त्रस थावर प्रति पालण हार झूंट वचन बोले न असार ॥ चोरी करम करे अवहील जाव जीव पाले शुधशील ॥ १८ ॥ दरव जाव चारित आदरे तप दोय जेद करम निरजरे ॥ धरम विषे वल वीरज करे ए आचार पांच विध धरे ॥ १९ ॥ वाजागीत सुणे नहि राग रूप रंग निरखेन सराग ॥ गन्ध विषे वरते सम जाउ पट. रस लंपट नही गणराउ ॥ २० ॥ आठ फरस रस विषय निवार ए पांचे इंदरी परि वार ॥ निरदूपण थानक सेवता रमणी रसिक कथा विरमता ॥ २१ ॥ आसन जास त्रिया नहि पास नारि न जोवे नयन हु लास ॥ जींततणे अन्तर नवि रहै पूरव केल कथा नवि कहै ॥ २२ ॥ जोज न वल कर ताकूं तजै सरस आहार अधिक परि वजै ॥ सव सोजा तनमन अव गणी ए नव वारु शील व्रत तणी ॥ २३ ॥ खिम्या करे न करे कहुं कोप न मिण विने अजिमान न उंप ॥ सरल सुजाव कपट नहि जास है सन्तोप लोज नहि तास ॥ २४ ॥ जीव ज

तन जयणा पग भरे साता रूप वचन अनुसरे ॥ अ
सन गहैं निर दोषज होय वस्तु उठावे मूके जोय
॥ २५ ॥ अचित भूमि परठै मल पञ्च तन संवर संय
म कर संच ॥ वचन स पाप कहै न मुनीश मन स
माधि ए गुण षट तीस ॥ २६ ॥ वहु सुरति वुंधवन्त
कहाय परगट वचन सु सुन्दर काय ॥ दया धरम
उज्जल आचार वरजै वाद मिथ्यात व्योहार ॥ २७ ॥
यह गणवर आठै संपदा संघ चतुर्विध सेवे सदा ॥
मैढी भूत महा निगरन्थ सांच वतावे शिवपुर पन्थ
॥ २८ ॥ गुण उत्तरोत्तर और उदार मे मति अलप
लहूं नहि पार ॥ मेरा गुरु आचारज एह किसन
कहै प्रणमूं ससनेह ॥ २ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ जात थापना सरव गुण शिलप कला वहु खेद॥
धरमाचारज ए कह्या आचारज षट भेद ॥ १ ॥ वी
तराग वाणी वधे वहे अख छिकृतआण ॥ सरव सुगुण
संग्रह करे सो आचारज जांण ॥ २ ॥ नही उपाधि
जाके उदे सो कहिये उवझाय ॥ ताके गुणपण वीस
है सवदे सवद समाय ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ पांच महाव्रत मेरु समान इन्द्री पांच दमें गुण वान ॥ पाले सुकल सु पक्षा चार पांच सुमति तिहुं गुपति विचार ॥ ३० ॥ भणे भणावे पूरब अङ्ग त्यागे सरब कपाय कुसङ्ग ॥ ए पणवीस पाठक गुण ज्ञान पर उपगारी परम प्रधान ॥ ३१ ॥ जिणवर आंण अ खण्डित वहे पटद्रव्य भाव भेद सरदहे ॥ गुण था नक मारगणां मोख समता संवर भाव सन्तोप ॥ ३२ ॥ आश्रव पांच करम वंधे च्यार च्यारूं गति कहिये संसार ॥ चवदे राज लोक संठाण स्वमति परमति सकल सुजाण ॥ ३३ ॥ भव्य अभव्य सासिया भाव चोथो अविचल भेद लखाव ॥ स्व परगुण दोय जाणें भेद राग द्वेप व्यापे नहि खेद ॥ ३४ ॥ ज्ञान कि यासूं सांची प्रीत दूर करे आगम विपरीत ॥ संयम तप जप खप बहु करे किसन कहे प्रणमू मन खरे॥३५॥

॥ दोहा ॥

॥ जाति उपाधि स्थापनां सर्व गुणे मुनि राज ॥ भणेसु आगम उपदिशे चिंहू भेदे उवझाय ॥ १ ॥ द्वादशाङ्ग वाणी विमल वरते सदा समाधि ॥ सुमति

१ 'प्रमाद अशुभ जोग ए कही,

सुराणी संग रहै कुमती कलि न उपाधि ॥ २ ॥ योगध्यान सरधान थिर थिर आचार विचार ॥ वय तप सुतर मति धरम थिर थिवर पांच प्रकार ॥ ३ ॥ मन थिरता थिरता वचन थिरता काया होय ॥ धरमध्यान थिरता करे थिवर कहावै सोय ॥ ४ ॥ वन्दूं साधु सुमारगी मोटा महिमा वन्त ॥ शुद्धि ज्ञान सरधानसूं चोखा चारितवन्त ॥ ५ ॥ परिग्रह चउदै विध तजो जो जियकूं दुखदाय ॥ अवर कबू वाकी रह्या ताको करे उपाय ॥ ६ ॥ धरम उपग्रण सै सही साधण शिव पुरपन्थ ॥ पिण मनमें ममता नही याते है निगरन्थ ॥ ७ ॥ थिवर कल्पी जिन कल्पि सुंन कल्पातीत महन्त ॥ ए तीनूं विवहारियासुं न विवरो वुधिवन्त ॥ ८ ॥ नगनदोय द्रव भावसूं एकाकी विच रन्त ॥ सो जिन कलपी जांणिये गुण अठवीस धरन्त ॥ ९ ॥ यथाख्यात चारित्र धर खायक समकित वन्त ॥ कलपातीत सजोगसूं केवल ज्ञान अनन्त ॥ १० ॥ थिवर कल्प परमादसूं क्रिया विविध परकार ॥ गुण सगवीसस्रु साधुके सुंणताको अधिकार ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ प्रथम खिमा दूजो वैराग शीतादिक वेदन भय त्याग ॥ मरणा न्तक निहुं उपसरग मद्दे वस करे तीन जोग निरवहे ॥ ३६ ॥ सगति सता गति जाण सुज्ञान दरसन पिण चिहुं भेद पिछान ॥ चारित च्यार इसीपर लहे भाव करन सच जोग सुं कहे ॥ ३७ ॥ च्यार कषाय करे परिहार वर जे इन्द्री विषय विकार ॥ भार महाव्रत धारेसीस ए मुनिवरके गुण सगवीस ॥ ३८ ॥ एगोहं मेरो नहि कोय दीन पणो आणे नही सोय ॥ कर संजोग भम्यो बहु काल आतम राम करीन संभाल ॥ ३९ ॥ आरत रौद्र राग नहि द्वेष ॥ तीनूं सल्य निसल्य विशेष ॥ चिहु भाषा प्रतिबन्ध विवेक पञ्च प्रमाद निवारय नेक ॥४०॥ किरया पञ्चमहा दुःख दाय साधु धरम संजम सुख थाय भेद सतावन संवर सार आश्रव भेद बेयालिस वार ॥४१॥ संख्य असंख्य अनन्ता नन्त साधु तणां गुण कोन कहन्त ॥ ज्यूं रत नाकर रतने भर्यो गिणे कवण मूरख मति हर्यो ॥४२॥ निज गुणसूं भव सायर तर्या निरमल होय मुगति सुख वर्या ॥ किसन

१ 'एगो मे सासउ अप्पा नाण दंसण संजुया ॥ से सामे बाहिरा भावासव्वे सजोग लखणा, ॥

कहे धन मेरे भाग नमन करूं नित चरने लाग ॥४३

॥ दोहा ॥

॥ समता दमता नमनता खिमता सुमता मांहि ॥ रमता वमता विषमता ममता कुमता नांहि ॥ १ ॥ ए मुनिराज सराहिये कमलरीति जगमांहि ॥ आज्ञा श्रीजिनराजकी नेक विराधेनांहि ॥ २ ॥ अब श्रावक करणी कहूं दुख हरणी सुख मूल ॥ लघु भ्राता ज्ञाता गुणी पाले वरत सुथूल ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ जीव विचारनव तत्वके बोल दश पचखाण करे दिन खोल ॥ अतीचार आलोयण लेह चिंहु गति जीव खिमावे जेह ॥ ४४ ॥ मधु मदरा आमि पकाचरा ऊंबर कन्दरू वर पीपपरा ॥ आठे अभक्ष्य कह्या अरिहन्त तपस्या दश दोय भेदकरन्त ॥ ४५ ॥ चउदे नेम विचारे जाण तजे पञ्चदसकरमादांन ॥ निरदूषण वारे व्रतधरे एकादश प्रतिमां विधवरे ॥ ४६ ॥ सत्त सरूप समता रसराग निश भोजन अणगल जलत्याग ॥ दरसन चारित भाव सुज्ञान उपशमच्यार कषाय सुध्यान ॥ ४७ ॥ उत्तम कि रिया श्रावक नामी पञ्चम गुणस्थानकके धणी ॥ ग

॥ चौपाई ॥

॥ प्रथम खिमा दूजो वैराग शीतादिक वेदन जय त्याग ॥ मरणा न्तक तिहूं उपसग सहै वस कर तीन जोग निरवहै ॥ ३६ ॥ संगति सता गति जात सुज्ञान दरसन पिण चिहुं भेद पिछान ॥ चारित च्यार इसीपर लहो भाव करन सच जोग सुं कह्यो ॥ ३७ ॥ च्यार कपाय करे परिहार वर जे इन्द्री वि पय विकार ॥ भार महाव्रत धारेसीस ए मुनिवरके गुण सगवीस ॥ ३८ ॥ एगोहं[1] मेरो नहि कोय दीन पणो आणे नही सोय ॥ कर संजोग भम्यो वहु काल आतम राम करीन संभाल ॥ ३९ ॥ आरत रौद्र राग नहि द्वेष ॥ तीनू सल्य निसल्प विशेष ॥ चिहु भापा प्रतिवन्ध विवेक पञ्च प्रमाद निवारय नेक ॥४०॥ किरया पञ्चमहा दुःख दाय साधु धरम सं जम सुख थाय भेद सतावन संवर सार आश्रव भेद वे यालिस वार ॥४१॥ संख्य असंख्य अनन्ता नन्त साधु तणां गुण कोन कहन्त ॥ ज्यूं रत नाकर रतने भयो गिणे कवण मूरख मति हस्यो ॥४२॥ निज गुणसूं भव सायर तस्या निरमल होय मुगति सुख वस्या ॥ किसन

१ 'एगो मे सासओ अप्पा नाण दंसण संजुया ॥ से सामे वाहिरा भावासव्वे सजोग लखणा, ॥

कहे धन मेरे भाग नमन करूं नित चरने लाग ॥४३

॥ दोहा ॥

॥ समता दमता नमनता खिमता सुमता मांहि ॥ रमता वमता विषमता ममता कुमता नांहि ॥ १ ॥ ए मुनिराज सराहिये कमलरीति जगमांहि ॥ आज्ञा श्रीजिनराजकी नेक विराधेनांहि ॥ २ ॥ अब श्रावक करणी कहूं दुख हरणी सुख मूल ॥ लघु भ्राता ज्ञाता गुणी पाले वरत सुथूल ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ जीव विचारनव तत्वके बोल दश पचखाण करे दिन खोल ॥ अतीचार आलोयण देह चिंहु गति जीव खिमावे जेह ॥ ४४ ॥ मधु मदरा आमिषकाचरा उंवर कन्दरू वर पीपपरा ॥ आठे अभक्ष्य कह्या अरिहन्त तपस्या दश दोय भेदकरन्त ॥ ४५ ॥ चउदे नेम विचारे जाण तजे पञ्चदसकरमादांन ॥ निरदूषण वारे व्रतधरे एकादश प्रतिमां विधवरे ॥ ४६ ॥ सत्त सरूप समता रसराग निश भोजन अणगल जलत्याग ॥ दरसन चारित भाव सुज्ञान उपशमच्यार कषाय सुध्यान ॥ ४७ ॥ उत्तम किरिया श्रावक तणी पञ्चम गुणस्थानकके धणी ॥

णएक वीसधरे गुणधार तेह्तणो सुणिये अधिकार ॥ ४८ ॥ करुणांवन्त लज्जा गुणवन्त मिष्ट वचन बोले वुधिवन्त ॥ विनयविवेक विचार विनाण सोम निजरशीतल सुधवाण ॥ ४९ ॥ पर उपगारी परम दयाल गुणरागी आज्ञा प्रतिपाल ॥ गुणन विसारे सरल सन्तोष पर अवगुण न कहे परदोष ॥ ५० ॥ दीरघ दृष्टि विचारे बात लवधिलखी उपयोग क हात ॥ ए एकवीस अरथ अवधार किसन कह्यो श्रावक आचार ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरथ दण्ड विधि आचरे अनरथ दण्ड तजेह ॥
विरता विरत विवेकता श्रावक कहिये तेह ॥ १ ॥
जोरुचि काल अनादिकी कुमता कुटिलकु चाव ॥
तिणसें अरुचि अभावनां सो समकित समभाव ॥२॥

॥ चौपई ॥

॥ देव निरञ्जनगुरु निगरन्थ दया धरम आगम शिवपन्थ ॥ ए समकित कहिये विवहार निश्चै निजगुण लखै सुसार ॥ ५२ ॥ तत्वतीन तिहुगुणकी रीत जिन वचनांकीहै परतीत ॥ नहि संशय नहि फल संदेह पर पाखण्डीसूं नही नेह ॥ ५३ ॥ दिन

दिन समता सुमति सुनाव दमता इन्द्रीकुमति कु
नाव ॥ जिन धरमीसूं अधिक सनेह सब परिवार
गिणे पर एह ॥५४॥ धरम न होय करे जब पाप तब
जियकूं निन्दे निज आप ॥ बालकवब्डारीति
सुजांण केऊनमूके धरम वखाण ॥ ५५ ॥ जैन धर
मकी महिमा होय एसो काजकरे नरलोय ॥ करु
णाकरे दुःखिजन देख निरदय जीवहणेंन उपेख
॥ ५६ ॥ दया धरम धारे अरु कहे दयाधरमसूं ला
गोरहे ॥ दयाधरमसूं परम सनेह दया धरमविण
निन्दय देह ॥ ५७ ॥ दयाधरममें है परवीण दया
धरममें हैलयलीण ॥ दयाधरम धीरज चितधरे
दयाधरम थिरता मन करे ॥ ५८ ॥ संकट मांहि
अडिग नितमेव नगति सुदेव सुगुरुकी सेव ॥ विषय
वरगसेती वैराग दयाधरमसूं सांचोराग ॥ ५९ ॥
हरष हेतसूं जिनवर नजे चित चोखे चञ्चलता
तजे ॥ सरधाबीस बोलखपकरे अनत गुणगाणें गु
णधरे ॥ ६० ॥ नाव चारितियो चोथो जान यथा
सकति कछु इव पच्चखाण ॥ समकित धर नर
नारी होय किसन कहै यह लछण जोय ॥ ६१ ॥
गुणमाला गुंथी गुण गाय तीन काल गुणिये चि

लायक बीसभरे गुणधार तेऊनामो गुणिने अधिकार ॥ ४८ ॥ कम्मांबिन्न लज्जा गुणवन्त मिष्ट वचन बोले बुधिवन्त ॥ विनयविवेक विचार विनाश सोम निजरशीतल सुभवाल ॥ ४९ ॥ पर उपगारी परम दयाल गुणरागी आठा प्रतिपाल ॥ गुणन विचारे सरल सन्तोष पर अवगुण न कहे परदोष ॥ ५० ॥ दीरघ दृष्टि विचारे बात सबभिलागी उपयोग के हात ॥ ए एकवीस अरथ अनधार किमन कलो श्रावक आचार ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरथ दाफ विधि आचरे अनरथ दाफ तजेह ॥
विरता विरत विवेकता श्रावक कहिये तेह ॥ [illegible]
जोरुचि काल अनादिकी कुमता कुटिलकु चाव[illegible]
[illegible]णसें अरुचि अचावना सो समकित समनाव ॥[illegible]

॥ चौपई ॥

॥ देव निरञ्जनगुरु निगरन्थ दया धरम आगम शवपन्थ ॥ ए समकित कहिये विवहार निश्चै निजगुण लखै सुसार ॥ ५२ ॥ तत्वतीन तिहुगुणकी रीत जिन व[illegible]नांकीहै [illegible] संशय नहि फल संदेह [illegible] ५३ ॥ दिन

दिन समता सुमति सुभाव दमता इन्द्रीकुमति कु
भाव ॥ जिन धरमीसूं अधिक सनेह सब परिवार
गिणे पर एह ॥५४॥ धरम न होय करे जब पाप तब
जियकूं निन्दै निज आप ॥ बालकवछडारीति
सुजांण केरुनमूके धरम वखाण ॥ ५५ ॥ जैन धर
मकी महिमा होय एसो काजकरे नरलोय ॥ करु
णाकरे दुःखिजन देख निरदय जीवहणेंन उपेख
॥ ५६ ॥ दया धरम धारे अरु कहे दयाधरमसूं ला
गोरहे ॥ दयाधरमसूं परम सनेह दया धरमविण
निन्दय देह ॥ ५७ ॥ दयाधरमसें हे परवीण दया
धरममें हैलयलीण ॥ दयाधरम धीरज चितधरे
दयाधरम थिरता मन करे ॥ ५८ ॥ संकट मांहि
अरिग नितमेव ...१ ॥ ...व सगम...ला ॥ ...य
वरगसेती वैरा... ॥ दोहा ॥ ॥
हरप हेतसूं लिखेपा ... भजे ...य भाषाभेद वेयाल ॥
तजे ॥ सरधा...ती... वोलख... षोडश बोल विशाल ॥ १ ॥
णधरे ॥ ६०॥ भाव चा...य उपनितादि चउ बोल ॥
सकति कबु ...व पच... अन्यर्थ गिण सोल ॥२॥ नि
नारी होय किसन क... भेद न जाणे लेश ॥ कल्पे न
गुणमाला गुंथी ... तों किम दे उपदेश ॥३॥ पिउ पर

एएक वीसधरे गुणधार तेनतणो शुणिये अधिकार ॥ ४८ ॥ करुणांवन्त लज्जा गुणवन्त मिष्ट वचन बोले बुधिवन्त ॥ विनयविवेक विचार विनाण सोम निजरशीतल सुखधाम ॥ ४९ ॥ पर उपगारी परम दयाल गुणरागी आज्ञा प्रतिपाल ॥ गुणन विसारे सरल सन्तोष पर अवगुण न कहे परदोष ॥ ५० ॥ दीरघ दृष्टि विचारे बात लखभिलखी उपयोग क हात ॥ ए एकवीस अरथ अनधार किमन कह्यो श्रावक आचार ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरथ दाए विधि आचरे अनरथ दाए तजेह ॥ विरता विरत विवेकता श्रावक कहिये तेह ॥ १ ॥ जोरुचि काल अनादिकी कुमता कुटिलकु चाव ॥ ... अरुचि अभावनां सो समकित समभाव ॥ २ ॥

॥ चौपई ॥

॥ देव निरञ्जनगुरु निगरन्थ दया धरम आगम शिवपन्थ ॥ ए समकित कहिये विवहार निश्चै निजगुण लखै सुसार ॥ ५२ ॥ तत्वतीन तिहुगुणकी रीत जिन वचनांकीहै परतीत ॥ नहि संशय नहि फल संदेह पर पाखण्डीसूं नही नेह ॥ ५३ ॥ दिन

भीतिहे नही राज नहि रीति नहि गुरुभीतिहे ॥ नही आग नहि उंस नही अपसोसहें नही राग नहि रोष नही जमजोषहे ॥ ६८ ॥ नही प्रीत नहि प्यार नही नरनारहे नही जीत नहि हार नही अवतारहे ॥ नही बोल नहि चाल अचल उ द्योतहे नही रूप नहि रङ्ग जोतमें जोतहे ॥ ६९ ॥ नही मेवामिष्टांन नही तिलतक्करा नहि पेमा पक वान नही गुडशक्करा ॥ नही मलमूत्र विकार न भू षण अङ्गहें नहि शोभा सिणगारन सुन्दर संगहे ॥ ७० ॥ अजर अमर थिरवास सरवसाता भई जनम मरण डुखनांहि असाता सब गई॥ केवल आ तमराम सुजस सुखसाजहें किसन सदाउणठाम रामको राजहे ॥ ७१ ॥ इति गुणमाला ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार निखेपा सातनय भाषाभेद बेयाल ॥ असझाइ चौतीस पुनि षोमश बोल विशाल ॥ १ ॥ वयणलिङ्ग पुनि कालत्रय उपनितादि चउ बोल ॥ प्रत्यक्ष ... रोक्ष तिम अन्यर्थ गिण सोल ॥२॥ नि रवद्यरू सावज गिरा भेद न जाणे लेश ॥ कल्पे न हि तसुबोलवो तों किम दे उपदेश ॥३॥ पिक पर

वर्जा कहियो पिण रहि मोटोजूल ॥ नाया भेद न जाणियो जिन मारगको मूल ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

॥ सावज्जमणवज्जाणं नासाणं जोनयाणइ विसे सं वुत्तंपि तस्सनग्वमं कि मंगपुणोइ सिउं काउं ॥१॥

॥ कवित्त ॥

॥ जणवेये १ समेये २ ठवणा ३ नाम ४ रूपं ५ नावं ६ पकुच्चं ७ व्योहारं ८ जोगं ९ उपमा १० उ

---

१ 'जणवयसच्चा-जिस देश ज्यो नाषा वोले सो सत्य. २ 'समयसच्चा'-जैसे कर्दममें अनेक चीज उत्पन्न होय परन्तु मा मान्त नाषामें पङ्कज शब्दका कमलही अर्थ समजाजाय, ३ 'स्थापनासत्य-जैसे जिन नगवानकी प्रतिमाकूं जिन प्रतिमा कहो कोई हर्जकी वात नही अथवा एकापर १ विन्दी दिये दश २ विन्दी दिये शत ३ विन्दीदिये सहस्र इत्यादि. ४ 'नाम सत्य जैसें गुणहतकूं गुणसागर इत्यादि. ५ 'रूपसत्यं'-महात्माने रूपे क्रिया महातमा कहे. ६ 'नावसत्यं-'जैसें सूत्र नाषायें एक वरण पांचही वरण लाजे परंवगपक्षी सुपेद शुक हस्यो कोकिल , ७ पकुच्च-जैसें; कनिष्ठाङ्गुलीकी अपेक्षा अनामिका वडी मध्यमाकी अपेक्षा तर्जनी छोटी वेहं, आंगली अनन्ता पुजलां रेनी पनीछे ऐसे वोलो कोई हरज नही, ८ 'व्यवहार सत्य'-जैसें पर्वत आश्रित तृणवृक्षादिक जलता देखने कहे पर्वत जले है अथवा अमुको गांवन्हांटो इत्यादि, ९ 'जोगदण्डेन दण्डी छत्तेन छत्ती तथा अमुका राजाके लाख घोडो छे, १० 'उपमा

चारिये कोहे[11] १ माणे[12] २ मायाँ[13] ३ लोभे[14] ४ पेज[15] ५
दोस[16] ६ हाँस[17] ७ भय[18] ८ अखाइये[19] ९ उवंघाय[20] १०
असत्त संभारिये ॥ उपन्नमिस्सिया[21] १ तिम विगंत[22]
मिस्सिया २ पुनिउपन्न[23] विगत ३ जीवें[24] ४ अजीवाँ[25]
सुधारिये ५ जीवाजीव[26] ६ परंत[27] ७ अनन्त[28]

सत्य–जैसें चन्दे सुनिम्मलयरा, सायरवरगम्भीरा अथवा चन्द वदनी मृगलोचनी इत्यादि, सत्य भाषाका ये दश भेद जाणिये ११ 'कोहे'–जैसे क्रोधके वश अदासने दास इत्यादि, १२ 'माणे' जैसे अल्प धनीकूं वहुधनी अथवा अनाचारीहे महा आचारपणों माने, १३ 'माया कपटाईके वश अखाड भूतवत्, १४ 'लोभके वश वोले सो मिथ्या, १५ 'प्रेमनीने सराय कहे जैसे मे तेरा दास, १६ द्वेषकीने सराय गुणवन्तने निर्गुण कहे, १७ हास्यके वश भाडनीपरे वोले, १८ 'भयनीने सराय चौरादि फाल्यो असंजम वोले, १९ 'व्याख्यान करतां खोटी कथा कहे, २० 'उपघातमृषाते हिंसाकारी वचन वोले, ये दशप्रकारे असत्यभाषा, २१ 'जैसे इस ग्राममें दश वालक जनम्या, २२ 'जैसें इस ग्राममें दशवालक मुंआ, २३ 'जैसे इस सहरमें १० वालक जनम्या १० वृद्ध मरे, २४ 'जैसे जीवांको ढगलो छे पिंणते मांहिमुं आघणा तेहने जीव कहे, २५ 'जैसे कृमीनो ढगलो छे तेमाहि मूआ कलेवर पिण घणाछे तेहने कहै ये अजीय छे, २६ जैसे कृमीनो ढगलोछतेमांही मरेभीहै जीवतेभी है उसका प्रमाण वांधे, २७ 'जैसे कन्दमूलमें अनन्ता अने पत्रादिकमें प्रत्येक छे तेहने कहै ये अनन्तकाय है, २८ जैसे कोइक अवयव

८ अद्धाए अद्धद्धाए इत्यादि मिश्रभाषा, हिमन विचा रिये॥१॥ आमंतणी। २ आणवणी ३ जायणी। ३ पुच्छणी भाषा ४ पन्नवणि ५ पच्चक्खाणी। ६ भाषा इच्छानुलोमयां ७ अणभिग्गहि ८ अभिग्गहिं ९ संशयकारणी। १० जामे मनोगत जाने छे ॥ वोगडा ११ अव्वोगडा १२ या मन्कृत १ प्राकृतकी २ सूर

अनन्त कायनो छे ताकी पन्नर नहत ४८ ए पात छे २७ जि- मकोइ कार्ये उपना ५म कहे दिवमजन पिण (गाथाओ रात्री पणी, ३० रात्री अथवा दिवसनो एक देश पहोरादिक आसरी जैसे कार्य उपना कहे पहेर थयाने मध्यान्ह थयो ये दशभेद मिश्र भाषाका, ३१ 'जैसे हे गोयम हे जम्बू हे देवदत्त ३२ आज्ञानो देवो जैसे अमुक वस्तु ल्याज्यो, ३३ 'जैसे अमुक वस्तु दीज्यो, ३४ 'जिम पन्थादिकनों पूछवो, ३५ 'दानशील तप भाव विनयादि उपदेशनों देवो, ३६ 'नवकारसी आदि पच- खांण मांगे तेहने पचखांण करावो, ३७ 'जैसे गुरु शिष्यने कहे अमुको कामकर तिवारेशिष्य कहे माहरी पिण एहीज इच्छा है, ३८ 'जे भाषा बोलता आगलाने समझपड़े, ३९ 'जे भाषा बोलता बीजाने समझ न पडे, ४० 'जे भाषा बोलता संशय थाय अर्थ न जाणे [illegible] सिन्धु आण, ४१ 'जे भाषा श[illegible] मवकू समझ प[illegible] 'जैसें वक [illegible] ाट २। [illegible] व्यवहार [illegible] १२ भेद [illegible] ४४ 'जैसे

[45]सेनी ३ मागधी[46] ४ पिशाची[47] ५ मनमानीहै अपभ्रंश[48] येही षठ गद्यवन्ध पद्यवन्ध भाषापदे कृष्ण लाल भाषाविधि ठानीहै ॥ २ ॥

॥ अथ समकित लहरी ॥

॥ दोहा ॥

॥ सव विचार सुलटो करै सव विवेककी वात ॥
समी दृष्टिसो सम किती वांकी दृष्टि मिथ्यात ॥ १ ॥
समकित सरधा सरदहो समता समतिसु ज्ञान ॥
समरस चाख सुभावसुं समकर कुमति कुज्ञान ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ जो है सव देवनका देव सो महादेव करो तुम सेव ॥ दोष अष्टादश नांहि निदान गुण अनन्त सो है भगवान ॥ २ ॥ गुरु आतमज्ञानी सुध सन्त

ऊझरी पउरे गामे, इत्यादि ४५ 'सूरसेनी भाषा' ४६ 'मागधी भाषा' ४७ पिशाची भाषा, ४८ 'अपभ्रंश जैसें उपाध्यायका उझाजी ये ठ भाषा गद्यवंध उर पद्यवन्ध ये १२ भेद व्यवहार-भाषाका विकल्पसें होतेहै उर सत्य असत्य ये दो भाषा परजापतीहै मिश्र उर व्यवहार ये दो भाषा अपरजापतीहै सत्य उर व्यवहार ये दो भाषा साधू वोले असत्य उर मिश्र ये दो भाषान वोले उर इससे अधिक भाषाके भेद जाणे चाहे तो पन्नवणाजी सूत्रका इग्यारमां पद देखें ॥

८ अद्धाए[29] अद्दद्धाये[30] दशभेद मिश्रकासु किसन विचारिये॥१॥ आमंन्त्रणी[31] १ आणमणि[32] २ जायणी[33] ३ पुछणी[34] भापा ४ पन्नवणि[35] ५ पचखांणी[36] ६ साहु सुखदानीहे इछाणुलोमयाँ[37] ७ अनभिग्रहि[38] ८ अनाअभिग्रही[39] ९ संशयकारणी[40] १० जामे संशेयुत जानीहे ॥ वोगडा[41] ११ अवोगडा[42] १२ वा संस्कृत[43] १. प्राकृतही[44] २ सूर

अनन्त कायनो छे वाकी परतहे तेहने कहे ये परत छे, २९ 'जिमकोइ कार्य उपनां इम कहे दिवसछते पिणवे गाथाउ रात्री पडी, ३० रात्री अथवा दिवसनो एक देश पहेरादिक आसरी जैसे कार्य उपना कहे पहेर थयाने मध्यान्ह थयो ये दशभेद मिश्र भापाका, ३१ 'जैसें हे गोयम हे जम्बू हे देवदत्त, ३२ आज्ञानो देवो जैसे अमुक वस्तु ल्याज्यो, ३३ 'जैसे अमुक वस्तु दीज्यो, ३४ 'जिम पन्थादिकनों पूछवो, ३५ 'दानशील तपभाव विनयादि उपदेशनों देवो, ३६ 'नवकारसी आदि पचखांण मांगे तेहने पचखांण करावो, ३७ 'जैसे गुरु शिष्यनें कहे अमुको कामकर तिवारेशिष्य कहे माहरी पिण एहीज इछा हे, ३८ 'जे भापा वोलता आगलाने समझपडे, ३९ 'जे भापा वोलतां वीजाने समझ न पडे, ४० 'जे भापा वोलता संशय थाय अर्थ न जाणे जैसे सिन्धु आण, ४१ 'जे भापा शुद्ध वोले सवकूं समझ पडे. ४२ 'जैसें वकरानी परें मणमणाट शब्दवोले, ये व्यवहार भापाके १२ भेद, ४३ 'प्राणाधीशोगतो मे इत्यादि, ४४ 'जैसे

सेनी[४५] ३ मागधी[४६] ४ पिशाची[४७] ५ मनमानीहै अपभ्रंश[४८] येही षठ गद्यवन्ध पद्यवन्ध नाषापदे कृष्ण लाल नाषाविधि ठानीहै ॥ २ ॥

॥ अथ समकित लहरी ॥

॥ दोहा ॥

॥ सव विचार सुलटो करै सव विवेककी वात ॥
समी दृष्टिसो सम किती वांकी दृष्टि मिथ्यात ॥ १ ॥
समकित सरधा सरदहो समता समतिसु ज्ञान ॥
समरस चाख सुनावसुं समकरं कुमति कुज्ञान ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ जो है सव देवनका देव सो महादेव करो तुम सेव ॥ दोष अष्टादश नांहि निदान गुण अनन्त सो है नगवान ॥ २ ॥ गुरु आतमज्ञानी सुध सन्त

ऊह्वरी पऊरे गामे, इत्यादि ४५ 'सूरसेनी नाषा' ४६ 'मागधी नाषा' ४७ पिशाची नाषा, ४८ 'अपभ्रंश जैसें उपाध्यायका उंकाजी ये ६ नाषा गद्यवंध उर पद्यवन्ध ये १२ नेद व्यवहारनापाका विकल्पसें होतेहै उर सत्य असत्य ये दो नाषा परजापतीहै मिश्र उर व्यवहार ये दो नाषा अपरजापतीहै सत्य उर व्यवहार ये दो नाषा साधु वोले असत्य उर मिश्र ये दो नापान वोले उर इससे अधिक नापाके नेद जाणे चाहे तो पन्नवणाजी सूत्रका इग्यारमां पद देखें ॥

सुध दरसन सुध चारितवन्त ॥ गुण सगवीस धरे सु ध नाव नव जल तारकहे सुध नाव॥ ४ ॥ धरम कह्यो केवलि परधान स्वपर दोय दया पहिचांन ॥ समारंभ न करे उपदेश यह जिनमतमें जान विशेष ॥ ५ ॥ आगमसो सुधनय अनुसार असुधमिश्र अ रु सुध विविहार ॥ निमतरूप उपादान दोय भेद गेंहे उपादे समझ अखेद ॥ ६ ॥ काल सुभाव नियत निरधार पूरवकृत अरु पुरुषाकार ॥ ए समवाय जुमाने जेह समकित धारी कहिये तेह ॥ ७ ॥ कालविनां तरुवर नहि फले कालविना चारित नहि पले ॥ कालविनां न चढे गुणगण कालविना न पढे सुध ज्ञान ॥ ८ ॥ हंस सुचाल सुभावे होय आफ सुभावतिरे वहु तोय ॥ मोरमनोहर होय सुभाव हिं सक सहजे होय कुभाव ॥९॥ जे सो तरु तेसो फल जे सो दीपक तेसोजगे ॥ चोर साधुसंग दुख देह नीति वचन अवधारो एह ॥ १० ॥ सं ते विपति सरोग निरोग हांण वृद्ध आयूसंजोग॥ सुख दुख करमतणी गति देख नयनिश्चय पूरव कृतलेख ॥ ११ ॥ उद्यम काज सफल सहु कहे नय विवहार जतन सरदहे ॥ पुरुषाकार पराक्रम जांण

पांचे बोल करे परिमाण ॥ १२ ॥ समसंवेग अने निरवेग करुणा आसत धरम विवेग ॥ सत्य वचनकी कर परतीत सर लंछण समकितके मीत ॥१३॥ सा स्वादांन उपसम अवधार खय उपसम वेदक सुख कार ॥ खायकसूं पांमे भवपार समकित कह्यो पश्च परकार ॥ १४ फिर याके नव भेदविचार आगम अ ध्यातम अनुसार॥ दशा आठ समकितकी कही अन्य ग्रन्थसे जानोसही ॥१५॥ चवदे मारगणां मनधार उत्तरवासठ भेदविचार ॥ क्षिपकश्रेण उपसमकी चाल षटद्रव्य लोकालोक संभार ॥ १६ ॥ गुणस्था नकी रचनांकरो सांची सीख समझ उरधरो ॥ परमा तम आतम गुण लखो परगुण ज्ञान मूढमति भखो १७

॥ दोहा ॥

॥ जे जिनभाषित अरथ है सरव वचन परिमा ण ॥ तामें कछु संसो नही यह समकित सरधान ॥१८॥ पांच प्रकार मिथ्यात दल ताको करे विनाश॥ सहजानन्द स्वरूपगुण सांचो होय प्रकाश ॥ १९ ॥ सुखमें होय न मगनता दुखमें होय न दीन॥ राग द्वेष उपसम सदा सो सम शुभगुणलीन ॥ २० ॥ रा म रमे वैरागमें मोहदशा व्यछीन ॥ उदासीन सव

सूं रहै सो संवेग सुचीन ॥ २१ ॥ इन्द्रिय विषय कषायसूं अरुचि होय परिणाम ॥ रुचि अविन्यासी संपदा सो निरवेगसु नाम ॥ २२ ॥ दयादान दिलमे धरै निहचे अरु विवहार ॥ दुखी देख करुणा करै अनुकम्पा उपगार ॥ २३ ॥ केवलवाणी सरद है है परतीत सनेह ॥ समकित धारी जीवकी कही आसता एह ॥ २४ ॥ दरव नाव समकित युगल निश्चै अरु विवहार ॥ निसंग सहज गुरु देशना ए पट अरथ सुधार ॥ २५ ॥ कारक रोचक निज कहै है दीपक परकाज ॥ ए नवधा समकित सही नाखी श्री जिनराज ॥ २६ ॥ ज्ञानावरण तणे उदे आगम ज्ञान अजाण ॥ तहत करीने सरदहे समकित दरव प्रमाण ॥ २७ ॥ जीवादिक नवपद कह्या तिणमय संसै नाहि ॥ जाणै सांचा अरथकूं समकित नाव सुआहि ॥ २८ ॥ ज्ञानादिक तिहुं गुणविषै परम अपूरव प्रेम ॥ निज सुनाव सत्ता गहे निश्चै समकित नेम ॥ २९ ॥ जाणपणो है जो हरी ज्ञानाज्ञान विचार सुगुरु सुदेव सुधर्मकूं परखे सो विवहार ॥ ३० ॥ पंथी पऱ्यो उजाडमे वंछितपुर नही जाहि ॥ सहज नाव सुधि ऊपजे निसंग कही रुचिताहि ॥ ३१ ॥ ज्युं प

न्थी भुल्यो भर्मे मिल्यो मुसाफर आय ॥ वतलायो पुर पंथ एह रुचि उपदेश सहाय ॥ ३२ ॥ जैसी आगममें कही तैसी किरिया मान ॥ मन्दभाव करणी करे कारक समकित जान ॥ ३३ ॥ सांची रुची अनि प्रीत सुं हिरदेहरषित होय ॥ अधिक भाव करणी करे रोचक समकित सोय ॥ ३४ ॥ मिथ्यातीसुंन ज्ञान वल सांचो करे वखान ॥ दीपावे जिन धरमकूं सो दीपक पहिचांन ॥ ३५ ॥ जैसे जोत मसालकी अपणी सुध कछु नांहि ॥ पन्थ दिखावे अवरकूं आप की चकेमांहि ॥ ३६ ॥ वातां कहे वणायके मीठी मिरच लगाय ॥ उजियारो औरा करे आप अन्धेरे जाय ॥३७॥ खय उपसम उपसम तथा खायकरवरी न जाय ॥ गुणी जीव गुणज्ञान हैं गुणसूं गुणी कहाय ॥३८॥ तीन पुञ्ज चौथो करे प्रथम मिथ्यात अशुद्धि ॥ मिश्र पुञ्ज दूजो कह्यो तीजो समकित शुद्ध ॥ ३९ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ समकित खायक अखय कहाय खय उपसम आवे अरु जाय ॥ इणमें वहु थिरता कछु नांहि खिण समकित खिण मिथ्यामांहि ॥ ४० ॥

॥५ठ॥ यह निश्चै विवहार अरु सामान्य विशेष विधि॥ ताको कह्यो विचार रचनां समकित भूमकी॥ ५९॥

॥ दोहा ॥

॥ समकित विन किरियानि फल सफली समकित सोय॥ मूलसहित तरु लहलहे मूलविना नहि होय॥ ६०॥ प्रकृति सात जब उपसमे उपसम समकित जोय॥ कछु खयकर कछु उपसमे खय उपसम जब होय॥६१॥ सात प्रकृति जब खय करे सो खायक उर आण॥ खय उपसम वेदक विहु वेदक विवुध वखांण॥ ६२॥ ठासट सागर खायोपसम खायक सर तेतीस॥ जघन्य मध्य वहु भेद हे यह उतकृष्टही दीस॥ ६३॥ सास्वादान षट आवली उपसम मोहरतमेक॥ वेदक एक समो रहे यह मन आन विवेक॥६४॥ अडिल खायक वेदक एक वेर आवे उदे पांच वेर उपसम सास्वादान जो वदे॥ आवे वेर असंख्य खयोपसम जाणिये यह जगवासी जीवनसिद्ध वखाणिये॥ ६५॥ अथ पंच प्रकारको मिथ्यात॥ दोहा॥ प्रकृति मूल मिथ्यातको कहूं पांच प्रकार॥ और अनेकहि आचरन मति विपरीत विचार॥ ६६॥

॥ चौपाई ॥

॥ बावन वीरपीर चित धरे भा सिंहकी पूजा करे ॥ समरे नित चौसठ जोगणी जगति भवानी भेरूं तणी ॥ ६७ ॥ व्यन्तर दे अराधि आप सूरमन्त्र नव ग्रहको जाप एक देवसेवे चित लाय मनवांछित फल मा ध्याय ॥ ६८ ॥ थावर जंगम दोनूं हणे ग रव व न फूटो मुखभणे ॥ चोरी करम करावे करे मैथु नमांहि मगन परिचय ॥६ए॥ परिग्रह संग्रह संचे बहु पाप सथानक सेवे सहु ॥ सव आश्रव आश्रय सुख लहे एसे कुगुरु सुगुरु सरद हे ॥७०॥ त्रस था वरको करे विनास इन्द्रिय पोषे परम हुलास ॥ दान पुंन्य परगट उपदेश तीरथ जात भमे परदेश ॥७१॥ दिनको वरत निशानित खाय अभख भखे फल अहार कहाय ॥ दरसन वरन कुमतिको गेह अधर म धरम वखाणे एह ॥ ७२ ॥ राजनीति रमणी रस रीति लिखण पढण बहु कलाविनीत ॥ ज्योतिष वै दिक वेद पुराण रच पच पढे किताब कुराण ॥७३ ॥ योगासण भाषा गुणगीत सुकन सुपन मन्त्रादिक प्रीत ॥ गुटिका रतन परिख्या मान एह अज्ञान कहे म हाज्ञान ॥ ७४ ॥ चिंहु परकार मिथ्याती देव देव नि

५० व्हार अरु सामान्य विशेप विधि॥
रतन सरिखी रचनां समकित भूमकी॥ ५९॥
रु कुगुरु दोउ गिण दोहा॥
संवर द्वार हिंसा दया॥ गानि फल सफली समकि
क सम्यक ज्ञान बाहिर अन्त पमे उपसम स
सुगुरु सुदेव सुधर्म सुग्रन्थ सांचो जाण्य उप
पन्थ॥ पिण अपणो हठ मूके नांहि मिथ्य सो
कहे सब मांहि॥ ७७॥ चिहुं बोल थिरतक
करे नानाविध विकलप जिय धरे॥ सांची सं
पडे नहि कदा सर्व बातको संशय सदा॥ ७८
जीवादिक नवि जाणे भेव गहल रूप वरते
मेव॥ सो तिरयञ्च विकल थिर काय अणा
अज्ञान कहाय॥ ७९॥ पहिलो महा मिथ्याती ८०
विनय मिथ्याति दूजो लह्यो॥ तीजो निज म
पचखाण चोथो संशय नाम वखांण॥ ८०॥
अज्ञान पांचमी ठोर यह मिथ्यात बहुतहै ठेर
प्रथम चोकडी तजे मिथ्यात तब समकितकी किर
॥ ८१॥ कत लहरी॥

॥
वात जुग जांण॥

कीच कलेवर शुक्रमें नर नारी संजोग ॥ लघुखाली
नहा खालमे अशुचि चलित रस जोग ॥ २ ॥ मनु
ष्य स मूर्छम ऊपजे चवदे स्थानक एह ॥ आगम
ज्ञाता आगमें मति मन धरो संदेह ॥ ३ ॥ इकस
रत वीतां पछे उपजे जीव असंख ॥ सर्व मिथ्या
ी आयुइक महुत मान निसंख ॥ ४ ॥ अङ्गुल
ाग असंख तनुं पण इन्द्री वसु प्रांण ॥ वेद नपुं
कहै सही जाषे सुगुरु सुजांण ॥ ५ ॥ इति॥ अथ
त्रिजोजन दोषः ॥

॥ दोहा ॥

। छत्री ब्राह्मण वांणियां शूद्र वरण वेकार ॥
ाहु निश जोजन करे नहि मनमांहि वि
॥ १ ॥ नारू कारू करसणी रांक कमीण कु
॥ नीचगरीव गिवारजे ए सहु जीमें रात
॥ निरधन मानुष मेहनती पराधीन परदास ॥
इनके वासर निशा जास पराई आस ॥ ३ ॥
ती श्रावकयती समकित धरतिहुं पात ॥ उत्त
ं दिनछते मध्यम जीमे रात ॥ ४ ॥ दिनकूं
देवता जीमे नर परजात ॥ राक स जीमे रा
ऽुत कहूं क्या वात ॥ ५ ॥ पशु पंछी निश ना

कीच कलेवर शुक्रमें नर नारी संजोग ॥ लघुखाली महा खालमे अशुचि चलित रस जोग ॥ २ ॥ मनुष्य स मूर्छम ऊपजे चवदे स्थानक एह ॥ आगम ज्ञाता आगमें मति मन धरो संदेह ॥ ३ ॥ इकम हुरत वीतां पछे उपजे जीव असंख ॥ सर्व मिथ्याती आयुइक महुत मान निसंख ॥ ४ ॥ अङ्गुल भाग असंख तनुं पण इन्द्री वसु प्रांण ॥ वेद नपुंसकहै सही भाषे सुगुरु सुजांण ॥ ५ ॥ इति ॥ अथ रात्रिभोजन दोषः ॥

॥ दोहा ॥

॥ छत्री ब्राह्मण वांणियां शूद्र वरण वेकार ॥ ए सहु निश भोजन करे नहि मनमांहि विचार ॥ १ ॥ नारू कारू करसणी रांक कमीण कुजात ॥ नीचगरीव गिवारजे ए सहु जीमें रात ॥ २ ॥ निरधन मानुष मेहनती पराधीन परदास ॥ क्या इनके वासर निशा जास पराई आस ॥ ३ ॥ जैनमती श्रावकयती समकित धरतिहुं पात ॥ उत्तमजीमें दिनछते मध्यम जीमे रात ॥ ४ ॥ दिनकूं जीमे देवता जीमे नर परभात ॥ राक स जीमे रातकूं वहुत कहूं क्या वात ॥ ५ ॥ पशु पंछी निश ना

करे चे जो चतुर सुजांण ॥ दोप वहू पातक वणो सुणज्यो सुगुरु वखांण ॥ ६ ॥ कोड जलो दर वमनता व्याधी विविध प्रकार ॥ मूढमरण स्वर हीनता उर अनेक निहार ॥ ७ ॥ सांप विछु घुण सुल सुली माखी मकडी माल ॥ चेटी सूल पतंगिया जूंकी गरलट लाल ॥ ८ ॥ इत्यादिकरजनी विपे होय जीवकी घात ॥ सुगुरु कह्यो इम जैनमे सुणो धरमके व्रात ॥ ए ॥ अन जल अन्नख समानहै जोग पंथके न्याय ॥ वरसा रुतु चोमासमे अनमति रातन खाय ॥ १० ॥ सूरज आंथमिया पछे पाणी रुधिर समान ॥ अन्न मांस सम जांणिये कही मारकंड पुराण ॥ ११ ॥ अरधविंव मूरख कहै पेट नर इया प्रेत ॥ दया धरम रुचनां नही हिंसा करमकु हेत ॥ १२ ॥ सुगुरांसें सरधा मिले कुंगुरांसे वकवाद ॥ कौन करे कारज कहां करमवन्ध विपवाद ॥ १३ ॥ आंधेकों दरसे नही पंथ कुपंथ कुवाट ॥ सुगुरु कहे उनकों कहा वत लांज घर हाट ॥ १४ ॥ आगम अरथ उथापके थापे अपणो मत्त ॥ किसन कहे ते प्राणियां रुलसी च्यारू गत्त ॥ १५ ॥

॥ मात साकंभराजरानी लाज तूरखले भवानी ए देशी ॥

॥ जपो नवकार मंत्र ज्ञाता स्वर्ग अपवर्ग सौख्य दाता ॥ आंकणी ॥ भीत रुज तनमे नहि आता रिपू कोइ कर न सके घाता ॥ कोड केवली गुणकरे तो पिण नावे पार महा प्रभाविक मंत्र प्रमेष्ठी जपतां जय जयकार मिटावे जनम मरण खाता २ जपो० ॥ १ ॥ प्रथम अरिहन्त देव नांमे दोष नहि अष्टादश जामें अखिल[2] गुण द्वादशही पामे गिरा[3] गुण पणतीसे तामे जघन दोय कोड केवली भत कृष्टा नवमान करम घातिया वेद खपावी पांम्या केवल ज्ञान विभौजो चउसठ गुण गाता २ जपो० ॥ २ ॥ नमो पद दूजे श्री सिद्धा ज्ञान दरसन करि समृद्धा करमवर्सू हणिवसु गुण लीधा अन्त भव अरणवका कीधा दरव प्राण नहि एकही भाव प्रांणहै[5] च्यार ज्योतिरूप निकलंक निरञ्जन अवि

---

१ ' नव वर्षकाकों केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा सो कोटि वर्ष पर्यंत नवकारकी महिमा करे फेर उनके पाट नव वर्षका केवली फिर नवकारकी महिमा करे ऐसे कोड केवलियोंसें पिण गुण वर्णन नहि किया जाय. २ ' संपूर्ण, ३ वाणी. ४ ' इन्द्र, ५' ज्ञान प्राण वीर्यप्राण जीवितप्राण सुखप्राण ज्ञानवीर्य जीवितसुख अनन्त,

नाशी अविकार ध्यान उरयोगेंद्रध्याता २ जपो ॥ ३ ॥ नमो पद आचारज तीजे संपदा अष्ट देख रीझे छतीसों गुण गिरवा लीजे उपमा सुरतरुकी दीजे हरिसमान चउ संघमे गीता रथ गुण धाम पण्डित योग अखण्डित पाले धरम जाऊ निरजाम सुज स वर लोक मांहि ख्याता २ जपो० ॥ ४ ॥ नमो पद चोथे उवझाया विमल गुण पण वीसे पाया भारती वर्के वास छाया मिथ्या दरसन सल अवदाया भणे भणावे सूत्र सब चरँण करँनका धार डिगता प्राणी धरम सूंसकोइ थिर कर राखण हार भविकने बोध वीजदाता २ जपो० ॥ ५ ॥ नमो पद पञ्चम उपगारी साधु गुण सप्तविंश धारी अमल चित स्वछ गङ्गवारी तपोधन घोर ब्रह्मचारी नमो ज्ञान दरसन भणी तप चारित्र उदार अड सिधनव

व मङ्गल माला पग पग मिले अपार विघन घन मेटणने वाता २ जपो० ॥ ६ ॥ भणे जो भव्य

१ 'ध्यातान्तरात्माध्येयस्तु परमात्मा प्रकीर्तितः ॥ ध्यानस्यैकाग्रसंवित्तिरितिवचनात्, २ 'विष्णु वायु विधुवाजियम वासव मृगपति अर॥ रवि अहि कपि शुक पीतरंग भेक किरण हरिजान ॥ ऐसे प्राणिथके ११७ अर्थ होते है ३ 'प्रसिद्धः, ४

शुरू भावे थोक मन वंछित सब थावे अचिन्ती कम ला घर आवे लावणी किसन लाल गावे सार चतुर दश पुरवको परममन्त्र नवकार सब मङ्गलमे धुर यह मङ्गल सकल पाप क्षय कार सिवरतां वरते सुखसाता २ जपो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ थारी फूलसी देह पलक मांहि पलटे ए देशी ॥

॥ चतुर वीस जिनराज नमूं नित वेकर जोडि हुलासोजी चतुर गतीरी भ्रमणा मिटावण अब काल्यो प्रभु कासोजी २ ॥ १ ॥ टेर ॥ रुषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति पदम सुपासो जी॥ चन्दा प्रभुजीने सुविधि जिनेश्वर सियल सीयं ससुवासोजी च० ॥ २ ॥ विमल अनन्त सिरि धरम शान्ति जिन कनक वरण वपु[१] जासोजी ॥ कुन्थु अरेहमलि मुनि सुव्रत जिन सिंवरूं सास उसासोजी च० ॥ ३ ॥ नमिय नेम पारसमहावीरजी निज गुण कीध प्रकासो जी ॥ पञ्चमि गतिमे जाय विराज्या प्रणमूं पदकज तासोजी च० ॥ ४ ॥ तारक विरध विचारी तुमचो अवधारो अरदा सो जी ॥ किङ्कर किसन कहे कर जोडी प्रभु मुझ पाप पणा सोजी

---

१ 'शरीर,

तूं कुमत कलेसणनार लगी क्युं केड ए देशी ॥

श्री नेमनाथ भगवान सुनो मेरी अरजी भव कनें तारो क्युं न कहो क्या मरजी ॥ में अरज करूं कर जोड सुनो महाराजा किरपा कर दीन दयालसरे मुज काजा महाराज नेमजीनीका नेम जीनीका तुम लिया मुगति गढ जीत सूरमा ती का ॥ १ ॥ एक नयरसो रिपुरराज विराजे राजा तेरे पडे निसाणे घाव ठती सूं वाजा तेरे समुद्र वि जेजी तात सेवादेवि माता तुमकूं खलियो अवतार धरी हमसाता महा० ॥२॥ तेरे क्रृष्ण नरेसर आदि जांन सज आया तेरे जादव लाखों कोटि पार नहि पा या तेरे कांनारे कुण्डल मांथे रे मुगट जोती रे मुगट जोती तेरे गल विचमोहन माल जलकता मोती महा० ॥ ३ ॥ तुम करुणाके भण्डार दया दिल जागी तुम त्याग चले वनखण्ड भये वैरागी सती राजुलसी स तवंती भावसे त्यागी तेरे अन्त रगतकी जोत ज्ञा लागी महा० ॥ ४ ॥ सती लेकर संजम भार गिरनारे तहां प्रतिवोध्या रहनेमि कियो उप गारे वसुकरमरिपूकूं जीत अमर पद धारे जहां जन्म जरा नहि रोग अटल सुख सारे महा० ॥५॥

धनराज मति रहे नेमि नेम गुण सिन्धू कर जोर
सदा तिरकाल चरनमें वन्दू शिष किसनलाल गुरु
नन्द समीपे रहता वोवडी हरषसें भरके लावणी
कहता महा० ॥ ६ ॥

॥ देशी होरीका ख्यालकी ॥

काकन्दी नगरी भलीस कोइ सुन्दर शोभादार जित
शत्रू राजा तिहास कोई परजानें सुखकार धनवन्ता
वहुला वसेंस कोई वरते मङ्गलाचार हो ॥ १ ॥ का
कन्दीरा धन्ना वलिहारी जाऊ थारा नामकी आंक
णी ॥ भदरा नामे सारथ वाई वसे तिहां धनवान
तसु नन्दन धन्नो हुं तोस कोइ सुन्दर रूप निधान
पांच धाय पालीज तोस कोई महावलनिपरे जाण
हो काकं० ॥ २ ॥ भोगां समरथ जाणनेस कोई ज
निता कुशले खेम कुलवन्ती वत्तीस कां मणी
परणाई धर प्रेम महलांमे सुख भोगवेस कोइ दो
गुन्दक सुर जेमहो काकं० ॥ ३ ॥ तिण अवसर
जिन शासन मण्डन समोसस्या सुखकार संवेगी
मुनिवर भला स कोई साथे चउदे हजार सह
स्रावन उद्यानमे स कोइ उतस्या जगदाधार हो
काकं०॥ ४ ॥ वन पालक भूपालने स कोइ दीरू वधा

तूं कुमत कलेसणनार लगो क्युं केडे ए देशी ॥

श्री नेमनाथ भगवान सुनो मेरी अरजी सेव कनें तारो क्युं न कहो क्या मरजी ॥ में अरज करूं कर जोड सुनो महाराजा किरपा कर दीन दयालसरे मुज काजा महाराज नेमजीनीका नेम जीनीका तुम लिया मुगति गढ जीत सूरमा ती का ॥ १ ॥ एक नयरसो रिपुरराज विराजे राजा तेरे पडे निसाणे घाव ठती सूं वाजा तेरे समुद वि जेजी तात सेवादेवि माता तुमकूं खलियो अवतार धरी इमसाता महा० ॥२॥ तेरे कृष्ण नरेसर आदि जांन सऊ आया तेरे जादव लाखों कोटि पार नहि पा या तेरे कांनारे कुण्डल मांथे रे मुगट जोती रे मुगट जोती तेरे गल विचमोहन माल जलकता मोती महा० ॥ ३ ॥ तुम करुणाके भण्डार दया दिल जागी तुम त्याग चले वनखण्ड भये वैरागी सती राजुलसी स तवंती भावसें त्यागी तेरे अन्त रगतकी जोत ज्ञा नसें लागी महा० ॥ ४ ॥ सती लेकर संजम भार गई गिरनारे तहां प्रतिवोध्या रहनेमि कियो उप गारे वसुकरमरिपूकूं जीत अमर पद धारे जहां जन्म जरा नहि रोग अटल सुख सारे महा० ॥५॥

धनराज मति रहे नेमि नेम गुण सिन्धू कर जोर सदा तिरकाल चरनमें वन्दू शिष किसनलाल गुरु नन्द समीपे रहता वोवडी हरषसें भरके लावणी कहता महा० ॥ ६ ॥

॥ देशी होरीका ख्यालकी ॥

काकन्दी नगरी भलीस कोइ सुन्दर शोभादार जित शत्रू राजा तिहास कोई परजानें सुखकार धनवन्ता वहुला वसेंस कोई वरते मङ्गलाचार हो ॥ १ ॥ काकन्दीरा धन्ना वलिहारी जाऊ थारा नामकी भांकफी ॥ भदरा नामे सारथ वाई वसे तिहां धनवान तसु नन्दन धन्नो हुं तोस कोइ सुन्दर रूप निधान पांच धाय पालीज तोस कोई महावलनिपरे जाण हो काकं० ॥ २ ॥ भोगां समरथ जाणनेस कोई जनिता कुशले खेम कुलवन्ती वत्तीस कां मणी परणाई धर प्रेम महलांमे सुख भोगवेस कोइ दोगुन्दक सुर जेमहो काकं० ॥ ३ ॥ तिण अवसर जिन शासन मण्डन समोसस्या सुखकार संवेगी मुनिवर भला स कोई साथे चउदे हजार सहस्रावन उद्यानमे स कोइ उतस्या जगदाधार हो काकं०॥ ४ ॥ वन पालक भूपालने स कोइ दोरू वध

ई दीध सुंणकर हरण्यो राज वीस कोइ जाणे अमृ
त पीध प्रीति दान दीधो घणो स कोइ दारिद दूरे
कीध हो काकं० ॥ ५ ॥ चतुरंगणी सेना सजीस
कोइ साथे सहु परिवार कोणक ज्युं वन्दन जणीस
कोइ आयो नृप तिवार पञ्च अभी गम सांचवीस
कोइ वैठो सभा मझार हो काकं० ॥ ६ ॥ वीर प
धाख्या धन्न कुंवर सुण परम महा सुख पाय जम्मा
ली जिम नीकल्योस कोइ पालो मारग माय भगव
न वन्दी भावसूंस कोइ वैठो सन्मुख जाय हो काकं
॥ ७ ॥ जिन वरदे उपदेशनां स कोइ ए संसार अ
सार पुदगल रचना कारमी स कोइ जात न लागे
वार तन धन संपत पायके स कोइ राचे मूढगिंवार
हो काकं० ॥ ८ ॥ धर्म देशनां सांभली स कोइ सहु
को हरषित थाय तहत वचन वंदनां करी स कोइ
आया जिण दिश जाय धनो कुंभर वोले हिवेस
कोई ते सुण ज्यो चितलाय होय काकं० ॥ ए ॥ सर
ध्या अरु परतीतिया स कोई रुच्या तुमारा वेण अनु
मतिले अम्वा तणी स कोई संजमले सूसेण जिम
सुख होवे तिम करो स कोइ भगवंतरीया केण हो
काकं० ॥ १० ॥ मणरूप आवी इम कहे स कोई। तु

मति दो मुज माय संजमले सूं वीर समीपे देसूं जग छिट काय वज्रपात सम लागियो स कोइ धरण ढली मुरछाय हो काकं० ॥ ११ ॥ सावचेत खिण अन्त रे स कोई थई शीतल उपचार हिवडो लागो फाट वास कोई उलव्यो विरह अपार नीर झरे नेणा थकी स कोई टूटो जूं मुगता हार हो सुण पुत्र ह मारा संजम मत लीजे माने छोभने ॥ १२ ॥ सुन्दर अपछर सारखी स कोई नारवतीस उदार कुंमी नही किण वातरी स कोई भरिया रिधि भण्डार ए सवजा वो छोभने स कोई हमनें कुंण आधार हो सुण० ॥ १३ ॥ संपत सुपना सारखो स कोई वनिता दुख री खान चलित मान सुख पुदगली स कोई कुञ्जर नो जिम कान कामभोग हें सेथ बिन्दवो मुरछे जीव अयाण हो माताजी मोरा आज्ञा देवो तो सं जम आदरूं ॥१४॥ संजम नहि छे सोहि लो सकोई खडग धारकी चाल घरघर करणी गोचरीस कोई दुषण सगला टाल वाइस परिसा आकरास कोइ किम सहें सो सुखमाल हो सुण० ॥ १५ ॥ नरकवे दनां सही अनन्ती कहुं कठा लग माय परमाधांमी वस पड्यो सकोइ करवत वहरी काय जन्म जरा

ई दीध सुंणकर हरप्यो राज वीस कोइ जाणे अमृत पीध प्रीति दान दीधो घणो स कोइ दारिद दूरे कीध हो काकं० ॥ ५ ॥ चतुरंगणी सेना सजीस कोइ साथे सहु परिवार कोणक ज्युं वन्दन भणीस कोइ आयो नृप तिवार पश्च अजी गम सांचवीस कोइ वैठो सभा मझार हो काकं० ॥ ६ ॥ वीर पधास्या धन्न कुंवर सुण परम महा सुख पाय जम्मा ली जिम नीकल्योस कोइ पालो मारग माय भगवन वन्दी भावसूंस कोइ वैठो सन्मुख जाय हो काकं ॥ ७ ॥ जिन वरदे उपदेशनां स कोइ ए संसार असार पुदगल रचना कारमी स कोइ जात न लागे वार तन धन संपत पायके स कोइ राचे मूढगिंवार हो काकं० ॥ ८ ॥ धर्म देशनां सांभली स कोइ सहु को हरषित थाय तहत वचन वंदनां करी स कोइ आया जिण दिश जाय धनो कुंवर बोले हिवेस कोई ते सुण ज्यो चितलाय होय काकं० ॥ ए ॥ सरध्या अरु परतीतिया स कोई रुच्या तुमारा वेण अनुमतिदे अम्वा तणी स कोई संजमले सूसेण जिम सुख होवे तिम करो स कोइ भगवंतरीया केण हो काकं० ॥ १० ॥ मणरूप आवी इम कहे स कोई अनु

मति दो मुज माय संजमले सूं वीर समीपे देसूं जग
छिट काय वज्रपात सम लागियो स कोइ धरण ढली
मुरछाय हो काकं० ॥ ११ ॥ सावचेत खिण अन्त
रे स कोई थई शीतल उपचार हिवडो लागो फाट
त्रास कोई उलट्यो विरह अपार नीर झरे नेणा
थकी स कोई टूटो जूं मुगता हार हो सुण पुत्र ह
मारा संजम मत लीजे माने छोरुने ॥ १२ ॥ सुन्दर
अपछर सारखी स कोई नारवतीस उदार कुंमी नहीं
किण वातरी स कोई भरिया रिधि भण्डार ए सवजा
वो छोरुने स कोई हमनें कुंण आधार हो सुण०
॥ १३ ॥ संपत सुपना सारखो स कोई वनिता दुख
री खान चलित मान सुख पुदगली स कोई कुञ्जर
नो जिम कान कामभोग हें सेथ विन्दवो मुरछे
जीव अयाण हो माताजी मोरा आज्ञा देवो तो सं
जम आदरूं॥१४॥ संजम नहि छे सोहि लो सकोई
खडग धारकी चाल घरघर करणी गोचरीस कोई
दुषण सगला टाल वाइस परिसा आकरास कोइ
किम सहे सो सुखमाल हो सुण० ॥ १५ ॥ नरकवे
दनां सही अनन्ती कहुं कठा लग माय परमाधांमी
वस पड्यो सकोइ करवत वहरी काय जन्म जरा

दुख मरणनां सकोइ सुणतां मन कम्पाय हो माता० ॥ १६ ॥ उत्र पशु त्रहुवा घणां स कोई प्रमदा संग ली साथ समरथ नहि कोई राखवा स कोइ अनुम ति दीनी मात जिमतोने सुख ऊपजे स कोइ सोही करो तुमे जात हो सुण पुत्र हमारा संजम लेवो तो आव्योपालज्यो ॥ १७ ॥ जिम थावरचा पुत्रनो स कोइ महोछव कियो मुरार तिम ईहां पिण जाणवो स कोई जितशत्रू नृप सार हरप सहित बहु ठाट वाटसूं पोहोता बाग मजार हो काकं० ॥ १८ ॥ कर जोमी धन्नो कहे सकोइ अब तारो करतार श्रीमुख व्रत उचराविया स कोई लीना हिरदे धार जन्म हुवो अणगारनों स कोइ त्यागदियो संसार हो काकं० ॥ १९ ॥ डुक्कर तप प्रारंभियो स कोई दीक्षाले तिण वार छठ तप आमिल पारणे स कोइ कलपे उझित अहार सवणवणी मग रांकन वंछे सो लेणो निरधा र हो काकं० ॥ २० ॥ काकन्दी नगरी थकी स कोइ भगवन कियो विहार शिक्षा दुविध अभ्यासता स कोई संगधनो अणगार तथा रूपते थिवरां पासे भणिया अंग इग्यार हो काकं० ॥२१॥ विचरे आतम भावता स कोई सुरति लगी शिवधांम जपतप करणी

खप करे स कोई सारे आतम काम सुन्दर गल धारण करी स कोई सस विंशगुण दाम हो काकं० ॥२२॥ मास लोही सूकि गया स कोइ नसां जाल रही दीस पगसूं लेकर मस्तकतांई वोल कह्या इगवीस नवमां अंगमे जिन जिन करनें भाख्यो श्री जगदीश हो काकं० ॥ २३ ॥ ग्राम नगर पुर विचरतां स कोई राज ग्रही उद्यान भवजीवां तारण भणी स कोई समोसस्या वर्धमान खवर हुवां जिनवन्दन आयो भंभसार राजान हो काकं० ॥ २४ ॥ श्रेणक पूछे वे कर जोमी मुनिवर चउदे हजार शिव मारग अवगाहे सगला इणमे कुंणसिरिकार श्रीमुख वीर वखाणियो स कोई धनधन्नो अणगार हो काकं० ॥२५॥ सुंण सुख पायो राजवी स कोइ आयो मुनिवर पास पदपङ्कज प्रणमी करी स कोइ स्तवना करी हुलास भगवन वन्दी भूपति स कोई पोहोतो निज आवास हो काकं०॥२६॥ भांत भांतरी तपस्या करता पिञ्जर होय गइ काय खंधकनीपरे जाण ज्यो स कोइ वन्दी श्रीजिनराय विपुलगिरी सब साधु खमावी दियो संथारो ठाय हो काकं० ॥ २७ ॥ नव महिनां सुद संजम पाली पूरी मनरी आश एक मासरी संलेखण

कर शरणागत सिधवारा महा विदेह में मुगते जासी वसु धरम करनाश हो कां० ॥ २८ ॥ उगणीसें नी साठी वरसे अहि पुर शहर मझार किशनलाल गुण गाविया श कोई सुणजो सहु नरनार वन्द मुणन्द शुक्ल परसादे सफल कियो अवतार हो कां० ॥२९॥
इति श्रीधन्ना महामुनिराजरी सझाय ॥

॥ मानव भव पायो राज पायो ॥ ए देशी ॥

सतगुरु मोडो राजमोडो जिनियां सद्गुरु पद मोडो सत० ॥ टेर ॥ राजदेश जोबन तिरियांकी लिगणासे लिर मोडो धरम करतां आलस आवे तिकरो नातो तोडो सत० ॥ १ ॥ पेडा आवे पछ्या उजाले लोगनसे विन मोडो ढोला जी तन कारने हावे नरनाग रतन सा गोडो सत० ॥ २ ॥ परम धरमको मरम न जाणे कहे नरम हिडोडो कुगुरु कुदेव कुधर्मी मनाले मतर मतीसे मोडो सत० ॥ ३ ॥ ध्यान शील तप दान का मालिक सेवक सासो जोडो किशनलाल कहे धन्य नारा ते पुण्य खजाना जोडो सत० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय वीसी लि० ॥

॥ देशी मीराकी ते बाहुबलाजी पै बाहुबलाजी स्वयं सो जग धार हो धनो लियो ध्यान निश्चल रहीजी

कर सरवारथ सिधवास महा विदेहमे मुगते जासी वसु करम करनाश हो काकं० ॥ २८ ॥ उगणीसे ठी याली वरसे अहि पुर शहर मजार किसनलाल गुण गाविया स कोई सुणज्यो सहु नरनार नन्द मुणन्द गुरू परसादे सफल कियो अवतार हो काकं० ॥२९॥ इति श्रीधन्ना महामुनिराजरी सफाय ॥

॥ मानव भव लाधो राज लाधो ॥ ए देशी ॥

सतगुरु बोले राजबोले भवियां राश्रुत पट खोले सत० ॥ टेर ॥ राजदेश भोजन तिरियाकी विगथामे दिन खोले धरम करंतां आलस आवे निकमो ठाती ठोले सत० ॥ १ ॥ ऐडा मारे धव्या उडावे लोगठगे दिन धोले उंठा जी तव कारने हारे नरभव रतन अ मोले सत० ॥ २ ॥ परम धरमको मरम न जाणे फूले भरम हिंडोले कुगुरु कुदेव कुधर्म प्रभावे चतुर गतीमे मोले सत० ॥ ३ ॥ दान शील तप भाव रु मादिक संवल साथे जोले किसनलाल कहे धन्य नरा ते पुन्य खजाना खोले सत० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय वीरो लि० ॥

॥ देशी वीराकी ठे बाहुबलजी रे बाहुबलरुप सं जम धार हो वनमे कियो ध्यांन निश्चल रहीजी

आयो मनमें रे आयो मनमें इस्यो अहंकार हो लघु बंधव हूं बन्दूं नही जी ॥ १ ॥ प्रति बोधन प्रतिबोधन निज सुत ता महो भेजी ऋषभ सुता ब्रा हमी सुंदरीजी आवी भापे रे आवी भापे स होदरी आंमहो वीराइ मन मिले शिव सुन्दरीजी ॥ २ ॥ प्रतिबूझो रे प्रतिबूझो बंधव इण वार हो वीरा हवे तुमे गजथकी ऊतरोजी वीरा सरधो रे वीरा सरधो सिखांवण सार हो वीरा जिम जवे भव सिंधू तरोजी ॥ ३ ॥ वीरा मांनो रे वीरामांनो हमा री कैंण हो ऊभा सूको तो फोकट कितवे जी वेन भनारें वेनभना सुणियां वेण हो बाहूबल ऋष मन इम चिन्तवेजी ॥ ४ ॥ मे तो दीनी रे मे तो दीनी संसारनें पूठ हो हय गय रथ छोभी में ऋध छत्ती जी ये तो सतियां रे ये तो सतियां न बोले भूंट हो अभिमान न मूंक्यो में डुर मतीजी ॥ ५ ॥ धिग् मुजनें रे धिग मुजनें न मूक्यो गुमान हो विनय मू ल उथाप्यो धरमनेजी उज्जल ध्यांने रे उज्जल ध्याने लियो केवल ज्ञान हो चक चूर किया घाती करमनेजी ॥ ६ ॥ तीजो मम बीरो तीजो मम वी

---

१ 'जलदी.

कर सरवारथ सिधवास महा विदेहमे मुगते जासी वसु करम करनाश हो काकं० ॥ २७ ॥ उगणीसे ठी याली वरसे अहि पुर शहर मजार किसनलाल गुण गाविया स कोई सुंणज्यो सहु नरनार नन्द मुणन्द गुरू परसादे सफल कियो अवतार हो काकं० ॥२९॥ इति श्रीधन्ना महामुनिराजरी सझाय ॥

॥ मानव जव लाधो राज लाधो ॥ ए देशी ॥

सतगुरु बोले राजबोले जवियां राश्रुत पट खोले सत० ॥ टेर ॥ राजदेश जोजन तिरियाकी विगथामे दिन घोले धरम करंतां आलस आवे निकमो गती ठोले सत० ॥ १ ॥ ऐडा मारे धज्या उडावे लोगठगे दिन धोले ठंगा जी तव कारने हारे नरजव रतन अमोले सत० ॥ २ ॥ परम धरमको मरम न जाणे फूले जरम हिडोले कुगुरु कुदेव कुधर्म प्रजावे चतुर गतीमे रोले सत० ॥ ३ ॥ दान शील तप जाव रु दक संवल साथे जोले किसनलाल कहे धन्य ते पुन्य खजाना खोले सत० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय वीरो लि० ॥

॥ देशी वीराकी ठे वाहुवलजी रे वाहुवलरूप संजम धार हो वनमे कियो ध्यांन निश्चल रहीजी

आयो मनमें रे आयो मनमें इस्यो अहंकार हो लघु वंधव हू वन्दू नही जी ॥ १ ॥ प्रति वोधन प्रतिवोधन निज सुत ता महो नेजी ऋषन सुता ब्राह्मी सुंदरीजी आवी नापे रे आवी नाषे स होदरी आंमहो वीराइ मन मिले शिव सुन्दरीजी ॥ २ ॥ प्रतिवूजो रे प्रतिवूजो वंधव इण वार हो वीरा हवे तुमे गजथकी ऊतरोजी वीरा सरधो रे वीरा सरधो सिखांवण सार हो वीरा जिम जवे नव सिंधू तरोजी ॥ ३ ॥ वीरा मांनो रे वीरामांनो हमारी कैंण हो ऊना सूको तो फोकट किंतवे जी वेन मनारें वेनरूना सुणियां वेण हो वाहूवल ऋप मन इम चिन्तवेजी ॥ ४ ॥ मे तो दीनी रे मे तो दीनी संसारनें पूठ हो हय गय रथ गेमी में ऋध ठत्ती जी ये तो सतियां रे ये तो सतियां न वोले कूंट हो अनिमान न मूंक्यो में डुर मतीजी ॥ ५ ॥ धिग् मुजनें रे धिग मुजनें न मूक्यो गुमान हो विनय मूल उथाप्यो धरमनेजी उजल ध्यांने रे उजल ध्याने लियो केवल ज्ञान हो चक चूर किया घाती करमनेजी ॥ ६ ॥ तीजो मम वीरो तीजो मम वी

• 'जलदी.

रो अधिक वखाण हो मुनी मुगतें गयो करम तो
रुनेजी गुण गाता रे गुण गाता हुवे जनम प्रमाण
हो वन्दे किसनलाल कर जोरुनेजी ॥ ७ ॥ इति ॥

नही वोलाजी चित नहि राजी ए देशी ॥

जनक सुता क्यूं हर लायो रे कुमति थाने कांई
आई कांई आईजी समझावे भाई भ्रात्रीपण कुल
भूषण जाई इण वाते न भलपण कांई होसी दुनि
यामें चावि मूरखाई ॥ १ ॥ नही मानी जी शठ न
हि मानी आंकणी ॥ मास्यो दशरथ पड्यो फूंटो रे
अज्ञानी तोने कहूं केती कहुं केती रे मुख पडी रे
ती कपट कियो ते मोसूंधुरसेती अक्ल वता वे
अंरिमोने एती अवतो न ठोरु घर आई खेती नही०
॥ २ ॥ मन्दोदरि राणी समझावे हो पियाजी थाने
काई सुजी काई सुजी या मति क्युं मूझी विन कामे
क्युं हारो पुन्यपूंजी सीता सत्तवन्ती सम नही
दूजी वचन हमारा जाणो धूजी नही० ॥ ३ ॥ रघु
पति लसकर आयो हो पियाजी ह्मारी मांनो तो
सही मानो तो सहीजी टुक जानो तो सही अनी
ति करीने फतें किण न लही पीछे पिछतास्यो इण

हटने ग्रही फिर कहिस्यो के मोने किण न कही नही० ॥ ४ ॥ हंसकर रावण बोले हे पियारी हमारी सुण वाणी सुण वाणीये सही कर जाणी सीता पुनरपि देवा नहि आणी वेरीहण करस्युं पटराणी रायसिरी हुवो चावे धूल धाणी किसन कहे हट रह्यो ताणी नही० ॥ ५ ॥

॥ अजी दोय कागजियां लिख भेजो ए देशी ॥

जी अब मोय दीक्षा जलदी द्योजी जल दीक्षो मोने अवही द्यो हमारी लागी रे लगन तुमसेती गुरु ग्यानी जी होजी वर ध्यानी जी अब० ॥ १ ॥ जी तुम चरनामे म्हारो मन लागो म्हारो संसार सुखासुं दिल भागो गुरु० ॥ २ ॥ जी कर करुणा सुपर्णं[1] महाव्रत[2] दो मोने तारो भव सिंधू अगाधो गुरु० ॥ ३ ॥ जी अमृत वचन सुण निज श्रवणे हमारी संजम लेवाकी मति जागी गुरु० ॥ ४ ॥ जी कुटमकवीलो सब स्वारथियो में तो जाण्यो तुम कथने काचो गुरु० ॥ ५ ॥ जी तृतीय सुहृद[3] जिम सुखदाई एक सतगुरु सगपण सांचो गुरु० ॥ ६ ॥

---

१ सातमें. २ अहिंसा सत्य दत्त ब्रह्म अकिंचन. ३ तीजा मित्र साधू.

जी तुम सम कोहीय न उपगारी जव आपतिरोने परतारो गुरु० ॥ ७ ॥ जी त्यागी गुरु मिलिया पुन्न जोगे मोने जव जव सरन तुमारो गुरु० ॥ ८ ॥ जी द्वितीया शशी जिम वढमाणें मन लागो हमारो मुनि गुणठाणे गुरु० ॥ ए ॥ जी किसन कहे धन वयरागी वपुमल ज्युं सकल रुध त्यागी गुरु० ॥ १० ॥

॥हे सया मोरी नेमीसर वनडाने गिरनारी जाता राखलीजो हे ॥ ए देशी ॥

यो मन चक्र कुलालको रे सखा हे सुज्ञानी यो मन चंचल मन चोर वाहिर मत जाण दीजो रे वाहिर मत जाण दीजो रे हे सुज्ञानी थाने सत गुरु केवे समजाय मनाने पाठो घेर लीजो रे ॥ १ ॥ निसदिन भ्रामक डुष्ट मती रे सखा हे सुज्ञानी यो छिनछिनमें मन ओर कठिन वस राखवो रे सखा१ सु० ॥ २ ॥ राजमती प्रति वूझियो रे सखा हे सुज्ञानीयो रहनेमी अणगार कीधो मनमे रज्युं रे सखा१ हेसु० ॥ ३ ॥ मनसे युध मांड्यो करमसुं रे सखा हे सु० ॥ यो प्रसनचंद रुषराय केवल आशुं[1] पांमियो रे सखा हे सु० ॥ ४ ॥ संजूमच करी आठ मोरे स

---

१ 'जलदी.

खा हे सु० ॥ ब्रह्मदत्त वारमो जाण दोनू गया नार की रे सखा २ हेसु० ॥ ५ ॥ लघु तन तन्दुल मा छलो रे सखा हे सूरिजन नरक गयो निरधार मेली मन मोकलो रे सखा २ हे सु० ॥ ६ ॥ मन जीता स व जीतिये रे सखा हे सूरिजन मनके हारे छे हार किसन तन्तसार भाष्यो रे " हेसु० ॥ ७ ॥

वालपणकी प्रीत चतुर महासुं मिलताजी
जोजी ॥ ए देशी ॥

समुदविजेजीको लाडलो सेवा देजी माय जाद व कुलनो सेहरो नेम गयो छिटकाय ॥ १ ॥ कंथ विन कैसे जीवूं रे छोड गयो विन दोष नेम विन कैसे जीवू रे टेक ॥ पसुवनकी करुणा सुणी पति जा ण्यो परपंच अधविच अवला मूंकता दया न आणी रं च ॥ कं०॥ २ ॥ जान जलूस वणायके करि अनोखी वात अधपरणी घरणी तजी गयो गलन्ती रात कं० ॥ ३ ॥ हे सखी रछनेमीविना वरस समों दिन जाय नयण न आवे नीदमी रयण चोगुणी थाय कं० ॥४॥ मोह करम वस क्रूरणा राजुल किया अपार संजम ले प्रतिवोधियो रहनेमी अणगार कं० ॥ ५ ॥ केव

लले मुगते गया अविचल कीनो साथ किसन लाल
वंदना करे विधसूं जोडी हाथ कं० ॥ ६ ॥

मनवा नही विचारी रे थारी हमारी करता
ऊमर वीती सारी रे ॥ ए देशी ॥

धोरी श्रावक वाजे रे रात दिवस पर निंदा कर
ता नेक न लाजे रे निगुणा नेक नलाजे रे अघोरी ने
कनलाजे रे धोरी० ॥ १ ॥ निंदक वांधी गाती निंदा
करवा काजे रे शोक तणी परे छिद्र गवेषे मृग सर
खाजे रे धोरी० ॥ २ ॥ महा नीच चण्माल रजक
की उपम छाजे रे कण कूंडो तज सूकर[1] विष्टा खाव
ण जाजे रे धोरी० ॥ ३ ॥ दो जव विगडे पर निंदा
से जाष्यो श्रीजिनराजे रे नरक पडया पिछतासी हा
मुज आतम दाजे रे धोरी० ॥ ४ ॥ केवल ज्ञानी क
ह्यो सूत्रमें पीछमांस नही खाजे रे आतम घाती म
... डुवियह्ला[2]जे रे धोरी० ॥ ५ ॥ परनिंदा
... तम निंदे पुनवन्ताजे रे किसनलाल निज
... निन्दे हलुकरमांजे रे प्राणी लहुकर मांजे
...री० ॥ ६ ॥

---

१ जरूसूरो. २ डुवियह्ला इति नंदि सूत्रे.

॥ दोहा ॥

मुख मीठा धीठा हिये निंदक कपटी कूर ॥
तिण रे मुख दे किसनिया धोवा भर भर धूर ॥१॥

॥ कवित्त ॥

वरु विभचारी कुलकांन तजिभारी निज आतम विसारी अघ उंघके निकेतहै[1] फूटा सूंसधारे मिथ्या वचन उचारे न्यारे न्यारे पन्थ पारे शुध पन्थे पीठ देत है ॥ दंभी अभिमानी निंदा करत विरानी ऐसे उमर विहानी होत आये वार सेतहै ठाली ठकुराईमें वैरागकी वडाई करे माई माई करिके लुगाई करि लेत है ॥ १ ॥

॥ हांके सगीजीने पेडा भावे ए देशी ॥

हांके इसा गुरु देव हमारा भीम भवोदधि तारणहारा कनककांमणी छोड हुवा सब जगसे न्यारा रे इसा० टेर ॥ तत्वरुची हिरदामे जागी जाण असार सकल रुध त्यागी कुटम्ब छोड निकल्या वड भागी त्रिविधे त्रिविधे त्याग दिया जिण पाप अठारे इसा० ॥ १ ॥ भूमण्डल विचरे नव कल्पे वायु जिम प्रति बन्धन अलपे सावज भाषा मुखेन जल

१ पाप सेमूहक घर. २ सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रकी.

पे करम अष्ट क्षय करन परी सोजीते सारा रे इसा० ॥ २ ॥ दश विध जती धरमका धारी परिग्रह मम ता दूर निवारी नवविध वाड सहित ब्रह्मचारी न गिनी जनिता पुत्रि समान करी सब दारा रे इसा० ॥ ३ ॥ संजम सतरा भेद अराधे क्षण मातर परमा दन लाधे सदा मुगतिको मारग साधे घोर तपोधन खम सम दम गुण वृन्द अपारा रे इसा० ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत निरमल पाले पण इंद्रीकूं जीतणवाले च्या र कषाय किया पेमाले भावकरनयोग सत्य मनोव चतन समधारा रे इसा० ॥ ५ ॥ संपन ज्ञानदर शं चारित्रे क्षमावन्त वैराग्य पवित्रे कष्ट सहे मर णान्त विचित्रे वेद निआयां समी अयासे धन अ णगारा रे इसा० ॥ ६ ॥ धरम देव दिनकर जिम गा जे चतुर संघमें घन जिम गाजे दरसन दीठां सव भाजे किसनलाल कहे इसा मुनि मम प्राण रा रे इसा० ॥ ७ ॥

॥ किण विध राख्यो हे रुमाल ए देशी ॥

वाणी सुणी भगवन्तनी रे जाण्यो अथिर संसार घर आवी माता भणी रे बोले वचन विचार अनु

१अनुकूलप्रतिकूल.२मूर्छाकूं परिग्रहकहाधनादि द्रव्य परिग्रहहे.'

मति देदो मोरी माय हांजी मेंतो लेसूं संजम नार आज्ञा देदो मोरी माय ॥ १ ॥ वात अपूरव सांन ली रे उलठ्यो विरह अपार नीर करे नयणां थकी रे टुटोज्यू मुगता हार ॥ २ ॥ संजम मतले रे वना हांजी मेंतो वरजु वारंवार दीक्षा मतले रे वना आं कमी ॥ सगति पलायन जेह नीरे काल हुवे जस मिन्त जो जाणे मरसूं नही रे सो घर रहे न चिन्त अ० ॥ ३ ॥ शशि वदनी मृग लोचनी रे परणांउं वरनार जो वन वय ढलियां पछे रे लीजो महा व्रत धार हिवडां मत० ॥ ४ ॥ नगिनी वनिता जगतनी रे जनिता सांनल वाक काम नोगमें जाणिया रे जेहवा फल किंपाक अ० ॥ ५ ॥ वाय नरेवो कोथ लो रे चलवो खांका धार नुजसूं तिरवो जल निधी रं वेलु कवल असार सं० ॥ ६ ॥ नीम महाडुख नोगव्यारे जीव अनंतीवार लख चोरासी जोनमें रे परवशपणे अपार अ० ॥ ७ ॥ चंचल इंदस्याजी तणी रे वश करवो मन व्याल घर घर करणी गोच री रे दूषण सगला टाल ॥ सं० ॥ ८ ॥ हरगिज अवहू नारहू रे कीधां कोम उपाय अवहीयो पर वानगी रे खिण लाखीणी जाय अ० ॥ ९ ॥ उत्र

परुत्र हुवा घणा रे पुत्र न मानी वात जिम सुख होवे तिम करो रे इम वोल्या पितु मात ॥ संजम लेलो रें वना हांजी कांई पालजो रूढी रीत शिव सुख लीजो रे वनां ॥ १० ॥ संजम लीधो ज्ञावसूं रे पाल्यो विसवावीस किसनलाल कर जोरुने रे चरन नमावे शीस सं० ॥ ११ ॥

दोय नारंगी दोय अनार ए देशी ॥

समझ विचार करो कोइ काम जिम जगमे न हुवे वदनाम ॥ टेर ॥ आदर मान लहें पंचामे जस कीरत फैले सहु ठाम ॥ सम० ॥ १ ॥ भूप दशारण भद्र समझके इंद्र हटाय लिया पण जाम[3] ॥ सम० ॥ २ ॥ तज शौरी पुर निकल्या जादव पुन्य वध्या पाम्या आराम ॥ सम० ॥ ३ ॥ वर धन काम किया सुविचारी पुनरपि राज लियो अभिराम ॥ सम०॥४॥ स्वरग सुधरमें गयो चामिंदर पेखपवी भाग्यो भय ॥ सम० ॥ ५ ॥ पांडव पांचे नाव छिपाई देश काल दियो हरिताम ॥ सम० ॥ ६ ॥ रावण काम विन सोच्या सीता लाय गमाई माम ॥ सम० ७ ॥ घरमें हाण जगतमें हांसो पदमो तरलायो

१ ' भागणेकी. २ सर्प. ३ महाव्रत. ४ वज्र. ५ विष्णु.'

परवांम ॥ सम० ॥ ८ ॥ मात केकई वचन मांगियो जरत राज वनवासी राम ॥ सम० ॥ ए ॥ किसन लाल कहे धन्य नरा ते काम विचार करे अजिराम ॥ सम० ॥ १० ॥

पूज्य पधारियाये ए देशी ॥

आधाकरमी भोलरो ए नित पिंरु सामो आण रात्री जोजन कह्यो ए स्नान मंजन षट जाण ॥१॥ अनाचीरण कह्यो ए आंकरु ॥ सुगंध वस्तु माला फूलनी ए वीजणे ढोले नवाय वासी राखे नही ए ग्र हस्थीना जाजनमें न खाय ॥अ०॥२॥ राजपिंरु शत्रु कारनो ए दान न लेवे कोय ऊतारे नही मेलने ए दांतन पनरमो जोय ॥ अ० ॥ ३ ॥ ग्रहस्थीने साता न पूठवी ए आरीसे न जो वेगात रमे नही जुवटो ए अथवा निमंतनि वात ॥ अ० ॥ ४ ॥ सित्रंज प्रमुख नहि रमे ए ठत्र न धारे सीस करे नही वेदगी ए एम कह्यो जगदीस ॥ अ० ॥ ५ ॥ मोजादिक पहि रे नही ए अगनि आरंज नलेस सेफातर पिंडन ए पलंग प्रमुख न वेस ॥ अ० ॥ ६ ॥ ग्रहस्थीने घर वेठे नही ए ऊवटण न करे लिगार वैयावच ग्रहस्थी

---

१ 'रस्तेचलता शिरपे कपरा नरखे अपवाद मार्गे स्यात्.

नी ए जाति जणावि न ले अहार ॥ अ० ॥ ७ ॥ मि
श्रपाणी नहि नोगवे ए रोग ऊपजे आय सरणो न
लेवे न्यातनो ए मूला न आदो खाय ॥ अ० ॥ ८ ॥
सचित सेलडी न नोगवे ए कंदादिक खावे नरीजे
सोठोडीनो मूलने ए सचित्त फल वले वीज ॥अ०॥
ए॥ लवण एटली जातनो ए संचल सिंधो दोय आगर
नो तीसरो ए समुद्रनो चोथो जोय ॥ अ० ॥ १० ॥
खारी पांचरस ठसनो ए कालो निमक कह्यो आमे
धूप न देवे पट नणिये जाणने वमण अकाम ॥ अ०
॥ ११ ॥ केश न लेवे गल हेटना ए वल प्राक्रमने
हेत जुलाव लेवे नही ए अंजन न करे नेत ॥ अ०
॥ १२ ॥ दांतण न करे डुमनो ए सुखने कारण कोय
तेलादिक चोपडे ए विनूषाये वावन होय ॥ अ०
॥ १३ ॥ निग्रंथने कल्पे नही ए सर्व यह अनाचार
मोटा रुषी टालसी ए ते उतरे नवपार ॥ अ० ॥
॥ १४ ॥ दशवैकालिक सूत्रमें ए नाष्याये वावन वो
ल खुड्डियारका अधयनमें ए प्रवचन वोल अमोल ॥
अ० ॥१५॥ ए वावन वोलातणी ए नाषी ढाल रसाल
घट वधरी माफमें ए अरज करे कृष्णलाल ॥अ०॥१६॥

---

१ सचित.

॥पनो मारी जो डरो उदीया पुर मालेरे ए देशी॥

लखचोरासी जो नमेरे नमियो अनन्तो काल मिनष जनम डुलहो लह्योरे मेटोनी कर्मारा जाल ॥ ॥ १ ॥ चतुर नर सांनलो सत गुर इम वोले रे वच न कहे मुखसुं नला जाणे अमृत घोले रे आंकनी ॥ आठ मूल[1] गुण पालजोरे सातेही विसन निवार पांचोही इंदरी[2] वश करो रे मन चंचल थिर धार ॥ च० ॥ २ ॥ पर धन धूल सम गिणोरे समता मनमें आण जीवजिके संसार मेरे आपसरीखा जाण ॥ च० ॥ ३ ॥ जीव घणा कंद मूलमें रे जिणरी संख्या न काय रयणी नोजन जाणजोरे नोगव्या डुरगति जाय ॥ च० ॥ ४ ॥ पर नारी विगथा तजोरे जिण थी अपजस थाय निजनविता पिण परहरो रे जो थाने सुखरी चाय ॥ च० ॥ ५ ॥ खिण खिणमें आउषो घटेरे जिम अंजलीनो तोय[3] करणी आवे सोहि करलीजोरे थिर नहि जगमें कोय ॥ च० ॥ ६ ॥ तन धन जोवनकारिमोरे कारिमो सहु परिवार विणशत वार लागे नही जिम वीजलनो ऊवकार ॥

---

१ समिति गुपती २ गोचरी अगोचरी इमई चरपरी अचरपरी ३ जल.

च० ॥ ७ ॥ कोटि रतन कवडी सटेरे किम गमे मूढ गिंवार विषया सुखने कारणेरे मनुष जनम मतिहार ॥ च० ॥ ८ ॥ वालपणो खोयो खेलमें रे जोवन पिण घरवास वृद्ध हुवा शगती घटी रे जनम गमायो निरास ॥ च०॥ ए॥ म्हारो म्हारो कर रह्यो रे मोह माया ने हेत कालासूं धवला पड्या रे चेत सकेतो चेत ॥ च० ॥ १० ॥ कर कारज कुसी जीवनो रे जिम जोगी सर जोग ज्ञान कमल वनमें गयारे ढांकि विषे रस जोग ॥ च० ॥ ११ ॥ समकित सुध पोषा करो रे मिथ्या मोह निवार जिम सुख पावो सासतारे किसन कहे ततसार ॥ च० ॥ १२॥

॥ जविका सिद्धचक्रजीने पूजो ॥ ए देशी ॥

जविका गोयम गणधरवंदो जिम चिरकाल आनंदो रे जवि० ॥ गोय० ॥ टेर ॥ पृथवी माता जग विख्याता द्विज वसूजूतीरानंदो ॥ गोवर गाम नाम इंद्रजूती गोयम गोत अमंदो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ प्रथम संघयण संगण मनोहर गौर वरण सुखकंदो कनक द्युति वपु सुनिकर[1] पुंगव पेखत मोद लहंदो रे

१ ‘शरीर ७ हात उत्तम.

॥ भ० ॥ २ ॥ वरस पचास रह्या ग्रहेवासे ॥ भेख्यासु चरम जिणंदो जनक सीधारथ त्रिसला नंदन पूजित चौसठ इंदोरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ तीस वरस छद्मस्त रह्या वहु पुग करी तजदंदो लवधि अनेक सु तपकर पाम्या खम सम दम गुण वृंदोरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ सकल मुनिसरमांहिं शिरोमणि उडुगणमें[1] जिम चंदो काल अनादि मिथ्यात रूपियो मेटणतिमिरदि[2]णंदो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ आगम अरथमें लीन रह्या नित मधुकर जिम मकरंदो वरस डुवादस केवल ग्यानी विचर्या जेम गयंदो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ मास संथारे मुकतिसिधाया दूर किया भव फंदो तस पद पंकज वेकर जोडी वंदत नंदको नंदोरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ राग परभाति भैरू ॥ जे जिणंद जे जिणंद जे जिणंद देवा ॥ १ ॥ टेर ॥ विमल चरन विघन हरन गुण समुद्र जेवा ॥ ज० ॥ १ ॥ जघन कोटि अमर पास इंद्र करत सेवा तिन लोक माहि अपर देव नहि एवा ॥ जे० ॥ २ ॥ मात तात भ्रात तूही महरके करेवा वीतराग देव तूही कष्टके हरेवा ॥

---

१ ताराका समूहमें. २ भाव अंधारो.

निवृत्त कोसंभिनयरी भली नंदीपुर सांभिल देस आछो ॥ सा० ॥ ४ ॥ मलय उपवरतने भद्दिलपुर कह्यो मछ वैराट हें नगरनीको वरण अछापुरि नयरी मृतिकावती दसारण देशमें तेजतीखो ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ नगरी सोक्ति मती वैदिक देशमे वीतभय सिंधू जिनपदे वखाणो ॥ देस सौविर मथुरापुरी मानिये सुर पापापुरी भव्य जाणो ॥ सा० ॥ ॥६ ॥ मासपुरी भंगसावछि कुंभालय लाटकोटी वर्पे नगर चारु ॥ केकई देश इह अर्ध आरज कह्यो नयरी सेत्तंविका नाम वारु ॥ सा० ॥ ७ ॥ भविक भणवा भणी सहेर अजमेरमें अब्द उगणीस पच्चाससाले ॥ प्रथम आषाढ वदि चंद्र तेरस दीने ढाल सुंदर करी कृष्ण लाले ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अब घर आवो आवो २ जी महारी छोटी नणदलका वीरके अब घर आवो ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धारथ सुत साहिवोरे देवा त्रिसला देजीनो पूत ॥ वदन कनक मन मोहनोरे देवा रूप अती अदभूतकें ॥१॥ अब मोय तारो तारो तारोजी

१ 'देश. २ 'देश.' ३ देश.

प्रभु चोवीस हाजी प्रभु चोवीसमा जिनराजके ॥ श्रा
व मोयतारो ॥ श्रांकमी ॥ वरसी दान देई करीरे दे
वा संजमलीयो जगत्याग ॥ च्यार करम चकचूरनेरे
देवा केवल लीयो घर रागके ॥ श्र० ॥ २ ॥ श्रजर
श्रमर पदवी लहीरे देवा साख्या श्रातमकाज ॥ तुम
दरसन पाया विनारे देवा रुलीयोमें चवदेही राजके
॥ श्र० ॥ ३ ॥ हवे नर नव लह्यो पून्यथीरे देवा
वली लह्यो तुम चो धर्म ॥ तत्तवनी रुची थइ मुज्जेरे
देवा हवे मिट्यो मनतणो नर्मके ॥ श्र० ॥ ४ ॥ नव
डुख नंजन तु सहिरे देवा तो सम श्रवर न कोय ॥
ज्ञानदृष्टिवर पेखनेरे देवा सहु जग लीनो जोयके
श्र० ॥ ५ ॥ घर श्रंगण सुरतरु फल्योरे देवा कवण
कनक फल खाय ॥ गज श्रसवारी गेमनेरे देवा
खर किम श्रावे दायके ॥ श्र० ॥ ६ ॥ नव नव एक
जिनराजनोरे देवा सरणो होजो सुखकार ॥ कुगुरु
कुदेव कुधर्मनोरे देवा में कीयो हवे परीहारके ॥
श्र० ॥ ७ ॥ चोरासी लखजोनी मेरेदेवा नमीयो
श्रनंतीवार ॥ श्रवतो सरण ग्रह्यो ताहिरोरे देवा क
वहु न गेरु लारके ॥ श्र० ॥ ८ ॥ सन उगणीसे च
मोलीसेरे देवा शुकलपक्षे मधुमास ॥ कीसन कहे कर

जोमनेरे देवा पूरजो मोरी आसके ॥ अ० ॥ ए ॥ इति

॥ धरम दलाली चितकरे ॥ ए देशी ॥

उज्जयणी नगरी विषे चंडरुद्र अणगारोजी ॥ साधु संगाति परवस्यापिण जे क्रोधी अपारोजी ॥ ॥ १ ॥ जो वोरे सिष्य सुलक्षणो ॥ ए आंकडी ॥ सांधांसुं अलगा रहे तेहने कोइय न ठेडेजी ॥ जो कोइ डुहवे जायने दंड लेइ थाय केडेजी ॥ जो०॥२॥ तिण विरियां धन्ना सेठनो पुत्र वधु नवी परणीजी ॥ सासरे आयो अन्यदा लेवा ते निज घरणीजी ॥ जो० ॥ ३ ॥ क्रीडा नीमित गया वागमें शाला मित्र संघातेजी ॥ मुनी देखी पाय वंदीया स्तवनां कीध विख्यातोजी ॥ जो० ॥ ४ ॥ शाले तद हांशी करी स्वामी सुणो मुज वातोजी ॥ इणने दीक्षा दीजीये ढीलम करो तिल मातोजी ॥ जो० ॥ ५ ॥ मिष्ट वचन मुनि वोलीयामम गुरु पासे जावोजी ॥ तिहां पिण जाय हांसी करी प्रभु इणने दीक्षा दीरावोजी ॥ जो० ॥ ६ ॥ तदनंतर गुरु इम कहे गार नही मुज पासेजी ॥ कोइयक मित्री जायने लायो राख हुलासोजी ॥ जो० ॥ ७ ॥ जोरे मस्तक झालीयो लोच्या शिरनां केसोजी ॥ पंच महाव्रत उच्चस्या दीनो

साधुजी रोस्नेषोजी ॥ जो० ॥ ८ ॥ शालादिक भय पामियां कंपण लागी देहोजी ॥ तत खिण भागा दह दिशे पहुंता निज निज गेहोजी ॥ जो० ॥ ॥ ए ॥ नव दीक्षित मन चिंतवे हांसीमें थइ ये वि गासीजी ॥ अवतो संजम पालस्युं कुंण भुगते चौ रासीजी ॥ जो० ॥ १० ॥ इम चिंतव गुरुने कहे हवे कोई वीजे गंमोजी ॥ जाय रहोतो बे भलो नहीतर जासे मामोजी ॥ जो० ॥ ११ ॥ कोप धरी गुरु वोलीया रे पापी दुराचारी जी ॥ चालणी मोंसुं आवे नहीं हिवडां रात अंधारी जी ॥ जो० ॥ १२ ॥ समजावी गुरुने तदा सकल कुटं वसुं विहितोजी ॥ स्कंध चढावीले चल्यो शिष्यवडो सुवनीतोजी ॥ जो० ॥ १३ ॥ विखम पंथ चलतां थकां उपनो खेद महंतोजी ॥ तिण विरिया चंड रुद्रने जाग्यो क्रोध अत्यंतोजी ॥ जो० ॥१४॥ रीस वसे शिर ऊपरे कीधो दंड प्रहारोजी ॥ एहवे शि ष्य विस्यां करी इम चिंतवे तिणवारोजी ॥ जो० ॥ ॥ १५ ॥ में पापी मंद वुद्धीये इण मुनीने दुख दी धोजी ॥ इम सुध भावनां भावतां सुंदर केवल ली धोजी ॥ जो० ॥ १६ ॥ ज्ञानतणा पर भावसुं गज

जोरूनेरे देवा पूरजो मोरी आसके ॥ अ० ॥ ए ॥ इति

॥ धरम दलाली चितकरे ॥ ए देशी ॥

उज्जयणी नगरी विषे चंडरुद्र अणगारोजी ॥ साधु संगाति परवस्या पिण जे क्रोधी अपारोजी ॥ ॥ १ ॥ जो वोरे सिष्य सुलक्षणो ॥ ए आंकडी ॥ सांधांसुं अलगा रहे तेहने कोइय न ठेडेजी ॥ जो कोइ डुहवे जायने दंरू लेइ थाय केडेजी ॥ जो०॥२॥ तिण विरियां धन्ना सेठनो पुत्र वधु नवी परणीजी ॥ सासरे आयो अन्यदा लेवा ते निज घरणीजी ॥ जो० ॥ ३ ॥ क्रीरूा नीमित गया वागमें शाला मित्र संघातेजी ॥ मुनी देखी पाय वंदीया स्तवनां कीध विख्यातोजी ॥ जो० ॥ ४ ॥ शाले तद हांशी करी स्वामी सुणो मुज वातोजी ॥ इणने दीक्षा दीजीये ढीलम करो तिल मातोजी ॥ जो० ॥ ५ ॥ मिष्ट वचन मुनि वोलीयामम गुरु पासे जावोजी ॥ तिहां पिण जाय हांसी करी प्रभु इणने दीक्षा दीरावोजी ॥ जो० ॥ ६ ॥ तदनंतर गुरु इम कहें गार नही मुज पासेजी ॥ कोइयक मित्री जायने लायो राख हुलासोजी ॥ जो० ॥ ७ ॥ जोरे मस्तक झालीयो लोच्या केसोजी ॥ पंच महाव्रत उच्चस्या दीनो

साधुजी रोजेषोजी ॥ जो० ॥ ८ ॥ शालादिक भय पामियां कंपण लागी देहोजी ॥ तत खिण भागा दह दिशे पहुंता निज निज गेहोजी ॥ जो० ॥ ॥ ए ॥ नव दीक्षित मन चिंतवे हांसीमें थइ ये वि गासीजी ॥ अवतो संजम पालस्युं कुंण भुगते चौ रासीजी ॥ जो० ॥ १० ॥ इम चिंतव गुरुने कहे हवे कोई वीजे ठांमोजी ॥ जाय रहोतो बे भलो नहीतर जासे मामोजी ॥ जो० ॥ ११ ॥ कोप धरी गुरु वोलीया रे पापी डुराचारी जी ॥ चालणी मोंसुं आवे नहीं हिवडां रात अंधारी जी ॥ जो० ॥ १२ ॥ समझावी गुरुने तदा सकल कुटं वसुं विहितोजी ॥ स्कंध चढावीले चल्यो शिष्यवडो सुवनीतोजी ॥ जो० ॥ १३ ॥ विखम पंथ चलतां थकां उपनो खेद महंतोजी ॥ तिण विरिया चंड रुद्रने जाग्यो क्रोध अत्यंतोजी ॥ जो० ॥१४॥ रीस वसे शिर ऊपरे कीधो दंरू प्रहारोजी ॥ एहवे शि ष्य विस्यां करी इम चिंतवे तिणवारोजी ॥ जो० ॥ ॥ १५ ॥ में पापी मंद वुद्धीये इण मुनीने डुख दी धोजी ॥ इम सुध भावनां भावतां सुंदर केवल ली धोजी ॥ जो० ॥ १६ ॥ ज्ञानतणा पर भावसुं गज

गति चालण लागोजी ॥ गुरु वोल्या मार सारठे मारे जूत जाय जागोजी ॥ जो० ॥ १७ ॥ शुभगति जाणी गुरु कहे सुं तुज मारग दीसेजी ॥ कर जोडी शिष विनवे हां प्रभु विशवा वीसेजी ॥ जो० ॥१८॥ केवली जाणी स्कंधसुं उतरी शिष्य खमायोजी ॥ निज आतमने निंदतां गुरुपिण केवल पायोजी ॥ ॥ जो० ॥ केवलि परजा पालने पहुंता सुकति मजा रोजी ॥ एहवा शिष्य वनीतजे आप तेरे परतारोजी ॥ जो० ॥ २० ॥ उतराध्ययन कथा थकी ढाल करी मनरंगेजी ॥ नंद सुणेन्द्र प्रसादसुं किसन कहे स्वर चंगेजी ॥ जो० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ हांरे वांमणका माणल्यो साणल्यो
कांइ करो ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे जीवरूला हलुकरमी भवि जीवनेरे हांरे जीवडला सत गुरु देवे उपदेश ज्ञानी भाष्यो रे तन धन जोवन कारिमोरे हां० लख चौराशी जोन मेरे हां० नट क्यो करि नवंवेस ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ हांरे० सात धातनो पूतलो रे हांरे० रुज व्याधीको धाम ॥ ज्ञा० हांरे० भाजन दुःखरुकलेसनोरे हांरे० सकल

१ ९ 'थावर ४ त्रस

अशूचीनो ठाम ॥ ज्ञानी० ॥ २ ॥ हांरे० चाप हंरी करि कां न ज्युंरे हांरे० चपला ज्योत समान ज्ञा० हांरे० पीपल पान संध्यावां न ज्युं रे हांरे० अरथ अथिर सब जान ज्ञा० ॥ ३ ॥ हांरे० राज अंणी जल विंदुवोरे हांरे० क्षिति जिम वादल ठाय ज्ञा० ॥ हांरे० चंचल सलिलावेग ज्युं रे हांरे० जोवन च लियो जाय ज्ञा० ॥ ४ ॥ हांरे० वनिता विषनी वेल डीरे हांरे० मतिकर इणरो संग ज्ञा० ॥ हांरे० फल किपा करी उपमारे हांरे० जोग विलास जुजंग ज्ञा० ॥ ५ ॥ हांरे० प्रथम शरीरी दूजो मानसीरे हांरे० डुखनो घर संसार ज्ञा० ॥ हांरे० तज ममता समता धरीरे हांरे० आतम कारज सार ज्ञा० ॥६॥ हांरे० मात पिता सुत जार ज्यारे हांरे० विरथा इणरो सनेह ज्ञा० ॥ हांरे० दान सीयल तप जावना रे हांरे० पर जव संवल एह ज्ञा० ॥ ७ ॥ हांरे० देव सुजग अरिहन्तजी रे हांरे० गुरु गिरवा निगरंथ ज्ञा० ॥ हांरे० धरम दया सोहि जाणियेरे हांरे० किसन मुगतरो पंथ ज्ञा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ चंड्रायणा ॥ इंड्रजूति अग्गि जूइवाय जूई

---

१ 'इन्द्र धनुष'.

तीसरा चरन कमल कर जोम नमूं जगदीसरा ॥ विगत सुधरमा स्वामि मंडित मोरी पूतजी अकम प्रीत अन्त ज्ञान लियो अदभूतजी ॥ १ ॥ अचल भया मेतार सिरीपर भासजी जो ध्यावे नरनार पूरे त्यारी आशजी ॥ तारक विरद विचार सेवकने तार जो पुरुषोत्तम महाराज अरज म्हारी धारजो ॥२॥ में हू नाथ अनाथ कृपा तुम कीजिये सेवक जाणी मोय अक्षय पद दीजिये ॥ ग्यारापर विसराम फेर दश कीजिये तुक तुकमें इगवीस मतागिण लीजिये चरण धरो इम चार जिणंद गुण गायणा लाल कहे इम छंद हुवे चंदरायणा ॥ २ ॥ इति ॥

॥ तावडा धीमो पडजारे गोरीको नाजक जीव वादली गहरी छाजाए ॥ ए देशी ॥

॥ सीख सतगुरकी उर धारो रे २ दुर्लभ पायो मनुषज मारो एलो मति हारो, टेर ॥ तन धन जो बन चंचल है जिम विद्युत झबकारो समझर विद्यु त झबकारो कुंजर कान पान पीपल जिम जीत वहे थारो सी० ॥ १ ॥ त्रस थावर सब जीव जगतको काल तणो चारो २ पुदगल रचनां थिर नहि इनको मतिकर अहंकारो सी० ॥ २ ॥ इंद्रजाल घन मा

सुपन सम हेसव संसारो २ सुख माने जिम स्वान रजकरो हे दुखमी आरो सी० ॥ ३ ॥ ठाट देख म त फूल सयाणां मान कह्यो मह्रारो २ पानीवीच प तासा गलतां नहिं लागे वारो सी० ॥ ४ ॥ कोइ उपाय कियां यो अवसर नहि वारंवारो २ गाफल मत रहो लेलो खरची परनवकी लारो सी० ॥ ५ ॥ मात पिता तिरिया सुत बांधव मतलवके यारो २ मतलवकी मन वार जगतमें विन मतलव खारो सी०॥६॥ अलप सुखांरे काज गमन कर परधन परनारो २ पाप करम कर पड्या नरकमें सहैजमकी मारो सी० ॥ ७ ॥ हिंसा धरम नरक दुखदाता विष मिश्रित अहारो २ इम जाणीने उत्तम प्राणी पाप पंथ टारो सी० ॥ ८ ॥ परम धरमको मरम पिछांणो नर म मूलकारो २ सुध आचारी सदगुरु सेवो जिम हुवे निसतारो सी० ॥ ९ ॥ दश दृष्टांते दुरलन जगमें मानव अवतारो २ जप तप संजम शील दानकरि निज आतम तारो सी० ॥ १० ॥ क्रोध मान मद लोन कपट तजि कर पर उपगारो २ वैरनाव विणसे मति राखो इम कहे अणगारो सी० ॥ ११ ।

१ 'धोवीको कुत्तों सतावो

व्योमवाण निधि इन्दु जाद्रवदि वारस गुरुवारो १ किसनलाल अजमेर सहरमें जोरु करी सारो सी० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ रथ चढ रघुनन्दन आवत है मिल चलो सखी छवि देखनकों ॥ ए देशी ॥

॥ वर आवोजी हमारे नेम पिया २ कहे राज मती उग्रसेन धिया घर० ॥ टेर ॥ आठ जवांकी प्रीत पुरवली नवमें जव किम छेह दिया ॥ घ० ॥१॥ कलन परत पलकंकिं जिम जलविन तुम विरहा नल जर तहिया ॥ घ० ॥ २ ॥ असन वसन विले पन न सुहावत सवसिनगार अलग धरिया ॥ घ० ॥ ३ ॥ नयन जुगल जल टपटप वरसत तरसत है दिन रात जिया ॥ घ० ॥ ४ ॥ विविध विलाप किया मोहके वस परम धरम दिलमें वसिया ॥ घ० ॥ ॥ ५ ॥ घणी सखियां संग संजम लीधो सयमेव शिरका लोंचकिया ॥ घ० ॥ ६ ॥ अविचल प्रेम कियो धन राजुल किसन चरनका शरन लिया ॥घ०७॥

॥ राग वसन्त होरी ॥

॥ सत गुरुके वचन उरधारो विसन तुम दूर

---

१ 'मांछली'.

निवारो ज्ञानी गुरुके० ॥ टेर ॥ पांडव पांच जुंवार महाख्या राजसिरी निजनारो नलराजापिण वहु दुख पायो बुध जन हिरदे विचारो कीजे जुवटो परिहारो ॥ स० ॥ १ ॥ दूजो मास भखण पर हरिये करुणा नरहत लिगारो महा सतकजीनी नारी रेवती नरक गई निरधारो पायो तिण दुःख अपारो ॥ स० ॥ २ ॥ मदिरा पान विसनये तीजो खलक वधाव णहारो दीपायण ऋषि दुहव्यो जादवे द्वारिकानो कियो ठारो हाख्यो तपनो फल सारो ॥ स० ॥ ३ ॥ चोथो विसन वेश्या घर राख्या लाजगमे होय ख्वारो कयवन्ना जिम सवधन खोवे फिटफिट कहे जग सारो आगे पिण नरक तयारो ॥ स० ॥ ४ ॥

॥ दोहरा ॥

गनिकाधरं सुन्दर तदपिको चुम्बति कुलवान ॥ चोरस्रोम चर नट रुविट थूक न भाजन जान ॥ १ ॥ गनिका कामानल सुफल इन्धन रूप अपार ॥ जोवन धन हो मत तहां कामीजन करि प्यार ॥ २ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ पाप अहेडे पांचमें पापी प्राणि हणे परिहारो मृगली मार नृपश्रेणक पहुंतो पहेली

१ होट

व्योमवाण निधि इन्दु नाद्रवदि वारस गुरुवारो २ किसनलाल अजमेर सहरमें जोरु करी सारो सी० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ रथ चढ रघुनन्दन आवत है मिल चलो सखी छवि देखनकों ॥ ए देशी ॥

॥ वर आवोजी हमारे नेम पिया २ कहे राज मती उग्रसेन धिया घर० ॥ टेर ॥ आठ नवांकी प्रीत पुरवली नवमें नव किम छेह दिया ॥ घ० ॥१॥ कलन परत पलकर्कि जिम जलविन तुम विरहा नल जर तहिया ॥ घ० ॥ २ ॥ असन वसन विले पन न सुहावत सवसिनगार अलग धरिया ॥ घ० ॥ ३ ॥ नयन जुगल जल टपटप वरसत तरसत है दिन रात जिया ॥ घ० ॥ ४ ॥ विविध विलाप किया मोहके वस परम धरम दिलमें वसिया ॥ घ० ॥ ॥ ५ ॥ घणी सखियां संग संजम लीधो सयमेव शिरका लोंचकिया ॥ घ० ॥ ६ ॥ अविचल प्रेम कियो धन राजुल किसन चरनका शरन लिया ॥घ०७॥

॥ राग वसन्त होरी ॥

॥ सत गुरुके वचन उरधारो विसन तुम दूर

१ 'मांहली'.

निवारो ज्ञानी गुरुके० ॥ टेर ॥ पांम्ब पांच जुंवार महास्या राजसिरी निजनारो नलराजापिण वहु दुख पायो वुध जन हिरदे विचारो कीजे जुवटो परिहारो ॥ स० ॥ १ ॥ दूजो मास नखण पर हरिये करुणा नरहत लिगारो महा सतकजीनी नारी रेवती नरक गई निरधारो पायो तिण दुःख अपारो ॥ स० ॥ २ ॥ मदिरा पान विसनये तीजो खलक वधाव णहारो दीपायण ऋषि दुहव्यो जादवे द्वारिकानो कियो ठारो हास्यो तपनो फल सारो ॥ स० ॥ ३ ॥ चोथो विसन वेश्या घर राख्या लाजगमे होय ख्वारो कयवन्ना जिम सवधन खोवे फिटफिट कहे जग सारो आगे पिण नरक तयारो ॥ स० ॥ ४ ॥

॥ दोहरा ॥

गनिकाधरं सुन्दर तदपिको चुम्बति कुलवान ॥ चोरकोम चर नट रुविट थूक न भाजन जान ॥ १ ॥ गनिका कामानल सुजल इन्धन रूप अपार ॥ जोवन धन हो मत तहां कामीजन करि प्यार ॥ २ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ पाप अहेडे पांचमें पापी प्राणि हणे परिहारो मृगली मार नृपश्रेणक पहुंतो पहेली

---

१ 'होट

नरक मझारो आगममें है अधिकारो ॥ स॰ ॥ ५ ॥ चोरी विसन छटो डुखदाई जीव सहे वहु मारो विजय चोर जिम वन्धन पावे जीव काया करे न्यारो जावे मर नर्क डुवारो ॥ स॰ ॥ ६ ॥ राघव राणी ले गयो रावण लीधो सीस उतारो पंचाली पद्मोतर लायो लाज गमाई गिंवारो कपिल दियो देश निकारो ॥ स॰ ॥ ७ ॥ इण विध सात विसन सुण गुरु मुख त्याग करो नर नारो दान शील तप जाव अराधो शिवपुर मारग चारो रुचे सोही कर अंगीकारो ॥ स॰ ॥ ८ ॥ अतीचार रहित सुधपालो श्रावकना व्रतवारो किसन मुनी कहे विसन निवारो जो चाहो निसतारो जपो नित श्रीनवकारो ॥स॰ए॥

॥ फिरमिलजो महारा दीनानाथ ॥ ए देशी॥ .

॥ विगर विचार्यां वोले वोल ते नर जाणो फूटा ढोल ॥ टेर ॥ जली वुरीका जेद न जाने फेंके जिम अनगढिया टोल ॥ ते॰ ॥ १ ॥ वाय जरी जिस चरम दीवडी वाहिर फूली जींतर पोल ॥ ते॰ ॥ ॥ २ ॥ केइ नरके रस ऊरे जीजको जेसपूतमर वदे निठोल ॥ ते॰ ॥ ३ ॥ विनवत लाया जरी सजामें

---

१ 'जोपदी

मूढवके जिम स्वान शिरोल ॥ ते० ॥ ४ ॥ किसन लाल कहे सहु जन नाषे सरस गिरानर नवको मोल ॥ ते० ॥ ५ ॥

॥ देशी ते० ॥ गिण गिण मुखसे वोले वोल ते नर जाणो रतन अमोल ॥ टेर ॥ सावजकारी विगर विचारी न करे किणकी रोल कितोल ॥ ते० ॥ ॥ १ ॥ उत्तम वोले सन्ना सुहावत दिन दिन वाधे अधिको तोल ॥ ते० ॥ २ ॥ सत विवहार वदे मृडु नाषा सुणत पियो मानू अमृत घोल ॥ ते० ॥ ३ ॥ वचन रतन मुख सदन अधरपट विनगाहक मिलियां मत खोल ॥ ते० ॥ ४ ॥ अपन्नासी अति आदर पांमें दह दिश पसरे कीरत उल ॥ ते० ॥ ५ ॥ कम वोलाने अमर उपमा किसन कहे इनमें नहि नोल ॥ ते० ॥ ६ ॥

॥ मोटी जगमें मोहणी ॥ ए देशी ॥

॥ सिरि जिनवर प्रणमे करी गुरु गरिमा होतसु नामी सीस सामायक सखरीतणा अनुकरमें हो कहूं दोष वतीस ॥ १ ॥ शुद्ध सामायक कीजिये ॥ टेर॥ धर नाको दश मन नणा मनि मंना हो मन धरीये

वैराग दोय करण तीन जोगसूं इग महुरतहो साव जरात्याग ॥ शु० ॥ २ ॥ प्रथम अकाले जो करे ज स वंछे हो दूजे नरनार पूजा हिते दोष तीसरो लोज्ञ चोथे हो करिये परिहार ॥ शु० ॥ ३ ॥ गर्व वसे करे पांचमे ज्ञय आणे हो छटे मन माय करत निहाणो सातमे फल संशय हो वसु दोषण थाय ॥ शु० ॥ ४ ॥ विनय रहित नवमें करे ज्ञगती तजहो दशमें कर याद वचनतणा दश हिवे सुणो चित क रने हो छोमि परमाद ॥ शु० ॥ ५ ॥ चपलपणे बो ले घणो द्वादशमे हो अति क्रोध सहीत मण मणाट करे तेरमे चौदशमें हो लवे विनय रहीत ॥ शु० ॥ ॥ ६ ॥ काम राग करे पनरमे षोमशमे हो करे कल ह अपार वाद करे वलि सतरमें तिम विगथा हो थया दोष अढार ॥ शु० ॥ ७ ॥ हांसी करे उगणी समें हिवे वीसमें हो बुटाने कोय आव जाव इम कहे घणो कायानां हो दूषण दश दोय ॥ शु० ॥ ७ ॥ पालखी मारन वेसिये अथिरासन हो वरजो गुण धाम दृष्टि चपल पिण परिहरो चौवीसमें हो तज सावज काम ॥ शु० ॥ ए ॥ ओठो लेवे पण वीसमें षट वीसमें हो संकोचे अङ्ग आलस मोडे अति ध

आपे ए पिण पातक मोटोरे दवग दावणिया करम तेरमो परतख दीसे खोटोरे ॥ म० ॥ १३ ॥ सरवर कूप तलाव प्रमुखनां पाणी कढावी सींचेरे करमादान चतुर दशमो ये ताण ले जावे नींचेरे ॥ म०॥१४॥ श्वान मंजारी कुरकट पोषे अथवा कुसती वामारे ये तिथि करमादान निवारे ते श्रावक अभिरा मारे ॥ म० १५ ॥ संवत मुँनिर्युंग अंक हिमांशूं जोधाणेवर सालोरे नंदराम मुनि गुरुपरसादे किसनलाल जोडी ढालोरे ॥ म० १६ ॥

कांई रे जुवांव करूं रसियो ए देशी ॥

नर भवरतन चिंतामणि लाधो दानसीयल तप भाव अराधो नर० टेर ॥ वारवार नहि मनुष जमारो तो धारम ध्यानकर जनम सुधारो ॥ नर० ॥ १ ॥ यो अवसर मत चूक संयाना तो सत गुरु कहें कांई होय अयांना ॥ नर० ॥ २ ॥ तूं जीव किणरोने कुण जीव थारो तो स्वारथियो सब जाण संसारो ॥ नर० ॥ ३ ॥ पुंन्य संजोग मिल्यो सव टांणो तो देव गुरु शुध धरम पिछांणो ॥ नर० ॥ ४ ॥ भित्त पूरन हुवां परभव जांना तो खरची विना किम सरसी दिवांना ॥ नर० ॥ ५ ॥ भोग वि

वेरे नाम्हि करम चोथो आचरतां पापे पिए नरा वेरे ॥ म० ॥ ४ ॥ खेती करावे पत्थर फुडावे अथ वा खुदावे खानोरे पृथवी काय खिऐ ते सगलो पां चमो करमादानोरे ॥ म० ॥ ५ ॥ कस्तूरी कवडा गजदन्ता वेचे लोननो वायोरे त्रस जीवांनो अव यव सगलो दन्त वणिजमें आयोरे ॥ म० ॥ ६ ॥ मणशिल लाख गुलि हरतालये मेंण इत्यादिक वेचे रे सातमो ये लखविण जनकीजे आरंननो घरये ठेरे ॥ म० ॥ ७ ॥ डूध धई गुल तेल घी वेचे ते श्रावक नहि सागेरे आठमो ए रस विण जन कीजे पाप घणे रो लागेरे ॥ म० ॥ ८ ॥ द्विपद चौपद मोल दे वेचे लान्न घणेरो जाणीरे केशवणिज नवमो परि हरिये सांनल सतगुरु वाणीरे ॥ म० ॥ ए ॥ सोमल अम ल प्रमुख विषविणजे ये दशमो सुं विशालेरे श्रमणो पासक व्रतधारी ते पांच ये कुवणिज टालेरे ॥ म० ॥ १० ॥ घरटी उंखल करावी मूंके तेलीने तिल आ पेरे एकादशमो जन्त पिलणियां करम इसीपरे व्या पेरे ॥ म० ॥ ११ ॥ कांन फडावे नाक विधावे कठि यावलद करावेरे वारमो करमा दान निलंछण श्राव कने नहि चावेरे ॥ म० ॥१२ ॥ दावानल अटवीमें

भिमानी संभूमचक्री जलमे रुवकांनारे ॥ मत० ॥४॥ झूंट कपट करके धन जोडे रात दिवसघर धंधे दोडे मदछकियो तिसना नहि छोडे मतकर ममता आप मख्या सब माल विरानांरे ॥ मत० ॥ ५ ॥ अथिर जगत जिम वादल छाया इन्द्रजाल सुपनेकी माया सोजं देखगरवे मति भाया ताकर ह्या शिरजीव चिरूा परकाल सिंचानारे ॥ मत० ॥ ६ ॥ मातपिता तिरिया सुत जाती सब स्वारथ के मिले संगाती परभव जातां कोइय न साती दान सियल तप भा वके लेलो साथ खजांनारे ॥ मत० ॥ ७ ॥ क्रोध मान मद लोभ न राखे मरम वचन किसको नहि भाषे प्रेम सहित अनुभव रस चाखे धन्य नरा ते किसनलाल निजतत्व पिछांनारे ॥ मत० ॥ ८ ॥

॥ रोकड ह्योरां लेलो चार ए देशी ॥

॥ धन धन मुनिवर गज सुख माल जनमम रन डुख दीना टाल धन० टेर ॥ वालक वयमे संजम लीधो सब जग जांएयो इंदरजाल ॥ ध० ॥ १ ॥ आज्ञा लेसिरी नेमनाथरी मुगतमेल मन कियो कृपाल ॥ ध० ॥ २ ॥ महाकाल समसाण

---

१ ' सामग्री.

लास कियां डुख पासी तो योन चौरासीमे गोता रे खासी ॥ नर० ॥ ६ ॥ मरनो आयां कोई शरनो न देगा तो नेकी वदी दोय संग चलेगा ॥ नर० ॥ ७॥ धर्मोंद्यम करो बोड प्रमादो तो किसनलाल कहें शिव सुखसादो ॥ नर० ॥ ८ ॥

॥ हांक जिणरो तंने काई ए देशी ॥

हांके मत कर गरव दिवाना सुन सत गुरुकी सीख सयांना धस्यारहे धन माल होत तन राख मसां नांरे मत० ॥ टेर ॥ सनत कुमारकी सुंदर काया अमर रूप देखणने आया गरव किया उसव क्तविलाया पीकदांनीमें थूकत कीना देखरा नांरे ॥ मत० ॥ १ ॥ नगरी द्वारिका देख न लायक बपन कोरू जादवको नायक किसन महावली सुरथापाय क नस्म हुवा क्षणमांहि देखतां सव कमठांनारे ॥ मत० ॥ २ ॥ सोवन लंक समुद्रसि खाई हरि जित[1] कुंनकरण सा नाई तीन खण्डमें आण डुवाई वदी करी जद रावन लिबमण हात मरांनारे ॥ मत० ॥ ३ ॥ वीर ब्राह्मणी कूंखमे आया हरिचंद राजा बहु डुख पाया मूंज नूपती मांगने खाया अ

---

१ ' इन्द्रजित.

भिमानी संभूमचक्की जलमे झुबकांनारे ॥ मत० ॥४॥ झूंट कपट करके धन जोडे रात दिवसघर धंधे दोडे मदछकियो तिसना नहि छोडे मतकर ममता आप मख्या सब माल विरानांरे ॥ मत० ॥ ५ ॥ अथिर जगत जिम वादल छाया इन्द्रजाल सुपनेकी माया सोजं देखगरवे मति भाया ताकर ह्या शिरजीव चिन्ना परकाल सिंचानारे ॥ मत० ॥ ६ ॥ मातपिता तिरिया सुत जाती सब स्वारथ के मिले संगाती परभव जातां कोइय न साती दान सियल तप भा वके लेलो साथ खजांनारे ॥ मत० ॥ ७ ॥ क्रोध मान मद लोभ न राखे मरम वचन किसको नहि भाषे प्रेम सहित अनुभव रस चाखे धन्य नरा ते किसनलाल निजतत्व पिछांनारे ॥ मत० ॥ ८ ॥

॥ रोकड ह्योरां लेलो चार ए देशी ॥

॥ धन धन मुनिवर गज सुख माल जनमम रन डुख दीना टाल धन० टेर ॥ वालक वयमे संजम लीधो सब जग जांण्यो इंदरजाल ॥ ध० ॥ १ ॥ आज्ञा लेसिरी नेमनाथरी मुगतमेल मन कियो कृपाल ॥ ध० ॥ २ ॥ महाकाल समसाण

---

१ [illegible]

मांनीको ॥ चे० ॥ ३ ॥ आठो[1] ही मद कर चतुर गतिमें जीव भ्रमण करे ज्युं वृष घांनीको ॥ चे० ॥४॥ अशुचि पिण्ड रुजसदने[2] वदन सव मदन रुलावे दुखदानीको ॥ चे० ॥ ५ ॥ वार वार सतगुरु स मजावेतो ने मानो वचन गुरु ज्ञानीको ॥ चे० ॥ ६ ॥ सुकृतरूपी गहिरो संवल लेलो साथे आगे नही छे घरनांनीको ॥ चे० ॥ ७ ॥ किसनलाल कहे सतगुरु सेवो प्यारा लेवो मारग निरवांनीको ॥ चे० ॥ ८ ॥

॥ हांरे रंग मांणले रे सेलीवाला सायवा ए देशी ॥

॥ हांरे जीवा लखचोरासीमें तू भम्यो हां० जिण री तो गिणतनथायरे सुगुरु चरन चित लाय रे हां रे थारा जनममरन मिट जाय रे ॥ सु० ॥ १ ॥ हां० थावरपण त्रस च्यारमे हां० धारी ते नव नव काय रे ॥ सु० ॥ २ ॥ हां० दुरलभ नर भव पांमियो हां० अव तू प्रमाद मिटायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हां० अथिर संसारनी संपदा हां० वादल जेम वि लायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ हां प्राप्ती हुवेरे दश[3] वोलरी

---

१ 'जात्यादि' २ 'रोगकोघर' ३ 'सवणे नाणे विनाणे पच-खाणेयसंजमे ॥ अननये तवे चेव वोधायणे अकिरिया सिद्धि.'

में जाकर तरुतल ध्यांन कियो सुविशाल ॥ ध० ॥ ३ ॥ पूरवभवको वैर संभाली कोप्यो द्विज मुनि नयन निहाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ इत उत पेखी मृतिकाला यो मस्तक ऊपर वांधी पाल ॥ ध० ॥ ५ ॥ ऊग ऊगता खेहर नांखीरा शिरपर धरिया सोमल वला ॥ ध० ॥ ६ ॥ प्रवल वेदना सही ऋषीश्वर समता कर मेटी मन जाल ॥ ध० ॥ ७ ॥ मन कर सोमल महीसुरऊपर द्वेष न आण्यो परमदयाल ॥ ध० ॥८॥ मेरु शिखर जिम अडिल ध्यांनमे केवल ज्ञान हुवो ततकाल ॥ ध० ॥ ए ॥ करम खपावी मुगत सिधायाथिर सुख पांम्या वहुतरसाल ॥ ध० ॥ १०॥ किसनलाल कहे वेकर जोडी मुज वंदनाहो ज्योतिरकाल ॥ ध० ॥ ११ ॥

॥ नखरो जोर वण्योरे ठिंदगारीरो ए देशी

॥ चेतन मतकर जोर जवानीको ठिन भर नही है भरोसो जिंदगानीको ॥ टेर ॥ खोटी तो छुनियांने नाजक जमानोयारो व गत वडो ठे वेइमानीको ॥ चे० ॥ १ ॥ काया माया तो छाया वादल ठाया जैसी कां चोरे घट जिम पांनीको ॥ चे० ॥ २ ॥ मूठ मरोडे करवांह समांरे मुखे वयण उच्चारे अभि

मांनीको ॥ चे० ॥ ३ ॥ आगे ही मद[1] कर चतुर गतिमें जीव भ्रमण करे ज्युं वृष घांनीको ॥ चे० ॥४॥ अशुचि पिण्ड रुजसदनें[2] वदन सब मदन रुलावे डुखदानीको ॥ चे० ॥ ५ ॥ वार वार सतगुरु समझावेतो ने मानो वचन गुरु ज्ञानीको ॥ चे० ॥ ६ ॥ सुकृतरूपी गहिरो संवल लेलो साथे आगे नही ठे घरनांनीको ॥ चे० ॥ ७ ॥ किसनलाल कहे सतगुरु सेवो प्यारा लेवो मारग निरवांनीको ॥ चे० ॥ ८ ॥

॥ हांरे रंग मांणले रे सेलीवाला सायवा ए देशी ॥

॥ हांरे जीवा लखचोरासीमें तू भम्यो हां० जिणरी तो गिणतनथायरे सुगुरु चरन चित लाय रे हांरे थारा जनममरन मिट जाय रे ॥ सु० ॥ १ ॥ हां० थावरपण त्रस च्यारमे हां० धारी ते नव नव काय रे ॥ सु० ॥ २ ॥ हां० डुरलभ नर भव पांमियो हां० अव तू प्रमाद मिटायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हां० अथिर संसारनी संपदा हां० वादल जेम विलायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ हां प्राप्ती हुवेरे दश[3] बोलरी

---

१ 'जात्यादि' २ 'रोगकोघर' ३ 'सवणें नाणे विनाणे पचखाणेयसंजमे ॥ अननये तवे चेव वोधायणे अकिरिया सिद्धि'

हां० जाष्यो जिनागममांयरे ॥ ५ ॥ हां० क्रोधमा नमदनां करे हां० निरलोजी निरमाय रे ॥ सु० ॥६॥ हां० वीर वचन सुंणवूजियो हां० गोतमादिक ग्यारे जायरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ श्रेणक नृप निज वागमे हां० जेट्या अनाथी मुनि रायरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ हां० एम अनेक तिस्याघणां हां० गुरुदियो मारग वतायरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ हां० उत्तम मुनी धन जैनका हां० जव जवमे सुखदायरे ॥ सु० ॥ १० ॥ हां० गिरवा गुरु नंदरामजी हां० किसनलाल गुणगायरे ॥ सु० ॥११॥

॥ राग श्याम कल्याणमें ॥

॥ वन्दू नित चौवीसे जिनराय वन्दू० टेर ॥ रुषज अजित संजव अजिनंदन सुमति चरन चितलाय ॥ वं० ॥ १ ॥ पदम सुपारसचन्द्रप्रजे जिन सुविधि शीतल सुखदाय ॥ वं० ॥ २ ॥ श्रेयश्रेयांस वासुपूज्य ध्यांऊ विमल चरन मनजाय ॥ वं० ॥ ३ ॥ अनंत धरम सिरि शांति जिनेश्वर कुंथु अरेह गुणगाय ॥ वं० ॥ ४ मल्लिनाथ मुनि सुव्रत स्वामी नमियनेम नमू पाय ॥ वं० ॥ ५ ॥ पारस जिन महावीर चरनमे मुजमन जंवरवसाय ॥ वं० ॥ ६ ॥ ए चौवीस जजे जव प्राणी जनम मरन मिट

जाय ॥ वं० ॥ ७ ॥ गणधर विहरमान मुनि प्रण
मू जिम सवविघन विलाय ॥ वं० ॥ ८ ॥ अनंत
चौवीसीने निशदिन वन्दू तिमिर अज्ञान मिटाय
॥ वं० ॥ ९ ॥ उगणीस वावन पोस किसन चव
नगर नवाके मांय ॥ वं० ॥ १० ॥

॥ श्री आदेसर स्वामी हो ए देशी ॥

॥ आदेसर अविनाशी हो मुगती रावासी सां
भलो कांई सेवकनी अरदास भवजल पार उतारो
जी अवधारो अरजी वाल हा कांई आपो अविचल
वास ॥ आ० ॥ १ ॥ मरु देवी रानंदन हो जग वंदन
संदन शीलरा[1] कांई विघन निकंदन देव घननांमी
गुणधांमी हो शिव गामी स्वामी मायरा काई सुर
नर सारे सेव ॥ आ० ॥ २ ॥ वीतराग मनरंजन हो
दुखभंजन गंजन कांमने कांई देव न दूजो कोय
किसन करे कर जोडि हो शिर मोडी सायव वंदना
कांई शिव सुख दीज्यो मोय ॥ आ० ॥ ३ ॥

॥ गोरल ईसरजी केवेतो हंस वोलणाजी ए दे० ॥

॥ वलिहारी हो सत गुरजी थारा ज्ञानकी हो
मनडो हरष्यो महरो देखि छटा वखांनकी हो

---

१ 'रथ शीलका'

॥ टेर ॥ ज्ञानी स्वपर मतका जान गिरवा गुण रतनाकी खान गालो पाखंड्यांरा मान ॥ व० ॥ १ ॥ पुरुषदा ठाट जुडे मुख आगले हो जाणे खिलरहि केसर क्यारी वाणी श्रवण करे नर नारी निरखे मुद्रा मोहनगारी ॥ व० ॥ २ ॥ गाजो घनज्युं चतुर विध संघमे हो सूतर भिन्न भिन्न करने वाचो भाषो धरम दयामे साचो निश दिन ज्ञान ध्यानमे राचो ॥ व० ॥ ३ ॥ कथा आक्षेप विक्षेप संवेगणि हो चोथी निर्वेगणि विचार वरसे अमृतगिरा उदार श्रोता पांमे समकित सार ॥ व० ॥ ४ ॥ कुंथ्यावरणी डुकानरी ओपमांहो परसनजो पूछे सो त्यार उत्तर देवोहिये उतार थांरीवुधरो छे हनपार ॥ व० ॥ ५ ॥ लीनोजोगकुटंवऋधछोरुने हो जाण्यो ए संसार असार त्रिविधे छोडया पाप अठार लीधा घोर महाव्रतधार ॥ व० ॥ ६ ॥ अन्नेदान दियो षटकाया ने हो भवजल तारण तिरण जिहाज सारो निज पर आतम काज शीतल आनन ज्यूं द्विजराज ॥ व० ॥ ७ ॥ वुधनिरमल थारी श्रुतकेवली हो थाने सुर नर सीसनमांवे पूरण सुरगुरु पार न पावे

१ 'मुखचन्द्र'

किंचित किसनलाल गुण गावे ॥ व० ॥ ८ ॥

॥ राग वसंत होरी ॥

॥ प्रणमूं नित सिद्ध जयकारी तिरण भवसाग
र वारी ॥ टे० ॥ शिवशङ्कर जगदीश चिदानंद ज्यो
तिस्वरूप उदारी अलख निरंजन वीतरागतूं सकल
जिवां हितकारी प्रभु तुम करुणाधारी ॥ प्र० ॥ १ ॥
अज अविनाशी अकलसरूपी दोष रहित अवि
कारी परमपुरुष परमातम तुमही लोकालोक वि
हारी परमपदके दातारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ पतित उ
धारन भवजल तारन आपको विरध विचारी कि
सनलाल चरणांको चाकर आयो शरण तुम्हारी
राखो प्रभु लाज हमारी ॥ प्र० ॥ ३ ॥

॥ प्रीतम बोल रे ए दे० ॥

॥ लिछमण जागरे जागरे इकवार भाई म्हारा
बोल रे ॥ टेर ॥ इहां नही नगरी आपणी रे इहां
नही परिवार मातपिता पिण इहां नाही किम पो
रूयो कंतार[२] ॥ लि० ॥ १ ॥ हूं अयोध्या जायने रे
किण परदाखसूं मुख मा० ॥ मुजने क्यों मूकि
गयो रे देइ सगलो दुःख ॥ लि० ॥ २ ॥ दह दि

---

१ 'जल' २ ' वन.

श जो ता तुम विनारे मीटंन आवे कोय तुज विन सूंनी सायवीरे कुसुम विना कस वोय ॥ लि० ॥ ३ ॥ तुम विण आपद कुंण हरे.रे कहो कुण पूछ सेसार ॥ उपगारी शिरसे हरो रे बुद्धि तणो जणकार ॥ जा० ॥ ४ ॥ जिम जिम गुण चित संभरे रे आवे विरह अपार ॥ नीर झरे नैणाथ कीरे टूटो ज्यूं मुग ताहार ॥ लि० ॥ ५ ॥ विविध प्रकार विलाप करता अहो मोहनी झाल ॥ जीपे ते मुनिराज धन है एम कहे कृष्णलाल ॥ लि० ॥ ६ ॥

॥ तुम तो भले विराजोजी ए दे० ॥

॥ म्हारे घरापधारोजी रूठोडा शिव शङ्कर म्हारें घरांपधा रोजी ॥ टेर ॥ तुम पूज्यां विनखांवण वै ठो चूक पडीया मोठी भूका प्यासा निकल्या घरसे दशाहमारी खोटी ॥ म्हारे० ॥ १ ॥ तुमचो दोष नसुज नारीको दूषण सब है म्हारो भारी छ्याता केश घस्या शिर अवतो कोप निवारो म्हारे० ॥ २ ॥ भा ग्यहीणने भली वस्तुको जोग मिले नहि कोई ॥ जब दाखां पाकणने लागे काग गले रुज होई ॥ ॥ म्हारे० ॥ ३ ॥ भांत भांतरा भोजन करने भगती

१ ' नेत्र.

करस्यूं थारी ॥ जाव धरीने जोग लगासी पतिव्रता मुज नारी ॥ म्हारे० ॥ ४ ॥ जूप दशारण जद्रजणे सुण जोला जेदन पायो ॥ नहि घर आया शिवपारवती कुलटा चरित वणायो ॥ म्हारे० ॥५॥ राजा कहे पिण एक न माने टेक विगाडे कांमे ॥ कुगुरांकाजर माया कुमती ते किम आवे ठामें ॥ ॥ म्हारे० ॥ ६ ॥

॥ राग व्रज होरी ॥

॥ जाणो न्यारारे चतुर नर जीव काया जाणो न्यारारे टेर ॥ धरम कथा मुनि केशी सुणावे मानो सुधा घन वरसाया ॥ जा० ॥ १ ॥ पंण वपु धारी सयल संसारी जुगते करम उदय आया ॥ जा०॥२॥ ऊंच नीच लघु दीर्घ धनी रंक पुन्य पापका फल गाया ॥ जा० ॥ ३ ॥ चेतन लक्षण जीव अमूर्तिक तन जम लक्षण रूपी रे जाया ॥ जा० ॥ ४ ॥ जीव दरवर्ति हु काल अखण्डित जिन्न जिन्न करके ओलखाया ॥ जा० ॥ अमृत वाक्य अपूरव श्रवणे जूपति सुण इचरज पाया ॥ जा० ॥ ६ ॥ चित परधानने पूछ हकीकत केशी श्रमणपे चल आया ॥जा०७॥

॥ राग तेहिज ॥

॥ मति हारोरे अमोल खनरत्नवकूं मति हारोरे ॥ टेर ॥ सुण उपदेश प्रमाद मिटावो सीस नमावो सुध साधव कूं ॥ म० ॥ १ ॥ क्रोध मान मद लोभ कपट तज भज प्रभुवीतरागधर्व[1] कूं ॥ म० ॥ २ ॥ दानसियल तप भाव ठमांदिक संत्रललेलो परभः कूं ॥ म० ॥ ३ ॥ रोग असाध्य मिथ्या तमे जरिय कहा उपदेश इसा शव[2] कूं ॥ म० ॥ ४ ॥ लाल कहे जिन धरम अराधो च्यार कषाय मिटओ दव[3] कूं ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ राग सारंग व्रज होरी ॥

॥ गरवे मति देख सुंदर काया गरवे मति ॥ टेर ॥ हाडको पिञ्जर चाम सुंमढियो भीतर भिं गार भरीरे भाया ॥ ग० ॥ १ ॥ मलमूतर डुरगंध की क्यारी सात घात पिंरु दरसाया ॥ ग० ॥ २ ॥ चावत पांन सुपारीने वीरा मुकर देख मन हरषाया ॥ ग० ॥ ३ ॥ कुञ्जर कान पान पीपलको इंद्रजाल सुपनेरी माया ॥ ग० ॥ ४ ॥ सनतकुमार चक्री सर उनका रूप खिण कमे विललाया ॥ ग० ॥ ५ ॥

१ 'स्वामी, २ ' मुरदा, ३ ' दावानल.

मातपिता तिरिया सुत बंधव मोहजालमे मुरझाया ॥ ग० ॥ ६ ॥ सुगुरु दयाल कहे सुण भाया देह धरी कुण सुख पाया ॥ ग० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो एह कलियुगविषे तज्या सकल व्यापार ॥ मेहनीलामरु फाटका इनहीको अधिकार ॥ १ ॥ सधन थकी निरधन हुवे स्ववश पर आधीन ॥ संनिपातकीसी दशा भये दीन परवीन ॥ २ ॥

॥ देशी होरीका ख्यालकी ॥

॥ संसारी लोकां मत कोई करज्यो रे फाटका घरकारहो नही घाठका मत पीवो जहर भर वाटका ख्याल रच्या हे जाटका देवे छे सतगुरु चाटका ॥ सं० ॥ टेर ॥ आरतध्यांन रहे नितमनमे धरम ध्यांन घटजाय अलियां गलियांमिले मानवी पूछे भाव बुलाय सो कहें अबके तेजी भारी सुण मन राजी थाय हो ॥ सं० ॥ १ ॥ महर करी तूठी जगदंबा अबके राखी लाज घरमे जाय कहे सुन प्यारी गयो दलिदर आज सुंदर सुंदर करो र सोई सीधा वंछित काज हो ॥ सं० ॥ २ ॥ कामनि वरजे कंथने सथे मती करो नीलाम नही लेणारो

जोग आपणे गमे गांठरादाम हे जिणमे संतोष करो जो राखी चाहो मांम हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ अवही मेटूं दरद तिहारो सुंदर सांची सरद मुगताफलरो हार कराद्यूं तो जाणी जे मरद जांत जांतरा भूषण जारी करद्युं पीलीजरदहो ॥ सं० ॥ ४ ॥ वदे जोतकी जनम पत्रीमें लाभ लिख्यो इणमास ठक्यो गरवमे गणकगिरा सुण आयो निज आवास इतरे मंदी चली अचांनक उंडा देय निसास हो ॥ सं० ५ ॥ दीसे आज उदासी तनमे पूछे पदमण आय चिन्तातुर बोल्यो सुन प्यारी अवतो ईजत जाय तुरत खोल दे गहिनो नहितर मरस्युं फांसी खाय हो ॥ सं० ६ ॥ वनिता कहे पेलीमे वरज्या ओचाला डुखदाय गहिंनो सव सासूका घरको करिये ओर उपाय नैन लालकर वोल्यो तडकी थारा वापको नायहो ॥ सं० ॥ ७ ॥ वोली त्रिया दीखस्यो भूंडो डुरजन लोक हंसाय जो मुज गहिनो खोलस्यो मे कूवे पडस्यूं जाय हाथ जोड वोल्यो सुन प्यारी गोदेस्यूं लायहो ॥ सं० ॥ ८ ॥ जिम तिम कर भूषण ठांनो धस्या अडाने जाय डूंणो दरव व्याज

सर उ.

---

१ 'स्वामि.' नात,

पिणढूंणो काटो लारलगाय मुग्ध गमायो अरथ गांठको आरत इधकी थाय हो ॥ सं० ॥ ए ॥ एते सुणि एक अवधू आयो वेपरवाई तास भांगतमा खू चरूसमिठाया ले जावे उनपास लटका कर कर करे भंमोतांधर मन धनरी आसहो ॥ सं० ॥ १० ॥ पलक खोलकहे सुनरे वच्चा हुकम मातको एह इतना फ रक फरक नहि इनमे मतकर मन संदेह इम कहि जोगे अलख जगायो सुण सुख पायो तेह हो ॥सं० ॥ ११ ॥ जा जा कही सीख जवदीनी लीनी हिरदे धार धाम जाय धन सव चूंचायो जेज न करी लि गार बावो कर बावो गयो सकोई लागो शोच अ पार हो ॥ सं० ॥ १२ ॥ अलिया धंधा करे अज्ञानी मनमे सोचेनाय वृथा लोनसे हुवे फजीती धक्का नरकमें खाय समता वृष्टि विना किम वूझे लागी त्रसनालायहो ॥ सं० ॥ १३ ॥ उगणीसें इगताली वरसे अहिपुर सहेर मझार किसनलालरीहित शि क्षा यह सुणज्यो सहु नरनार लाभ हानि करमां अनुसारे धरम ध्यांन उरधार हो ॥ सं० ॥ १४ ॥

---

१ ' मूरख'; २ 'धन,'

जोग आपणे गमे गांठरादाम है जिणमे संतोष करो
जो राखी चाहो मांम[1] हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ अवही
मेटूं दरद तिहारो सुंदर सांची सरद मुगताफलरो
हार कराद्यूं तो जाणी जे मरद जांत जांतरा भूषण
जारी करद्युं पीलीजरदहो ॥ सं० ॥ ४ ॥ वदे जोतकी
जनम पत्रीमें लाज लिख्यो इणमास ठर्यो गरवमें
गणकगिरा सुण आयो निज आवास इतरे मंदी
चली अचांनक झंझा लेय निसास हो ॥ सं० ५ ॥
दीसे आज उदासी तनमे पूछे पदमण आय चि
न्तातुर बोल्यो सुन प्यारी अवतो ईजत जाय तुरत
खोल दे गहिनो नहितर मरस्युं फांसी खाय हो
॥ सं० ६ ॥ वनिता कहे पेलीमे वरज्या ओछाला
डुखदाय गहिंनो सब सासूका घरको करिये और
उपाय नैन लालकर बोल्यो तडकी थारा बापको
नायहो ॥ सं० ॥ ७ ॥ बोली त्रिया दीखस्यो भूंडो
दुरजन लोक हंसाय जो मुज गहिनो खोलस्यो
तो मे कूवे पडस्यूं जाय हाथ जोड बोल्यो सुन प्यारी
" गोदेस्यूं लायहो ॥ सं० ॥ ८ ॥ जिम तिम कर भू
सुप- इ ठांनो धस्या अडाने जाय ढूंणो दरब व्याज
सर उ.

१ 'स्वामे.' त,

पिणहूंणो काटो लारलगाय मुग्ध गमायो अर्थ गांठको आरत इधकी थाय हो ॥ सं० ॥ ए ॥ एते सुणि एक अवधू आयो वेपरवाई तास भांगतमा खू चरुसमिठाया ले जावे उनपास लटका कर कर करे कंगोतांधर मन धनरी आसहो ॥ सं० ॥ १० ॥ पलक खोलकहे सुनरे बच्चा हुकम मातको एह इतना फरक फरक नहि इनमे मतकर मन संदेह इम कहि जोगे अलख जगायो सुण सुख पायो तेह हो ॥सं० ॥ ११ ॥ जा जा कही सीख जवदीनी लीनी हिरदे धार धाम जाय धन सब चूंचायो जेज न करी लिगार बाबो कर बाबो गयो सकोई लागो शोच अपार हो ॥ सं० ॥ १२ ॥ अलिया धंधा करे अज्ञानी मनमे सोचेनाय वृथा लोभसे हुवे फजीती धक्का नरकमें खाय समता दृष्टि विना किम वूझे लागी भसनालायहो ॥ सं० ॥ १३ ॥ उगणीसें इगताली वरसे अहिपुर सहेर मझार किसनलालरीहित शिक्षा यह सुणज्यो सहु नरनार लाभ हानि करमां अनुसारे धरम ध्यांन उरधार हो ॥ सं० ॥ १४ ॥

---

१ 'मूरख'; २ 'धन,'

जोग आपणे गमे गांठरादाम हे जिणमे संतोष करो जो राखी चाहो मांम हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ अबही मेटूं दरद तिहारो सुंदर सांची सरद मुगताफलरो हार कराद्यूं तो जाणी जे मरद भांत भांतरा भूषण भारी करद्युं पीलीजरदहो ॥ सं० ॥ ४ ॥ वदे जोतकी जनम पत्रीमें लाभ लिख्यो इणमास ठक्यो गरवमे गणकगिरा सुण आयो निज आवास इतरे मंदी चली अचांनक ठंभा लेय निसास हो ॥ सं० ५ ॥ दीसे आज उदासी तनमे पूछे पदमण आय चिन्तातुर वोल्यो सुन प्यारी अबतो ईजत जाय तुरत खोल दे गहिनो नहितर मरस्युं फांसी खाय हो ॥ सं० ६ ॥ वनिता कहे पेलीमे वरज्या ओचाला दुखदाय गहिंनो सब सासूका घरको करिये ओर उपाय नैन लालकर वोल्यो तडकी थारा वापको नायहो ॥ सं० ॥ ७ ॥ वोली त्रिया दीखस्यो भूंगो दुरजन लोक हंसाय जो मुज गहिनो खोलस्यो तो मे कूवे पड़स्यूं जाय हाथ जोड वोल्यो सुन प्यारी [1]गोदेस्यूं लायहो ॥ सं० ॥ ८ ॥ जिम तिम कर भूसर उ. सुप. लेइ गंनो धस्या अडाने जाय ढूंणो दरव व्याज

१ 'स्वामीत,'

पिणहूंणो काटो लारलगाय मुग्ध[1] गमायो अर्थ[2] गांठको आरत इधकी थाय हो ॥ सं० ॥ ए ॥ एते सुणि एक अवधू आयो वेपरवाई तास भांगतमा खू चमसमिठाया ले जावे उनपास लटका कर कर करे झंझोतांधर मन धनरी आसहो ॥ सं० ॥ १० ॥ पलक खोलकहे सुनरे वच्चा हुकम मातको एह इतना फ रक फरक नहि इनमे मतकर मन संदेह इम कहि जोगे अलख जगायो सुण सुख पायो तेह हो ॥सं० ॥ ११ ॥ जा जा कही सीख जवदीनी लीनी हिरदे धार धाम जाय धन सव चूंचायो जेज न करी लि गार बाबो कर बावो गयो सकोई लागो शोच अ पार हो ॥ सं० ॥ १२ ॥ अलिया धंधा करे अज्ञानी मनमे सोचेनाय वृथा लोजसे हुवे फजीती धक्का नरकमें खाय समता वृष्टि विना किम वूझे लागी त्रसनालायहो ॥ सं० ॥ १३ ॥ उगणीसें इगताली वरसे अहिपुर सहेर मझार किसनलालरीहित शि क्षा यह सुणज्यो सहु नरनार लाभ हानि करमां अनुसारे धरम ध्यांन उरधार हो ॥ सं० ॥ १४ ॥

---

१ 'मूरख'; २ 'धन,'

॥ रुकमणकी लाज राखो ए दे० ॥

॥ निंदरा कांम विगाड्योरे इण निंदरा कामविगा ड्यो ॥ सामायकमे दोषलगाड्योरे इण निं० ॥ टेर ॥ फुक फूंक झोला खांवण लागा सूतर सुणवो ठाड्यो रे ॥ इण० ॥ १ ॥ गजव कियो इणद्रसनावरणी रंग माहि त्रंगपाडयोरे ॥ इण० ॥ २ ॥ सीसधुणे जिम व्यन्तर पेठो वोले फूंट जगाडयोरे ॥ इण० ॥ ३ ॥ किसणलाल कहे ते मुनि धन है जिणपर मादप ठाड्योरे ॥ इण० ॥ ४ ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ अवतो मे नांखेलु होरी २ लगीधुनिशिवपूर मोरी ॥ अव० ॥ टेर ॥ जोग विलास सवे तजदी नां मातकरी सवगोरी ॥ संजम मारगमे चितदीनो सावज पंथ तज्योरी ध्यांन जिन चरण लग्योरी ॥ अ० ॥ १ ॥ नाचन गावन चंग वजावन ख्याल दियासव ठोरी ॥ आश्रवठामत माम दियातज

१ ' आयोसियालो परु रहि ठारसिगरी तापेत्तर अंगार ॥ वेठो फुकफुक झोला खाय पड्यो पागडोसिगरी माय ॥ १ ॥ हुवो झवलको उठी झाल मूछ मूंरा राव लगाया वाल ॥ फेरे हात रह्यो नहि केश खिजमतहो गइ खासे वेस ॥ २ ॥

प्रीति धरमसे जोरी विषय सुख तृषना तोरी ॥ अ० ॥ २ ॥ समकित फाग मेरे मनजायो श्रीजिन धरम रुच्योरी ॥ शरन लियो नंदराम गुरूको लाल कंहे अव तोरी ॥ जग्यो घटमे अनुजोरी ॥ अ० ३ ॥

॥ पंथीमा वात कहो धुरठेहथीरे ए दे० ॥

॥ शीतल रे शीतल जिनवर वंदियेरे नमतां नव निधि थाय रे ॥ पांमेरे पांमें शिवसुख सास तारे कुंमणां न रहे काय रे ॥ शी० ॥ १ ॥ दशमां रे दशमां देवज लोकथी रे चविया श्री जिनराय रे॥सागर रे सागर वीसनो आजषो रे पूरव पुन्य पसायरे ॥ शी० ॥ २ ॥ जव थिति रे जवथिति आयूखय करी रे अमर समंधी सार रे ॥ जनिता रे जनिता जदरे जपना रे तीन ज्ञान देलार रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ जम्बु रे जम्बु द्वीपनां जरत में रे जद्दलपुर अजिराम रे ॥ सिरि दृढ रे सिरि दृढ राजा दीपतो रे नारी नंदा गुण धाम रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ सुपना रे सुपना चवदे देखिया रे सूती सेजम जार रे ॥ पूछ्यो रे पूछ्यो राजा फल कह्यो रे हिवडे हरष अपार रे ॥ शी० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गजगवेन्द्र सिंह लक्ष्मी दाम शशीखग केतु ॥ कुम्न कलशवर पउमसर क्षीरोदधि सुख हेतु ॥ ॥ १ ॥ नवन विमानये वारमो रत्नराशि सुख दान॥ धूम रहित वह्नीसु एह स्वपन चतुर दश जान॥२॥

॥ महावदि रे महावदि वारस जन मिया रे शुन्न वेला शुन्न वार रे ॥ महोछव रे महोछव वहु विध साजियो रे हरख्यो सहु परिवार रे ॥ शी० ॥ ॥ ६ ॥ दाह जुर रे दाह जुर हुंतो जनकने रे जनिता फरस्यो हाथ रे ॥ शान्ति रे शान्ति हुई तिण कारणे रे नामज शीतल नाथ रे ॥ शी० ॥ ७ ॥ जोवन रे जोवनरी वय पामियां रे परण्या पद मण नार रे ॥ विलसी रे विलसी सुख संसारनां रे लीधो संजम नार रे ॥ शी० ॥ ८ ॥ जप तप रे जप तप करणी खप करी रे पूर्व पचीस हजार रे ॥ लाखज रे लाख पुरवनो आउपो रे पहुंता मुगति मझार रे ॥ शी० ॥ ए ॥ गिरवा रे गिरवा गुरु नंद रामजी रे गुण मुख कह्या न जाय रे ॥ किसने रे किसन लाल गुण गाविया रे गढ जो धाणा मांहि रे॥ शी० ॥ १० ॥ संवत रे संवत उगणीसो नलो रे वरस व

चालीस सार रे ॥ सांवण रे सांवण मास सुहावणो रे वदि पंचम शनिवार रे ॥ शी० ॥ ११ ॥

॥ जीव रे तु शील तणो कर संग ए देशी ॥

॥ वामानंदा राख हमारी लाज प्रभु मोरा राख हमारी लांज ॥ टेर ॥ मेंगरजी अरजी करु रे सांभ लगरी वन वाज ॥ वा० ॥ १ ॥ देव घणांई देखिया रे किणथी नस रे काज वांछित पूरण तुं मिल्यो रे जगतारण जिनराज ॥ वा० ॥ २ ॥ काल अनंते हूं भम्यो रे चतुर गतीके मांहि ॥ कुगुरु तणां उप देशथी रे तुं धार्यो मन नाहि ॥ वा० ॥ ३ ॥ पूरव पुन्ये तुं मिल्यो रे सव देवनको देव ॥ कोड चतुर विध देवता रे सारे नित प्रति सेव ॥ वा० ॥ ४ ॥ पारस पारस नामथी रे काया कंचन थाय ॥ कनक हुवे जिम लोहनो रे पारसनो संग पाय ॥ वा० ॥५॥ त्रिभुवन केरो राजवी रे अश्वसेन कुलचंद ॥ शरणे आयो ताहिरे रे टालो मुज डुख दंद ॥ वा० ॥६॥ करुणासागर साहिवा रे भगत वछल प्रभु पास ॥ सेवक निज सो जाणने रे पूरो मन तणी आस ॥वा० ॥७॥ चौरासी लख जोनमे रे भव भ्रमणां में कीध ॥ किसन कहे कर जोडने रे अव तुम शरणो लीध ॥८।

॥ दोहा ॥

॥ गजगवेन्द्र सिंह लक्ष्मी दाम शशीखग केतु ॥ कुम्भ कलशवर पद्मसर क्षीरोदधि सुख हेतु ॥ ॥ १ ॥ भवन विमानये वारमो रत्नराशि सुख दान ॥ धूम रहित वह्नीसु एह स्वपन चतुर दश जान॥२॥

॥ महावदि रे महावदि वारस जन मिया रे शुभ वेला शुभ वार रे ॥ महोछव रे महोछव वहु विध साजियो रे हरष्यो सहु परिवार रे ॥ शी० ॥ ॥ ६ ॥ दाह जुर रे दाह जुर हुंतो जनकने रे जनिता फरस्यो हाथ रे ॥ शान्ति रे शान्ति हुई तिण कारणे रे नामज शीतल नाथ रे ॥ शी० ॥ ७ ॥ जोवन रे जोवनरी वय पामियां रे परण्या पद मण नार रे ॥ विलसी रे विलसी सुख संसारनां रे लीधो संजम भार रे ॥ शी० ॥ ८ ॥ जप तप रे जप तप करणी खप करी रे पूर्व पचीस हजार रे ॥ लाखज रे लाख पुरवनो आउषो रे पहुंता मुगति मझार रे ॥ शी० ॥ ए ॥ गिरवा रे गिरवा गुरु नंद रामजी रे मुख कह्या न जाय रे ॥ किसने रे किसन लाल गुण गाविया रे गढ जो धाणा मांहि रे ॥ शी० ॥ १० ॥ संवत रे संवत उगणीसो भलो रे वरस व

चालीस सार रे ॥ सांवण रे सांवण मास सुहावणो रे वदि पंचम शनिवार रे ॥ शी० ॥ ११ ॥

॥ जीव रे तु शील तणो कर संग ए देशी ॥

॥ वामानंदा राख हमारी लाज प्रभु मोरा राख हमारी लाज ॥ टेर ॥ मेंगरजी अरजी करु रे सांभ लगरी वन वाज ॥ वा० ॥ १ ॥ देव घणांई देखिया रे किणथी नस रे काज वांछित पूरण तुं मिल्यो रे जगतारण जिनराज ॥ वा० ॥ २ ॥ काल अनंते हूं भम्यो रे चतुर गतीके मांहि ॥ कुगुरु तणां उप देशथी रे तुं धार्यो मन नाहि ॥ वा० ॥ ३ ॥ पूरव पुन्ये तुं मिल्यो रे सव देवनको देव ॥ कोड चतुर विध देवता रे सारे नित प्रति सेव ॥ वा० ॥ ४ ॥ पारस पारस नामथी रे काया कंचन थाय ॥ कनक हुवे जिम लोहनो रे पारसनो संग पाय ॥ वा० ॥५॥ त्रिभुवन केरो राजवी रे अश्वसेन कुलचंद ॥ शरणे आयो ताहिरे रे टालो मुज दुख दंद ॥ वा० ॥६॥ करुणासागर साहिवा रे जगत वछल प्रभु पास ॥ सेवक निज सो जाणने रे पूरो मन तणी आस ॥वा० ॥७॥ चौरासी लख जोनमे रे भव भ्रमणां में कीध ॥ किसन कहे कर जोडने रे अव तुम शरणो लीध ॥८॥

॥ दोहा ॥

॥ गजगवेन्द्र सिंह लक्ष्मी दाम शशीखग केतु ॥ कुम्भ कलशवर पउमसर क्षीरोदधि सुख हेतु ॥ ॥ १ ॥ भवन विमानये वारमो रत्नराशि सुख दान॥ धूम रहित वह्नीसु एह स्वपन चतुर दश जान॥२॥

॥ महावदि रे महावदि वारस जन मिया रे शुभ वेला शुभ वार रे ॥ महोछव रे महोछव बहु विध साजियो रे हरष्यो सहु परिवार रे ॥ शी॰ ॥ ॥ ६ ॥ दाह जुर रे दाह जुर हुंतो जनकने रे जनिता फरस्यो हाथ रे ॥ शान्ति रे शान्ति हुई तिण कारणे रे नामज शीतल नाथ रे ॥ शी॰ ॥ ७ ॥ जोबन रे जोवनरी वय पामियां रे परण्या पद मण नार रे ॥ विलसी रे विलसी सुख संसारनां रे लीधो संजम भार रे ॥ शी॰ ॥ ८ ॥ जप तप रे जप तप करणी खप करी रे पूर्व पचीस हजार रे ॥ लाखज रे लाख पुरवनो आउषो रे पहुंता मुगति मझार रे ॥ शी॰ ॥ ९ ॥ गिरवा रे गिरवा गुरु नंद रामजी रे गुण मुख कह्या न जाय रे ॥ किसने रे किसन लाल गुण गाविया रे गढ जो धाणा मांहि रे॥ शी॰ ॥ १० ॥ संवत रे संवत उगणीसो भलो रे वरस व

चालीस सार रे ॥ सांवण रे सांवण मास सुहावणो रे वदि पंचम शनिवार रे ॥ शी० ॥ ११ ॥

॥ जीव रे तु शील तणो कर संग ए देशी ॥

॥ वामानंदा राख हमारी लाज प्रभु मोरा राख हमारी लांज ॥ टेर ॥ मेंगरजी अरजी करु रे सांभ लगरी वन वाज ॥ वा० ॥ १ ॥ देव घणांई देखिया रे किणथी नस रे काज वांछित पूरण तुं मिल्यो रे जगतारण जिनराज ॥ वा० ॥ २ ॥ काल अनंते हूं भम्यो रे चतुर गतीके मांहि ॥ कुगुरु तणां उप देशथी रे तुं धार्यो मन नाहि ॥ वा० ॥ ३ ॥ पूरव पुन्ये तुं मिल्यो रे सव देवनको देव ॥ कोड चतुर विध देवता रे सारे नित प्रति सेव ॥ वा० ॥ ४ ॥ हैनास पारस नामथी रे काया कंचन थाय ॥ कनक हुवे जिम [illegible]सिरतोजे ॥ [illegible]नो संग पाय ॥ वा० ॥५॥ त्रिभुवन के [illegible]तगुरु देवे उपदेशोन कुलचंद ॥ शरणे आयो ताहिं सत [illegible] रे [illegible]दुख दंद ॥ वा० ॥६॥ करुणासागर साहिवा रे जगत वह्लल प्रभु पास ॥ सेवक निज सो जाणने रे पूरो मन तणी आस ॥वा० ॥७॥ चौरासी लख जोनमे रे भव भ्रमणां में कीध ॥ किसन कहे कर जोडने रे अव तुम शरणो लीध ॥८॥

॥ दोहा ॥

॥ गजगवेन्द्र सिंह लक्ष्मी दाम शशीखग केतु
॥ कुम्भ कलशवर पद्मसर क्षीरोदधि सुख हेतु ॥
॥ १ ॥ भवन विमानये वारमो रत्नराशि सुख दान ॥
धूम रहित वह्नीसु एह स्वपन चतुर दश जान॥२॥

॥ महावदि रे महावदि वारस जन मिया रे शु
भ वेला शुभ वार रे ॥ महोछव रे महोछव वहु
विध साजियो रे हरष्यो सहु परिवार रे ॥ शी० ॥
॥ ६ ॥ दाह जुर रे दाह जुर हुंतो जनकने रे जनि
ता फरस्यो हाथ रे ॥ शान्ति रे शान्ति हुई तिण
कारणे रे नामज शीतल नाथ रे ॥ शी० ॥ ७ ॥ जो
वन रे जोवनरी वय पामियां रे परण्या पद मण ना
र रे ॥ विलसी रे विलसी सुख संसारनां रे लीधो
संजम भार रे ॥ शी० ॥ ८ ॥ जप तप रे जप तप
करणी खप करी रे पूर्व पचीस हजार रे ॥ लाखज
रे लाख पुरवनो आउपो रे पहुंता मुगति मझार रे
शी० ॥ ९ ॥ गिरवा रे गिरवा गुरु नंद रामजी रे
मुख कह्या न जाय रे ॥ किसने रे किसन ला
गुण गाविया रे गढ जो धाणा मांहि रे॥ शी०
१० ॥ संवत रे संवत उगणीसो भलो रे वरस व

॥ दोहा ॥

दया धरम प्रज्ञु दाखियो जग जाहर जगवीच ॥
किसनलाल सांची कहें नहि माने सोनीच ॥ १ ॥

॥ सहेल्या ए आवो मोरियो ए देशी ॥

॥ जीव दया दिल धार ज्यो ॥ टेर ॥ दया पा
ल्यां हो डुख जावे डूरके मुगत हुवे घर आंगणो
वली पामे हो लिछमी जरपूरके ॥ जी० ॥ १ ॥ जीव
दया रे कारणे रठनेमी हो छोमी राजुल नारके ॥
संजमले मुगते गया उत्रा धयनमे हो जाख्यो अधि
कारके ॥ जी० ॥ २ ॥ धरम रुची दया कारणे मुनि
कीधो हो कडवा तुं बानो अहारके ॥ सर्वार्थ सिध
जाय ऊपना प्रज्ञु जाख्यो हो ज्ञातामे विसतारके ॥
। जी० ॥ ३ ॥ सोमल खीरा शिर धस्या दया पा
हो मुनि गज सुख मालके ॥ जप ते रे जेप तप
गढमें हो जाख्यो पचीस हजार रे ॥ लाखज
सुसल्या तणो रे पहुंता मुगति मझार रे
॥ श्रेणक वा रे गिरवा गुरु नंद रामजी रे
ख कह्या न जाय रे ॥ किसने रे किसन ला
गाविया रे गढ जो धाणा मांहि रे ॥ शी०
१० ॥ संवत रे संवत उगणीसो जलो रे वरस व

॥ ११ ॥ भ० भव भव भमता जीवने रे दुल हो श्री जिन धर्म्म ॥ भ० ॥ हिवमा उद्यम आदरी रे आराधो शिव शर्म्म ॥ भ० ॥ इम० ॥ १२ ॥ भ० भरत प्रमुख जे प्राणिया रे पाम्या शिवपुर ठाम ॥ भ० ॥ ते भावनपर भावथी रे भाव धरम सुख धाम ॥ भ० ॥ इम० ॥ १३ ॥ गिरवा गुरुनंद रामजी रे किसन चरनको दास ॥ भ० ॥ सत उगणीस चमा लीसो रे अजिया पुर चौमास ॥ भ० ॥ इम० ॥१४॥

॥ वेदिन तुं भूलो राज भूलो ॥ ए देशी ॥

॥ सुकृत करलो रे प्यारा मति हारो एल जमारा ॥ सु० ॥ टेर ॥ झूंटा तन धन झूंटा जोवन झूंटा जगत पसारा ॥ झूंटा जीतव कारण तुं मति वांध पापरा भारा ॥ सु० ॥ १ ॥ सच्चा जिन मत सच्चा आगम सच्चा ही अणगारा ॥ सच्चा धरम अहिंसा लक्षण काटण करम कुठारा ॥ सु० ॥ २ ॥ मात पिता तिरिया सुत वंधव अन्त समय नहि थारा ॥ काल रिपूगल आनग्र हे जव कोइय न राखन हारा ॥ सु० ॥ ३ ॥ दर्भ अंणीपर उसविंदुवा अथवा राग संध्यारा ॥ काया माया वादल छाया वीजलिका झ वकारा ॥ सु० ॥ ४ ॥ नर जोवनमें विषय निजर भ

॥ ३ ॥ज०॥ रोग जरावलि मरणना रे जनम जवांतर जाण ॥ ज० ॥ सुख डुःख एक लहोसहे रे इम एकत्व प्रमाण ॥ ज०॥ इम० ॥ ४ ॥ ज०॥ पुदगल जड परिणाम ठे रे आतम चेतन चंग ॥ ज० ॥ पुदगल प्रेम निवारिये रे अन्यपणे धरि रंग ॥ ज० ॥ इम० ॥ ५ ॥ ज० जाजन मूत्र पुरीषनो रे अशुचि रूपनो देह ॥ ज० ॥ सूं शुचि कारण काहला रे अशुचिपणो इम एह ॥ ज०॥ इम० ॥ ६ ॥ ज०॥ नीरतणीपरे नित श्रवे रे आश्रवयोगे कर्म्म ॥ ज० ॥ तेम कषाय क्रिया थकी रे आश्रव जावना मर्म्म ॥ ज० ॥ इम० ॥ ७ ॥ ज० ॥ समिति परिसँह जावनोरे साधू धर्म्म चरित्र ॥ ज० ॥ करम आगमनो रोकवोरे संवर एह पवित्र ॥ ज० ॥ इम० ॥ ८ ॥ ज०॥ तप वारे जेदे करी रे मूलथी करमनो नास ॥ ज० ॥ एह निर जरा जावसूं रे अजर अमर सुख वास ॥ ज० ॥ इम० ॥ ए ॥ ज०॥ धन जे संवेगे जस्या रे ठांकि सहु प्रतिध ॥ ज० ॥ साधु धरम सांचो धरे रे तप संजम सुप्रवंध ॥ ज० ॥ इम० ॥ १० ॥ ज०॥ लोक नराकृत जाणिये रे पूरण द्रव्य संसार ॥ ज० ॥ जनम मरण फरस्यो सहू रे जीव अनंतीवार ॥ ज० ॥ इम०॥

॥ ११ ॥ भ० भव भव भमता जीवने रे डुल हो श्री जिन धर्म्म ॥ भ० ॥ हिवका उद्यम आदरी रे आराधो शिव शर्म्म ॥ भ० ॥ इम० ॥ १२ ॥ भ० भरत प्रमुख जे प्राणिया रे पाम्या शिवपुर ठाम ॥ भ० ॥ ते भावनपर भावथी रे भाव धरम सुख धाम ॥ भ० ॥ इम० ॥ १३ ॥ गिरवा गुरुनंद रामजी रे किसन चरनको दास ॥ भ० ॥ सत उगणीस चमा लीसो रे अजिया पुर चौमास ॥ भ० ॥ इम० ॥१४॥

॥ वेदिन तुं भूलो राज भूलो ॥ ए देशी ॥

॥ सुकृत करलो रे प्यारा मति हारो एल जमा रा ॥ सु० ॥ टेर ॥ झूंटा तन धन झूंटा जोवन झूंटा जगत पसारा ॥ झूंटा जीतव कारण तुं मति वांध पापरा भारा ॥ सु० ॥ १ ॥ सच्चा जिन मत सच्चा आगम सच्चा ही अणगारा ॥ सच्चा धरम अहिंसा लक्षण काटण करम कुठारा ॥ सु० ॥ २ ॥ मात पिता तिरिया सुत वंधव अन्त समय नहि थारा ॥ काल रिपूगल आनग्र हें जव कोश्य न राखन हारा ॥ सु० ॥ ३ ॥ दर्भ अंणीपर उसविंडुवा अथवा राग संध्यारा ॥ काया माया वादल ठाया वीजलिका झ वकारा ॥ सु० ॥ ४ ॥ भर जोवनमें विषय निजर भ

॥ ३ ॥ज०॥ रोग जरावलि मरणना रे जनम जवांतर जाण ॥ ज० ॥ सुख ङुःख एक लखोसहे रे इम ए कत्व प्रमाण ॥ ज०॥ इम० ॥ ४ ॥ ज०॥ पुद्गल जड परिणाम ठे रे आतम चेतन चंग ॥ ज० ॥ पुद्गल प्रेम निवारिये रे अन्यपणे धरि रंग ॥ ज० ॥ इम० ॥ ५ ॥ ज० जाजन मूत्र पुरीषनो रे अशुचि ऊपनो देह ॥ ज० ॥ सूं शुचि कारण काहला रे अशुचिप णो इम एह ॥ ज०॥ इम० ॥ ६ ॥ ज०॥ नीरतणीपरे नित श्रवे रे आश्रवयोगे कर्म्म ॥ ज० ॥ तेम कषाय क्रिया थकी रे आश्रव जावना मर्म्म ॥ ज० ॥ इम० ॥ ७ ॥ ज० ॥ समिति परिसह जावनारे साधू धर्म्म चरित्र ॥ ज० ॥ करम आगमनो रोकवोरे संवर एह पवित्र ॥ ज० ॥ इम० ॥ ८ ॥ ज०॥ तप बारे जेदे क री रे मूलथी करमनो नास ॥ ज० ॥ एह निर जरा जावसूं रे अजर अमर सुख वास ॥ ज० ॥ इम० ॥ ॥ ए ॥ ज०॥ धन जे संवेगे जस्या रे ठाकि सहु प्रति वंध ॥ ज० ॥ साधु धरम सांचो धरे रे तप संजम सुप्रबंध ॥ ज० ॥ इम० ॥ १० ॥ ज०॥ लोक नराकृत जाणिये रे पूरण ऊव्य संसार ॥ ज० ॥ जनम मर ण फरस्यो सहू रे जीव अनंतीवार ॥ ज० ॥ इम० ॥

॥ ११ ॥ भ० भव भव भमता जीवने रे डुल हो श्री जिन धर्म्म ॥ भ० ॥ हिवमा उद्यम आदरी रे आराधो शिव शर्म्म ॥ भ० ॥ इम० ॥ १२ ॥ भ० भरत प्रमुख जे प्राणिया रे पाम्या शिवपुर गाम ॥ भ० ॥ ते भावनपर भावथी रे भाव धरम सुख धाम ॥ भ० ॥ इम० ॥ १३ ॥ गिरवा गुरुनंद रामजी रे किसन चरनको दास ॥ भ० ॥ सत उगणीस चमा लीसो रे अजिया पुर चौमास ॥ भ० ॥ इम० ॥१४॥

॥ वेदिन तुं भूलो राज भूलो ॥ ए देशी ॥

॥ सुकृत करलो रे प्यारा मति हारो एल जमारा ॥ सु० ॥ टेर ॥ झूंटा तन धन झूंटा जोवन झूंटा जगत पसारा ॥ झूंटा जीतव कारण तुं मति बांध पापरा भारा ॥ सु० ॥ १ ॥ सच्चा जिन मत सच्चा आगम सच्चा ही अणगारा ॥ सच्चा धरम अहिंसा लक्षण काटण करम कुठारा ॥ सु० ॥ २ ॥ मात पिता तिरिया सुत बंधव अन्त समय नहि थारा ॥ काल रिपूगल आनग्र हें जब कोइय न राखन हारा ॥ सु० ॥ ३ ॥ दर्भ अंणीपर उंसविंडुवा अथवा राग संध्यारा ॥ काया माया बादल छाया वीजलिका झ वकारा ॥ सु० ॥ ४ ॥ भर जोवनमें विषय निजर भ

॥ ३ ॥ज०॥ रोग जरावळि मरणना रे जनम जवांतर जाण ॥ ज० ॥ सुख दुःख एक लमोसहे रे इम एकत्व प्रमाण ॥ ज०॥ इम० ॥ ४ ॥ ज०॥ पुदगल जड परिणाम छे रे आतम चेतन चंग ॥ ज० ॥ पुदगल प्रेम निवारिये रे अन्यपणे धरि रंग ॥ ज० ॥ इम० ॥ ५ ॥ ज० जाजन मूत्र पुरीषनो रे अशुचि रूपनो देह ॥ ज० ॥ सूं शुचि कारण काहला रे अशुचिपणो इम एह ॥ ज०॥ इम० ॥ ६ ॥ ज०॥ नीरतणीपरे नित श्रवे रे आश्रवयोगे कम्र्म ॥ ज० ॥ तेम कपाय क्रिया थकी रे आश्रव जावना मम्र्म ॥ ज० ॥ इम० ॥ ७ ॥ ज० ॥ समिति परिसिंह जावनांरे साधू धंम्र्म चरिँत्र ॥ ज० ॥ करम आगमनो रोकँवोरे संवर एह पवित्र ॥ ज० ॥ इम० ॥ ८ ॥ ज०॥ तप वारे जेदे करी रे मूलथी करमनो नास ॥ ज० ॥ एह निर जरा जावसूं रे अजर अमर सुख वास ॥ ज० ॥ इम० ॥ ॥ ए ॥ ज०॥ धन जे संवेगे जस्या रे छांमि सहु प्रतिवंध ॥ ज० ॥ साधु धरम सांचो धरे रे तप संजम सुप्रवंध ॥ ज० ॥ इम० ॥ १० ॥ ज०॥ लोक नराकृत जाणिये रे पूरण द्रव्य संसार ॥ ज० ॥ जनम मरण फरस्यो सहू रे जीव अनंतीवार ॥ ज० ॥ इम० ॥

॥ ११ ॥ भ० भव भव भमता जीवने रे डुल हो श्री जिन धर्म्म ॥ भ० ॥ हिवमा उद्यम आदरी रे आराधो शिव शर्म्म ॥ भ० ॥ इम० ॥ १२ ॥ भ० भरत प्रमुख जे प्राणिया रे पाम्या शिवपुर ठाम ॥ भ० ॥ ते भावनपर भावथी रे भाव धरम सुख धाम ॥ भ० ॥ इम० ॥ १३ ॥ गिरवा गुरुनंद रामजी रे किसन चरनको दास ॥ भ० ॥ सत उगणीस चमा लीसो रे अजिया पुर चौमास ॥ भ० ॥ इम० ॥१४॥

॥ वेदिन तुं भूलो राज भूलो ॥ ए देशी ॥

॥ सुकृत करलो रे प्यारा मति हारो एल जमारा ॥ सु० ॥ टेर ॥ झूंटा तन धन झूंटा जोवन झूंटा जगत पसारा ॥ झूंटा जीतव कारण तुं मति बांध पापरा भारा ॥ सु० ॥ १ ॥ सच्चा जिन मत सच्चा आगम सच्चा ही अणगारा ॥ सच्चा धरम अहिंसा लक्षण काटण करम कुठारा ॥ सु० ॥ २ ॥ मात पिता तिरिया सुत बंधव अन्त समय नहि थारा ॥ काल रिपूगल आनग्र हे जब कोइय न राखन हारा ॥ सु० ॥ ३ ॥ दर्भ अंणीपर उसबिंडुवा अथवा राग संध्यारा ॥ काया माया बादल छाया बीजलिका ऊबकारा ॥ सु० ॥ ४ ॥ भर जोवनमें विषय निजर

र मतनिरखो परदारा ॥ काम भोग हैं सहत विन्छ
वो जहर हलाहल खारा ॥ सु० ॥ ५ ॥ मोह जाल
में फसिया प्राणी सेवे पाप अठारा ॥ ज्ञान दृष्टि दे
सो चसयानां धाय पूत जिम न्यारा ॥ सु० ॥ ६ ॥
अतीचार रहित सुधपालो श्रावकनां व्रत वारा ॥
किसन कहे जिन धरम अराधो मेटो भरम
अंधारा ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ अथ मुक्तिनि सरणी ॥ दोहा ॥

॥ प्रथम भव्य भव थिति घटे प्रगट शुभोदय
होत ॥ तव चेतनकूं चेतना जाके सुमति सुजोत ॥
॥ १ ॥ सुरुचि भाव थिरता वढे चढे चतुर गुण था
न ॥ करे अनादि मिथ्यातको नाश सकल तम भा
न ॥ २ ॥ भेदे गांठ मिथ्यातकी तीने करन वखान॥
उपशम रस चाखे तहां महुरत एक प्रमान ॥ ३ ॥
गिरे जो उपशम फरसके सादि मिथ्याती सोय ॥
सास्वा दानको स्वादले अरध पुदगली होय ॥ ४ ॥
सादि मिथ्यात संजोगता उपशम समकित नाम ॥
तीजे गुण ठाणे गुणि मिश्र भाव परिणाम ॥ ५ ॥
.. गुण स्थानक विषे सुध सरधा परवीन ॥ सत
। समकित गहे रहे राम गुण लीन ॥ ६ ॥

उपशम खायक खयोपशम वेदक वहु विस्तार ॥
अव पंचम गुण स्थानकी रचना सुण सुविचार ॥७॥

॥ चौपाई ॥

॥ देव धरम गुरु सरधा साची सत्य स्वरूप जिना गमजाची ॥ संशय मोह भरम तज दीना पर मारथका मारगचीना ॥ ८ ॥ नव तत्त्व वोल यथा रथ धारे साज संवारे नेम विचारे ॥ अतीचार समकितके टारे देश विरत द्वादश व्रत पाले ॥ ए ॥ एकादश ही प्रतिमा कारी उत्तम किरिया सिश्रव्यो हारी ॥ वरजे करमा दान विख्याता गुण इगवीस धरे लग्रु ज्ञाता ॥ १० ॥ सांचो दया धरमको रागी मूल भरमको है परित्यागी ॥ भागी कुमत्ति कला भव भरणी करै मनोरथ मोटी करणी ॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ चठे गुण स्थानक विषे परमादी मुनिराय ॥
थिवर कलप जिन कलपकी वात कहुं विगताय॥१२॥

॥ चौपाई ॥

॥जिन कलपी नाही न परमादी एकाकी मौनी मरयादी ॥ नगन दिगंवर है वनवासी ध्यान धरे आतम अविनाशी ॥ १३ ॥ जोग निरुद्धे

सी आशा दासी तजी उदासी ॥ जोगासन जोगे सर करता ध्यानासन धीरजके धरता ॥ १४ ॥ जोगी जोग जुगतको तोले नव्य जुगतिकूं पर घर डोले ॥ सत संगी सेली गुरु शिक्षा दोय कर खप्पर जाचे जिक्षा ॥ १५ ॥ शुन्न गुण संग्रह जटा जुगोटा शील शरमका कसे लंगोटा ॥ कपट नाश कङ्कण कर सोहे मौन तणी मुद्रा मन मोहे ॥ १६ ॥ समता जोगनि संग सुहावे सुमति सुधारस नांग चढावे ॥ निश दिन करुणा वीण वजावे सुध सुन्नाव यह ताल लगावे ॥ १७ ॥ नारी कंथा धीरज धारे वर विवेक वागम्वर मारे ॥ क्षमामडी अडिग है थूणी ज्ञान गुफारु ध्यानकी धूणी ॥ १८ ॥ सुरति सुरंगी सेज समारे मन थिरता आराम विचारे ॥ किसन कहे धनसो दिन थावे इसा मुनीकोदरसन पावे १९

॥ दोहा ॥

॥ जिन कलपी जोगी जती निपट निरागी होय॥थिवर कलप धर संजती कछुक सरागी सोय २०

॥ चौपाई ॥

॥ थिवर कल्प मुनि देश प्रमादी ये दोनु विवहार अनादी ॥ वैठ सन्नामे कथा सुनावे शिष शाखा

पारवार वढावे ॥ २१ ॥ धरमो पगरण चउदे धारे म
मता विन विचरे वसुधारे ॥ अव सुण धरम ध्यान
की थिरता जिण करणी कर मुनि भवतिरता ॥२२॥
आतम ज्ञान विवेक विचारे राग द्वेषकी व्यथा वि
डारे ॥ आरत रौद्र न सोगन संगा शात्रव मित्र स
मान सुचंगा ॥ २३ ॥ देव निरंजन जोताकारा गुरु
निरमोही विगत विकारा ॥ जाचो जीवदयाको दा
नी सत्य वचन अरु मीठी वाणी ॥ २४ ॥ क्रोध भु
जंगम निर विषकीना उपशम आण अमी रसपीना
॥ मान महागिरि मेरु गिरायो माया ममता खोज
गमायो ॥ २५ ॥ लोभ जहरकी लहर मिटाई विक
था वैर विरोध वमाई ॥ इन्द्री पाचदमे दुख दाता
वसन विषय रस रूपनराता ॥ २६ ॥ कुलाचारकी
चालन चाले मधुरीगति में गल ज्युं माले ॥ भूमि
विलाक पूज पग धारे सवकूं आप समान विचारे ॥
॥ २७ ॥ साप सिंह व्यन्तर भय नाणे लाभा लाभ
न वात वखाणे ॥ निंदा पूजा समकर जाणे जस की
रतकूं नाहि पिछाणे ॥ २८ ॥ शीत उषन वारू वर
साले उपसर्गतीनू सहे तिहु काले ॥ अलप अहा

१ देव मनुष्यतिर्यंचका.

री आपा मारे करा मातकी वात निवारे ॥ २९ ॥
रवि[1] शशि[2] व्योम[3] विहंगम[4] गिरिवर[5] खग्गी[6] शङ्ख[7] कमल[8] कबु सरवर[9] ॥ अहि[10] चंदन[11] मधुकर[12] मलयागिर[13] कनक[14] हंस[15] ज्वाला[16] रतनागर[17] ॥ ३० ॥ भूंद[18]ग[19]पवन[20] भूत[21] सम कहिये सिंह[22] वृषभ[23] गयवर[24] गुण गहिये ॥ शूर सुभट अरिसे नहि भाजे गुण अनन्त यह उपमा छाजे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सतम अठम गुण थानके नही प्रमाद अनिमेष ॥ उपशम होय कषाय सब निरमल ध्यान विशेष ॥ ३२ ॥ नोकषाय नवमें खपे दशमें लोभ खपाय ॥ उपशान्त मोह इग्यारमें खीण वारमें जाय ॥ ३३ ॥ प्रथम चोकडी उपशमे पीछे मोहनी तीन ॥ वेद नपुंसक नारनो षट हासादिक हीन ॥ ३४ ॥ पुरुष वेद अरु क्रोधत्रिक मान तणो त्रिक जाण ॥ माया त्रिक अरु लोभ त्रिक उपशम श्रेण पिछाण ॥ ॥ ३५ ॥ अनुतानकी चोकडी तीन मोहनी मार ॥ दोय चोकडी दूरकर वेद नपुंसक नार ॥ ३६ ॥ षट हासादिक खय करे पुरुष वेद कर खीण ॥ खय कर चोथी चोकडी खिपक श्रेण लय लीण ॥ ३७ ॥

खिपक श्रेण मुनि जो चढे ताको यह विवहार ॥ उपशम श्रेण दशा गिरण एकादश अवधार ॥ ३७ ॥ दशमे गुण थानक विषे चोथो चारित थाय ॥ यथाख्यात इग्यारमें कलपातीत कहाय ॥ ३९ ॥ शुकल ध्यान कर खय करे करम घातिया चूर ॥ उपजे केवल तेरमें होय पटल सब दूर ॥ ४० ॥

॥ चौपाई ॥

॥ प्रगटे जोति उद्योत प्रकासा सुरनर आय होत सब दासा ॥ देखे लोका लोक वखाणे स्वरग मिरत पाताल प्रमाणे ॥ ४१ ॥ सबके भाव गतागति जाणे भव्य जीव संशय नहि आणे ॥ मनकी वात गुपत नहि छानी जो जाणे सो केवल ज्ञानी ॥ ४२ ॥ चढे चउदमें होय अजोगी सिद्ध आठ गुण सहित पयोगी ॥ पेतालीस लक्ष परमाना जो जन च्यार कोशका जाना ॥ ४३ ॥ च्यार वीसमें भाग उजासा जहां जोति स्वरूपका वासा ॥ जगत सीसपें जाय विराजे सेवक स्वाम समान सदा जे ॥ ४४ ॥ चिहुं गति आवा गमन मिटावे फिर उवेगरभा वासन आवे ॥ डुख सुख करता करे न करमी कहेजु एसे महा अधरमी ॥ ४५ ॥ केउ कहे जो जन है मोटा

च्यार कोशका जो जन छोटा ॥ तिणसूं वात मिले नहि सारी समऊ विचार कहो विसतारी ॥ ४६ ॥ च्यार हजार कोशका लीजे तो विधि मिले सुरति सुध कीजे ॥ एह विवरो वहु सुरति जाने साच झूंट पंडित पहिचाने ॥ ४७ ॥ तीन ञुवन नाख्या है ना णी तिण माहे पांचू गति आणी ॥ में आगम दे ख्या गुरु वाणी तिण अनुसारे मुगति वखाणी ॥४७॥ जो जन तीन तीन पल सागर आंगुल तीन तीन गुण आगर ॥ वस्तु विमाण जमी मापीजे तनको मान वरत तिहु लीजे ॥ ४ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ च्यार कोश अरु च्यारसे च्यार हजार विचार ॥ ऊगुणा जो जन देवका मनको ञरम निवार ॥ ॥ ५० ॥ मुगति होय सव करमसूं जीव मुगति में जाय ॥ राग द्वेष मोह जालमें फस्यो मुगति किम थाय ॥ ५१ ॥ जगमें फिरत अनादिको पुन्य पाप ी दोर ॥ राजा रंक कहायके ऊच नीच ञ्रम जोर । ५२ ॥ लख स्वरूप जाञाजिके मिथ्या मतिको खोय ॥ तिण पाम्या सुख सासता सुजस सदा थिर होय ॥ ५३ ॥ यह दिन दशकी साहिवी मत कोइ

करो गुमान ॥ अन्त कालका गालमें राजा रंक स
मान ॥ ५४ ॥ कुण कुण जगमें होय गया भूमि प
ति नृप जोय ॥ ममता कर कर मर गये नाम ठाम
नहि कोय ॥ ५५ ॥ स्वमति परमति परम मतिकहुं
कथा लवलेश ॥ भव्य सुणो चित लायके कहे कि
सन उपदेश ॥ ५६ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ नाभि घरे अवतार जुलीना जुगल्या धरम नि
वारजु कीनां ॥ राज नीति धर्म नीति प्रकासी राम
रहीम रटे जगवासी ॥ ५७ ॥ आदिनाथ आदिम
कहि लावे महादेव ब्रह्मा वतलावे ॥ विष्णु नाम गुण
कहे उनीकूं मति विरोध है मूढ डुनीकूं ॥ ५८ ॥ रु
षभ आदि अवतार सुज्ञानी ताकी यह सव सृष्टि
कहानी ॥ आगम वेद पुराण कुराणा सव जग री
त व्योहार वखाणा ॥ ५९ ॥ तज पर संग भयो पर
मेसर साचो जैनजति जोगेस्वर ॥ तप सुभाव मौन
व्रत लीना शुकल सुध्यान करम खयकीना ॥ ६० ॥
केवल ज्ञान परम पद पाया इन्द्रादिक सवहीमिल
आया ॥ समोसरणकी रचना कीनी दिव्य धुन्न देश
ना दीनी ॥ ६१ ॥ सुगति गमनको पंथ वतायो मर

देख्या केवल पद पायो ॥ जे जे शवद करे आकाशे केवल महिमासुर परकाशे ॥ ६२ ॥ चौवीसे अवतार कहाणा सवकी महिमा एक समाना ॥ अतिशय वाणी गुण कर सोहे त्रिगमो देख नविक मनमोहे ॥ ६३ ॥ रुषन्न पुत्र नरतेसर राजा ठहुं खण्डमें आण अवाजा ॥ सवा कोरु सुत जाके जाए जैन विना कहुं नाम न पाये ॥ ६४ ॥ वाहूवल वलवन्त वदीतो चकर वरतसेती जुद जीतो ॥ तीन लाख सुत ज्ञान गिणाए वेद व्यास कबु नाहि सुनाए ॥ ६५ ॥ राजा सेव करे कर जोरी सहस ठतीस मद मठर मोडी ॥ सगरराय सुत साठ हजारा सवको काल नयो समकारा ॥ ६६ ॥ इन्द्र अवधि करि रूप वख्याण्यो सनत कुमार गरव मन आण्यो ॥ तनकूं रोग व्यथा जव जागी ठहुं खण्डकी ममता त्यागी ॥ ॥ ६७ ॥ ब्रह्मदत्त संनूत चकेसर इन्द्र लोक जिम जाण सकेसर ॥ राजरुद्धि रमणीके रागी दोनुंनरक गये निरनागी ॥ ६८ ॥ दशरथ राजा जोग कमायो नरत रामको नक्त कहायो ॥ कहां राम लिठमनकी जोडी महा वली जिण लंका तोरी ॥ ६९ ॥ कहां लंकपति राज करन्ता इन्द्रजीतसे सुत वलव

न्ता ॥ इक लख पूत सवा लख न्याती तिण रावण घर दियो न वाती ॥ ७० ॥ राय विन्नीषण धरमि सुन्याई लग्यो रामके चरने आई ॥ कुंन्नकरनकी रही न काई खरदूषणसे गए विलाई ॥ ७१ ॥ मेहदमेघ अंगद मथमन्ता-पवनरायपूत हणमंता ॥ न्नामण्फल सुग्रीव विराजा वडे वडे विद्याधर राजा ॥ ७२ ॥ कहां ञवे जादव जोरवहन्ता संवप्रजुन कुंमर दुरदन्ता॥ कहां द्वारापुरकी ठकुराई कहां बलन्नद्र कनैया न्नाई ॥ ७३ ॥ दुरजोधन राजा अन्निमानी पांडव पांचे वडे सुज्ञानी ॥ केरु दल दरियाव हटाया जंगजीत फिर मुगतसिधाया ॥ ७४ ॥ रामायण न्नारत बहुराया शिशूपाल बलन्नद्र खपाया ॥ कीचक दाणू न्नीमगिराए जरासिंध जोधा जम खाए ॥७५॥ न्नीषम काल जमनजमजाया नव नारद का नाम न आया ॥ परसरामें बल अनमीराया राय परीछित परम कहाया ॥ ७६ ॥ करकंडूनमी निगई गाया जय राजा एह मुगति सिधाया ॥ रायदसारण गरवमें आयो तिण सकेंदर पाय लगायो ॥ ७७ ॥ संशय शङ्क प्रदेशीपाया पुंडरीक इखुकारकहाया ॥ जितशत्रू पृथ्वी रूपी राजा वज्रजंघ व सुत्रि ज

॥ ७८ ॥ चंड प्रद्योत न राय उदाई श्रेणकनृपचे रा वरदाई ॥ जनक कनक मधुकीटक नाई नरवाहन नल कूंवरराई ॥ ७९ ॥ दधिवाहन कहां राय संतानी विक्रमराय करनसेदांनी ॥ अनय कुमार महावुधवंतो जंबू सालनद्र धनवंतो ॥८०॥ कहां उवे ब्रह्मा वेद ननंता कहां उवे शंकर गंगधरन्ता ॥ कहां उवे नांनु मृंजनवनंदा नोज नरत कहां गोपीचंदा ॥८१॥ हिंदूमूसलमान हि मराये केइ उत्रपति गरद मिलाये ॥ कालवली सवकी सुधिखोई राजा रंक वचे नहि कोई ॥ ८२ ॥ केते नाम कहांलूं वरणो धरमविना जगमांहिन शरणो ॥ धरमध्यानके मारग लागा ताकूं अजर अमरकी जागा ॥ ८३ ॥

॥ दोहा ॥

केई कोरुराजानए केई कोरु अवतार ॥ केई सुवदाना नये केई सेठ सिरदार ॥८४॥ गुणग्रांनक रचनां करी किसनलाल अनिराम ॥ श्रीगुरुनंदप्रसादथी सिद्धहोत सवकाम ॥ ८५ ॥ इतिसुगतिनिरसणिः ॥

॥ देशी निहालदेकी ॥

परम रिपू इण लोकमें जी कांइ मोहनिकरमनिदान ॥ सुरनरतिरि पसु पंखियाजी कांइ इणसवकिया

हांजी कांइ इण सबकिया हेरान ॥ १ ॥ जगमे दुरजय करमयो मोहनीजी ॥ आंकडी ॥ दुरजय करमयो मोहनीजी कांइ विजयकरे भविकोय ॥ इणवसपडिया प्राणियांजी कांई मदछकियाजिम होय ॥ जग० ॥ २ ॥ सकल संसारी जीवडाजी कांइ जकड्यासोह जंजीर ॥ गुणस्थानक इग्यारमेजी कांइ जाय पहुतो यो वीर ॥ जग० ॥ ३ ॥ प्रकृति अठावीस एहनी जी कांइ भाषी सिरि जिनभांन ॥ सित्तर कोडाकोडनीजी कांइ उतकृष्टी स्थिति मान ॥ जग० ॥ ४ ॥ सुंनकांनो कृश पांगुलो जी कांइ करण पूंछकरहीन ॥ व्रणी कृमी पूतिदेहालमे जी कांइ सुनी पेखत हुवेलीन ॥ जग० ॥ ५ ॥ कंथवियोगा कामनी जी कांइ जीवत हीं जरजाय ॥ हरिसनमुख करसींगडाजी कांइ प्राणगमावेगाय ॥ जग० ॥ ६ ॥ शचीपति[1] शचिपाये[2] पडी जी कांइ ललित वचन कहे एम ॥ आशपूरो निजदासनी जी कांइ अवमोसूं करो प्रेम ॥ जग० ॥ ७ ॥ चरम शरीरी जीवडाजी कांइ इणवस पडिया आय ॥ भुगती करस भोगावली जी कांइ सिद्धाकरम खपाय ॥ जग०

---

१ 'इंन्द्र, २ 'इन्द्राणी,

॥ ८ ॥ गोयमगणधर गुणनिलोजी कांइ ज्येष्ठ शिष्य सुवनीत ॥ वीरछतां नांहिंपामियो जी कांइ केवल ज्ञान पवित ॥ जग० ॥ ए ॥ राजुल देखी मोहियो जी कांइ रहनेमी अणगार ॥ भ्रष्टकियो नंदीसेणने जी कांइ अरणक आर्द्रकुवार ॥ जग० ॥ १० ॥ संभूतबंधव चित तणो जी कांइ कुंडरीक हुवोखवार ॥ सेठ माकंदिनो फीकरोजी कांइ जिन रखलीनोमार ॥ जग० ॥ ११ ॥ अषाढभूति अणगारने जी कांइ मोहनी दियोधकाय ॥ जोगतजीने भोग आदस्योजी कांइ घरनटवाके जाय ॥ जग० ॥ १२ ॥ इत्यादिकबहुजीवने जी कांइ मोहनी किया फजीत॥ धन मुनिवर संसारमेंजी कांइ मोह करम लियो जीत ॥ जग० ॥१३॥ विगत मोह सुख सासताजी कांइ पांमे शिवपदखेम ॥ छूटे भवदुःख फंदसे जी कांइ किसनलाल कहे एम ॥ जग० ॥ १४ ॥

॥ आज हिंदवाणी सूरजऊगियो ए दे० ॥

ऋषभ अजित संभवनमूं अभीनंदन सुमती देव जिनंदमोराहो ॥ पदमसुपारसनाथजी नमो चन्द्रप्रभू नितमेव ॥१॥ जिनंदमो राहो वीनतडी अवधारज्यो॥ आंकडी ॥ सुविधिशीतल श्रीश्रेयांस जी वंदू वासुपूज

जिनराय जि० ॥ विमल अनन्त धर्म शान्ति जी सिद्ध हुवा करमखपाय ॥ जि० वी०॥२॥ कुंथु अरे ह म ल्लिनाथजी मुनिसुव्रत नमूं जगतात जि०॥ नमियनाथ रठनेमजी पारस वीर विख्यात ॥ जि० वी० ॥ ३ ॥ इण चौवीसासूमाहिरो पूरण जागे छेप्रेम जि० ॥ अवर देव जाचण तणो मुजमन करने नेम ॥ जि० वी० ॥ ४ ॥ म्हारोमन जिनराजसूं लागरह्यो उत कृष्ट जि० ॥ आयसकूं नहीं स्वामिजी पिणसरधाठे म्हारी पुष्ट ॥ जि० वी० ॥ ५ ॥ जिणदिन नयणे नि रख स्युं पूरस्युं मनमाराकोम जि० ॥ जनम सफल जदजांणस्युं किसन कहे करजोड ॥ जि० वी० ॥६॥

॥ रुकमणकी लाज राखो ए दे० ॥

यांही रहो नेमरसियारे तुमयांहीर० तेरेचरन कमल मन वसियारे तु०॥ आंकणी ॥ सब जादवमि लव्याहन आये इन्द्र देख मन हंसियारे ॥ तुम० ॥ ॥ १ ॥ राजुलसखिया जान विलोकी रोमरोमहुलसि यारे ॥ तुम० ॥ २ ॥ पशुवनकेशिरदोषदिया प्रभु त ज राजुलवनवसियारे ॥ तुम० ॥ ३ ॥ संजमले प्रभु मुगत सिधाया अष्टकरम दलघसियारे ॥ तुम० ॥४॥

किसन कहे प्रभुध्यानधरू तेरा जिम चकोरखगससि यारे ॥ तुम० ॥ ५ ॥

सुंनेत्रावे गुलावी केवको म्हारो देवरियो नादान
उतारो वेवडो ए दे० ॥

समदृष्टी भविजीवने मुनिवर भापे एम ॥ घुरे नगारा कालतणां शिर गाफलवैठो केम ॥ १ ॥ सुज्ञानी चेतरे कछु करले सुकृत छोड कुटंवकोहेतरे निज तत्व पिछाणो खोलहियारोनेतरे इम परउपगारी सतगुरु हेलादेतरे ॥ आंकडी ॥ पण अतिचार निवारने समकित सेठीधार ॥ देवनिरागी गुरुनिरलोभी धरमदयासे सार ॥ सु० ॥ २ ॥ नरभव पायो नीठ सें सोविरथा मतिहार ॥ आश्रवलोभ दंभपरि हरिये करिये पर उपगार ॥ सु० ॥ ३ ॥ लख चौरासी जोनमे भमियो काल अनाद ॥ जपतप संजम खम समदमकर छोड सकल परमाद ॥ सु० ॥ ४ ॥ हटवाडो मेला जिसो मिलियो सहु परिवार ॥ सव संसार अथिर जिन भापो निश्चल धरम उदार ॥ सु० ॥ ५ ॥ तन धन जोवन कारमो संध्याराग समान ॥ चंचल आयु वेगनदीको अथवा चलदल पान ॥ सु० ॥ ६ ॥ करमविपाक उदय हुवा भुगते आपो आप ॥ पुदगल

सुखमे लीन हुवो तू मतकर भाभापाप ॥सु०॥७॥ मात पिता सुत भामनी संगन चाले आथ ॥ दानशील तप भावरूपिया संबल लेलो साथ ॥ सु० ॥ ८ ॥ परिग्रह ममता छोडने सुधराखो परिणाम ॥ किसन लाल कहे स्वर्गसुगतका सुखपासी अभिराम सु०९॥

॥ नाथ कैसे गजको फंद छुमायो ए दे० ॥

मनां तोने केईवार समझायो तोने अज हू ज्ञान नहि आयो ॥ आंकणी ॥ कवहुक ज्ञानी कवहुक ध्यानी कवहुक मांनी सवायो ॥ कवहुक जोगी कवहुक भोगी कवहुक रंकरु रायो ॥ मनां० ॥ १ ॥ कवहु आकाशमें कवहु पातालमें कवहुक तिरछो पलायो ॥ जल थल वसती उजाड पहाडमें निशदिन भ्रमण करायो॥मनां० ॥ २ ॥ सुंदर काममेविघन करे तू विगथामे काल गमायो ॥ अंकुशविन गजराजवण्यो तूं आहूं हीमद मांहिछायो ॥ मनां० ॥ ३ ॥ वाजी कुरंगपतंगसमीर थी शीघ्रगती सुरथायो ॥ तिणसूं हित्वरितगती परमां णूं तुजगति पारनपायो ॥ मनां० ॥४॥ उदधि तरंग ज्युं चंचल मरकटे ठेरू कियां दुखदायो ॥ सरपकी पूंछपें

---

१ 'घोडासे हिरणसे पतंग पवन देवतासे परमाणुसेभी शीघ्र गति, २ वानरो वाय भयो इत्यादि,

पांव दियोमांनु सूतोही सिंहजगायो ॥ मनां० ॥५॥ लिं
ग नपुंसक नाम धरावे तू मरदामें मरद सवायो ॥ ग
मनकरे पग पंख विना किम यह मोने इचरज आयो
॥ मनां० ॥ ६ ॥ सुमति सखी थारे दायन आवे कु
मति दियो जरमायो ॥ मिलकर चालीससेरंवएयो तूं
शंकनमांनत कायो ॥ मनां० ॥७॥ निरलज चोर क
ठोर महाठग डुष्ट मती दरसायो ॥ तंडुल मांछलो १,
तुज परसादे सातमी नरक पठायो ॥ मनां० ॥ ८ ॥
मरुदेविमाता जरत नरेश्वर प्रसनचन्द्र रुषिरायो ॥
होय सखा ऐसी मदत करेतो शिवपदल्यूं छिनमायो
॥ मनां० ॥९॥ एगे जिया पंण पंचाजया दस पुन सव
शत्रू जितायो ॥ धन्यनराते वसकर तुजने जीत नि
साणघुरायो मनां० ॥१०॥ तजकर कुन्द गुलाव चमेली
वांवल कुसुमे लुजायो ॥ किसनलाल कहे सुंणमनम
धुकर शिर मूंड्यो तू मुंडायो ॥ मनां० ॥ ११ ॥

॥ गरवाकी देशी गुजरातीमें ॥

॥ हांरे जीवा आगम[2] ज्ञान कह्या नव पूरव जैन
मेरे लाल ॥ हांरे० ॥ आगमीक[3] नव ऊपर पंच सुवे

---

१ '४० सेरोंका १ मन,

२ ' तेणपरंभिन्ने सुत्तयणा, इति नंदीसूत्रे, ३ 'संपूर्ण ज्ञान,

नमें रे लोल ॥ १ ॥ हांरे० ॥ ब्रह्मज्ञान दरम्यान सुरत आतम सही रे लोल ॥ हांरे० ॥ जामें शुद्ध उपयोग दशा ऐसी कही रे लोल ॥ २ ॥ हांरे० ॥ उदासीन जग मांहि रहे वैरागमें रे लोल ॥ हांरे० जोग मिले कव आय करूं घर त्यागमें रे लोल ॥ ॥ ३ ॥ हांरे० ॥ जाती समरण होय संनी नवी जीवकूं रे लोल ॥ हांरे० ॥ पूरव नव विस्तार लखे सुध पीवकूं रे लोल ॥ ४ ॥ हांरे० ॥ सहज नाव उपदेश निमित सूं संपजे रे लोल ॥ हांरे० ॥ मतिमें आतमज्ञान मिथ्या मतिकूं तजे रे लोल ॥ ५ ॥ हांरे० ॥ अवधि ज्ञान मरयादा है गती च्यारकी रे लोल ॥ हांरे० ॥ मनुष्य तथा तिरयंच देवता नारकी रे लोल ॥ ६ ॥ हांरे० ॥ घटे वढे थिर रहे बहु परकार है रे लोल ॥ हांरे० ॥ ए पण आतम ज्ञान विवेक विचार है रे लोल ॥ ७ ॥ हांरे० ॥ मन परयव परिमाणसूं लक्ष पेतालसो रे लोल ॥ हांरे० ॥ मुनि महात गणधार लखे सुविशाल सोरे लोल ॥ ॥ ८ ॥ हांरे० ॥ जाणे मनकी वात मनुष्य तिरयंचकी रे लोल ॥ हांरे० ॥ इणकूं आतमज्ञान कह्यो सुख संचकी रे लोल ॥ ए ॥ हांरे० ॥ केवल ज्ञा

समान त्रान नहि खलकमें रे लोल ॥ हांरे० ॥ सब ब्रह्मांड विचार लखे सहु पलकमें रे लोल ॥ १० ॥ हांरे० ॥ संपूरण परकाश आगमगमकूं लखे रे लोल ॥ हांरे० ॥ ऐसो आतमज्ञान किसन आखे अखे रे लोल ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आगम ज्ञानी है नही नही आगमिक आज॥
आगम है सो अल्प है समझ सुधारो काज॥१२॥इ०

॥ नीवडलीरा लावातीखा पान कुण रे संतावे
हरिया रूखनेजी म्हाराराज ॥ ए देशी ॥

॥ सतगुरुजी परम दयाल विचरत आया त्रवि जन तारवाजी मुनिराज ॥ फलिया मनोरथ साल त्रले ही पधास्या जनम सुधारवाजी मुनि० ॥ १ ॥ धन घडी धन म्हारा त्राग धनरो दिहाडो म्हारे आजरोजी मुनि० ॥ हिये हुवो हरष अथाग दरसण पायो धरमरी जहाजरोजी मुनि० ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी विचारा त्रंडार तपोधन त्रूमी जिम त्रारी खमाजी मुनि० ॥ जागी घटमें वडी च्यार प्रकार पाखंडी के

---

१ 'उत्पात विनय क्रम अवस्थाको प्राप्त हुवो, २ 'हाती,

रि मद गालण हरी समांजी मुनि० ॥ ३ ॥ वाणी थारी पीयूष[1] समान नविक जीवाने लागे सुहावणी जी मुनि० ॥ विधियुत वा चोथे वखान निंन निंन करके समझावणीजी मुनि० ॥४॥ दशविध यती धरम धार सतावीस गुणाकरने दीपताजी मुनि० ॥ शुध पालो अखंरु आचार निश दिन मन इंदस्यां जीपताजी मुनि० ॥ ५ ॥ सिंधु जिम गुणारा गंनीर फटिक रतन जिम निरमल हियोजी मुनि० ॥ संजम में मेरू जिम धीर सकल जीवाने अनयथे दियोजी मुनि० ॥ ६ ॥ शिषथारा मुगतारीमाल विनेवंत आज्ञाकारी आपराजी मुनि० ॥ जग सहु जाण्यो भ्रम जाल ततखिण गेड्या मारग पापराजी मुनि० ॥७॥ सुमति गुपति सूं पूरण प्रेम नरनव पामी सफलोथे करोजी मुनि० ॥ तपजोथे दिनमणी जेम ज्ञानादी वट शाखा जिम विस्तरोजी मुनि० ॥ ८ ॥ दीपावो जिन धरम रसाल जंगम तीरथ नवि मन नायणा जी मुनि० ॥ थोडासा गुण गाया किसन लाल गुणि जन मन नाया शिव सुख दायणाजी मुनि० ॥ ९ ॥

---

१ 'अमृत,

॥ आधीरा अमलामें होको प्यारो लागेजी राज ॥ ए देशी ॥

॥ चतुरंगणी सेनासजीहो नृप कुटंव लियो सव साथ विधिपूर्वक वंदना करी हो नृप स्तवना करे जोडि हाथ ॥ १ ॥ सुगुरुमोने चलो समझायोजी राज मिथ्या मत खूब वुझायोजी राज ॥ आंकणी ॥ जीव काया एक जाणतोजी मुनि निणतो न पुन्य न पाप ॥ स्वर्ग नर्क नहि मानतोजी म्हारी मलिन वुद्धि हुंती धाप ॥ सु० ॥ २ ॥ जिंन जिंन कर सम झा वियोजी मोने हेतु दृष्टांत लगाय ॥ उन मग जातो राखियोजी मोने दियो सुध पंथ वताय ॥ सु० ॥ ३ ॥ अकमात पुन्य जागियोजी मुनि जागियो चरम अज्ञान ॥ पारस सूं भेटा हुवाजी मुनि चल उदियो आज चान ॥ सु० ॥ ४ ॥ जंगम तीरथ जागताजी थारो अदभुत ज्ञान उदार ॥ कहा लोंवरनुं वुधि आपरीजी मुनि सुरगुरु पामे न पार ॥ सु० ॥ ५ ॥ पतित उधार न आवियाजी मुनि तार न तिरन जिहाज ॥ दरस अपूरव देखनेजी म्हारो सफल जनम हुवो आज ॥ सु० ॥ ६ ॥ वलि हारी तुम ज्ञान कीजी मुनि कर दियो मुजने निहा

ल ॥ भव जल डूबत तारियोजी मुनि नमो नमो तुजने त्रिकाल ॥ सु० ॥ ७ ॥ असलजती निरमल मतीजी मुनि भगवन परम कृपाल ॥ करुणा करि मुजने दियोजी मुनि समकित रतन रसाल ॥ सु० ॥ ८ ॥ उपगारी शिर सेहरोजी मुनि धनठे यो चित परधान ॥ धरम दलाली परम करीजी मोने मिसकर[1] लायो उद्यान ॥ सु० ॥ ए ॥ कठिन वचने[2] मुखे बोलियाजी मुनि विन परमारथ लाध ॥ अविनय कीधो आपरोजी मुनि खमजो सकल अपराध ॥ सु० ॥ १० ॥ निरमल जैवातृक[3] जिसाहो मुनि सागर जेम गंभीर ॥ वसुमती जिम भारी खमाजी मुनि कांचनगिरि जिम धीर ॥ सु० ॥ ११ ॥ भविक कमल प्रतिबोध वाजी मुनि सुरज प्रकाशक आप ॥ शीतल चंदन बावनाजी मुनि मेटण भव डुखताप॥ सु० ॥ १२ ॥ बहु जन समकित पामियाजी मुनि अकथ कियो उपगार॥ परदेशी अनर्म[4] नमावियोजी मुनि धन धन केशी कुवार ॥सु०॥१३॥ सकलपदारथ पेखताजी ज्ञानी गुरु सम जगमें न कोय ॥ किसन कहेगुरु देव सूंजी शिष जरणक बहु न होय ॥१४॥

१ 'घोरा फेरणको मिसकर'. २ 'जड्डा मुड्डा इत्यादि'. ३ चं° ४ 'बडो भारी राजा'.

॥ नागजीकी ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे मानवी जमतां चिहुं गति माय रे काई नर जव पायो नीठसू रेजी ॥ हां० ॥ धर्म कियो नहि जाय रे काइ डुरगति गामी धीठसूं रेजी ॥१॥ हां० ॥ शिरपर घूमें कालरे कांइ खवर नही खिण मातरीरे जी ॥ हां० ॥ चेतो सुरति संजाल रे कांइ तज मनीषा जिव घातरी रेजी ॥ २ ॥ हां० ॥ स्वार थियो संसार रे कांइ मत कोइ जाणो आपणो रे जी ॥ हां० ॥ हिंसा धरम निवार रे कांइ संवर मारग थापणो रे जी ॥ ३ ॥ हां० ॥ तज कर सगली आथरे कांइ परजव जासी प्राणियो रे जी ॥ हां० ॥ संवल लेलो साथरे कांइ आगे नहि हठ वाणियो रें जी ॥ हां० ॥ धरो धरम सूं प्रेम रे कांइ सुधसर धारी खप करो रे जी ॥४॥ हां०॥ किसन लाल कहे एमरे कांइ शिवरमणी वेगी वरो रे जी ॥ ५ ॥

॥ घूमरकी ॥ देशी ॥

ती कहे कर जोमी हांजि मोने

। महाराज ॥ रा० ॥ टेर ॥

हांजी कांइ नवमें

तोडी ॥ महा० ॥ रा० ॥ १ ॥ खूब वरात वणी चतु रंगी ॥ हां० ॥ जादव लाखो कोडी महा० ॥ रा० ॥ ॥ २ ॥ तुरत पुकार सुणी पसुवनकी ॥ हां०॥ जाणी मोने अव गुण ढेडी ॥ म्हा० ॥ रा० ॥ ३ ॥ मेरु च ढाय रसातल पटकी ॥ हां० ॥ म्हारी करुणा न आ णी थोडी महा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ दंपति मुगति गया तसु वंदना ॥ हां० ॥ किसन करे शिर मोडी ॥ महा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ अथ श्री सनतकुमार राज ऋषि चोढालियो ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखदाई शासन धणी त्रिभुवन सान सहाय॥ भाव सहित सदगुरु नमु वली शारद वरदाय ॥१॥ ये त्रिहुने त्रिविधे करी सीस नमू कर जोड ॥ गुण गावो गरुवा तणां मठर मनसूं छोड ॥ २ ॥ सुख डुख करम तणे वसे भोगवे इण संसार ॥ जोवो जग उत्तम पुरुष चक्री सनतकुमार ॥ ३ ॥ कुष्टादि कनी वेदनां अशुभ करम संजोग ॥ निजकृत भो गवी रायजी आप थया आरोग ॥ ४ ॥

---

१ 'खीजती'

॥ नागजीकी ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे मानवी नमतां चिहुं गति माय रे काइ नर नव पायो नीठसू रेजी ॥ हां० ॥ धर्म कियो न हि जाय रे काइ दुरगति गामी धीठसूं रेजी ॥१॥ हां० ॥ शिरपर घूमें कालरे कांइ खबर नही खिण मातरीरे जी ॥ हां० ॥ चेतो सुरति संनाल रे कांइ तज मनीषा जिव घातरी रेजी ॥ २ ॥ हां० ॥ स्वा र थियो संसार रे कांइ मत कोइ जाणो आपणो रे जी ॥ हां० ॥ हिंसा धरम निवार रे कांइ संवर मा रग थापणो रे जी ॥ ३ ॥ हां० ॥ तज कर सगली आथरे कांइ परनव जासी प्राणियो रे जी ॥ हां०॥ संवल लेलो साथरे कांइ आगे नहि हठ वाणियो रें जी ॥ हां० ॥ धरो धरम सूं प्रेम रे कांइ सुधसर धारी खप करो रे जी ॥४॥ हां०॥ किसन लाल कहे ए मरे कांइ शिवरमणी वेगी वरो रे जी ॥ ५ ॥

॥ घूमरकी ॥ देशी ॥

क॰ज मती कहे कर जोमी हांजि मोने विगर

ठेमी महाराज ॥ रा० ॥ टेर ॥ आठ

पुरवली हांजी कांइ नवमें नव किम

की’.

तोडी ॥ महा० ॥ रा० ॥ १ ॥ खूब वरात वणी चतु रंगी ॥ हां० ॥ जादव लाखो कोमी महा० ॥ रा० ॥ ॥ २ ॥ तुरत पुकार सुणी पसुवनकी ॥ हां०॥ जाणी मोने अव गुण ठमी ॥ म्हा० ॥ रा० ॥ ३ ॥ मेरु च ढाय रसातल पटकी ॥ हां० ॥ म्हारी करुणा न आ णी थोमी महा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ दंपति मुगति गया तसु वंदना ॥ हां० ॥ किसन करे शिर मोडी ॥ महा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ अथ श्री सनतकुमार राज ऋषि चोढालियो ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखदाई शासन घणी त्रिजुवन साम सहाय॥ जाव सहित सदगुरु नमु वली शारद वरदाय ॥१॥ ये त्रिहुने त्रिविधे करी सीस नमू कर जोड ॥ गुण गावो गरुवा तणां मठर मनसूं ठोम ॥ २ ॥ सुख डुख करम तणे वसे जोगवे इण संसार ॥ जोवो जग उत्तम पुरुष चक्री सनतकुमार ॥ ३ ॥ कुष्टादि कनी वेदनां अशुज करम संजोग ॥ निजकृत जो गवी रायजी आप थया आरोग ॥ ४ ॥

१ 'स्त्रीजर्ता'

धिरग पणो रे संसार जीतव थोमोने
दुख घणो ॥ ए देशी ॥

॥ हथनापुर सुख दाय अमरापुर सम शोभतो जी ॥ पाले षटखंड राज पृथवी पति अति दीपतो जी ॥ १ ॥ धरम तणां फलसार चतुर सुणो मन थिर करीजी ॥ आंकणी ॥ नामे सनतकुमार आण सहु शिरपर धरेजी ॥ राजन सहू सव तीसकर जो मी सेवा करेजी ॥ धरम० ॥ २ ॥ सोले सहस सुर सेव मुह आगल पाला चरेजी सुरपण वीस हजार देह तणी ठाया करेजी ॥ धरम० ॥ ३ ॥ चवदे रय ण अधिकार पुन्य तणां परभावसूंजी ऋद्धि सिद्धि नवेई निधान पूरव पुन्य पसावसूंजी ॥ धरम० ॥ ॥ ४ ॥ रमणी राज कुमार चौसठि सहस अंते वरेजी अपठरनो अवतार इंद्र तणी जाणे परीजी ॥ध०॥५॥

॥ कवित्त ॥

॥ चंद हूकी मंदता दिखावे मुख चंद हुते पंक ज ललुनाई हरे लोचन प्रभावते हेमको वरन हरे दे हे वरन हुंते हरे अलि मेचकता कचके वनावते॥ गैलसे नितंवविंव गौरव विलासनीके हरे करि कुंभ

१ 'उत्तम' २ 'भ्रमरका कालापनां,

ठवि कुचके उठावते मृडुताके अेनवेन वनिता समू
ह नमे एते गुन मंडन हे सहज सुभावते ॥ १ ॥
॥ वोले मीठीजी वाण सुसनेही नारी खरीजी
पुन्य तणां फल एह पुन्य करो जलट धरीजी ॥ ध
रम० ॥ ६ ॥ लख चोरासीजी जाण हयगय रथ ति
हुं जुवजुवाजी पायक छिनवे कोरू विद्याधर सेवक
हुवाजी ॥ धरम० ॥ ७ ॥ ऋद्धितणो विसतार पार
न पावेको सहीजी सुरनर सारेजी सेव आण उथा
पेको नहीजी ॥ धरम० ॥ ८ ॥ तेज प्रताप अखंड
राजवियां शिर राजवीजी कलपतरू सम एह इन्द्र
उंपम भापें कवीजी ॥ धरम० ॥ ए ॥ पाले रूडीजी
रीत राजकाजन्याये करीजी किसन कहे कर जोड
नित वांदू भावे धरीजी ॥ धरम० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्रवरत चोथो चतुर पाले सुखमें राज ॥ एक
दिवस सुरवर इसो परसंसे इंदराज ॥१॥ भूमंडल मृत
लोकमें रतिपंति[1] नो अवतार ॥ रूपवंत परसंसियो चक्री
सनतकुमार ॥२॥ तिण सरिखो सुरको नही इम जंपे सु
रराय ॥ वार वार इम उचरे अहो मानव कहिवाय ॥३॥

---

१ कामदेव,

॥ ढाल २ कसियाने तंवुडा सिंहलराय खडा किया रे म्हारा साहिवा ॥ ए देशी॥

॥ इन्द्र वचन असहतो सुर आयो मानव लोकमें रे म्हारा साहिवा जीरण ब्राह्मण रूपेजी होय राजेसर सुण अरजी राज पोल ऊनो रह्यो रे म्हा० ॥ पोलीडे रोकी राख्योजी सोय ॥ १ ॥ ब्राह्मण ऊनो नापे देवो दरसन मोनणी रे म्हारा साहिवा ॥ आंकणी ॥ कुंण छे रे परदेशी किम तू इहां आवियो रे म्हा० ॥ आयो छु राजन जोवाने रूप द्विजवर हारेद लेने न फर गयो राजा कनेरे म्हा० जाय जणायो नूप सरूप ब्राह्मण० ॥ २ ॥ राज हुकम मगावी मायावी द्विज मांहे गयो रे ॥ म्हा० ॥ नृपति नापे रूडीजी रीति किहांथकी तुं आयो उमायो ब्राह्मण डोकरा रे ॥ म्हा० ॥ दूरथी आयो देखण प्रीति ब्राह्मण० ॥३॥ आश्चजकारी रूप तुमारो श्रवणे में सुण्यो रे ॥ म्हा०॥ तिण कर आयो देख-

---

१ 'अनिप्राय'.

२ कारेणु करणेंविना सिद्ध हुवे जो रूप ॥ सो नवतु तव दीर्घ इंयो आशिरवाद अनूप ॥१॥ एक सहस दोय सहस चारे आठ अंमड्यो ॥ एता देव रक्षा करो इड्यो विड्यो तिरड्यो ॥ २ ॥'

ण काज देश अने परदेशी हुं तो तुमने पूछतो रे ॥
महा० ॥ नयणे निरख्यो नूपति आज ब्राह्मण०॥४॥
जेहवो श्रवणे सुणियो तेहवो में नयणे निरखियो रे
महा० ॥ अदभुत राजन तुम चोजी रूप एम सुणी
ने गरवे राजे सरवलतो इम कहे रे ॥ महा० ॥ जी
छे महारा रूप तणी चूप ब्राह्मण० ॥ ५ ॥ हिवडां
जावो सांजसमें तुं जोयवा आवजो रे ॥ महा० ॥
ब्राह्मणने दीधी राजन सीख पृथवी पति तेडाव्या
ततखिण सगला राजवी रे ॥ महा० ॥ आया ते हर-
षे धरताजी वीख ब्राह्मण० ॥ ६ ॥ वसन अमोलक
अंगे आभूषण पहिर्या नवनवा रे ॥ महा० ॥ सिंहा
सन बेठो नरपति आय शिरपर मुकट विराजे विहुं
पासे चामर सुरधरे रे ॥ महा० ॥ छत्र आकाशे अ
धिक सुहाय ब्राह्मण० ॥ ७ ॥ कुसुमोकर जिम सो
हे कुसुमाकर मरवो केतकी रे ॥ महा० ॥ तिण
सम सोहे सहुदर वार राजेसर अति सोहे मन मो-
हे सुरतरु सारिखो रे ॥ महा० ॥ तेडायो ब्राह्मण स
भारे मझार ब्राह्मण० ॥ ८ ॥ अधुना रूप निहालो
वाम्भव परदेशी तुमें रे ॥ महा० ॥ निरखीने ब्राह्मणे
धूण्योजी सीस किण

पो सोनणी रे ॥ सहा० ॥ पूछे छे वछतो पुरवीनी हैत्र ब्राह्मण० ॥ ए ॥ रूप नहीयो पुरवे निरख्यो ने राजन ताहरो रे ॥ सहा० ॥ यत्नीने जोवो यीक तंबोल इम कहिने ते ब्राह्मण यहु तो अदरो श्यानके रे ॥सहा०॥ विगड्यो राजन रूप अतोल ब्राह्मण०॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ निज तन निरखे रायजी उपनो मन वैराग॥ ए काया नहि माहरी तो सुं अवरस राग॥१॥ए जग सगलो कारिमो कारीमो जोवन रूपाधन धरती तहु कारमी एम विचारे नृप ॥ २ ॥ राज काज सहु गो जने नीकलियो वनवास ॥ वैरागे संजम लियो तहु ने छोडि निरास ॥ ३ ॥

ढाल ॥ प्रहने कहे नृप चंद हो गुणरा नायक कागल देजोरे हाथ गुणावलीजी ॥ ए देशी॥

॥ राखा पत्नणे छे एम हो प्रीतम मोरा यहु ठु लीणी हो तुम विना किम रहेजी एकलडी ...

... हो प्रीत० ॥ किम मनवाली हो सुंदर ...

अवगुण गुणवंत हो ॥ प्रीत०

...सनेही थयाजी किण तु...

...० ॥ किण तुम राजन ...

कम उथापियोजी ॥ २ ॥ किणथारी लोपीजी आण हो ॥प्रीत०॥ किण दुख दीधो हो साहिब राजनेजी ए सुंदरि सुवनीत हो ॥ प्रीत० ॥ जी जी जी करती हो हाजर तुम कनेजी ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ देखिवे में उत्तम कहा हे मृगलोचनीको प्रेमते प्रसन मुखपंकज प्रमानिये सूघिवेमें कहा तेहि आनन सुगंधी पो न सुनिवेमें कहा तेहि वचन वखानिये ॥ स्वादुमें कहा हे तेहि अधरसुधाको पान परस कहा हे तन ताहिको सुगानिये कहा नव जोवनमें ध्यान करिवेके जोग भामनीको विभ्रम विलास जग जानिये ॥ ३ ॥ किणथाने दीधी कुसीखहो ॥ प्रीत० ॥ किण रे धूतारे हो राजन भोलियाजी राज तजो किण काज हो ॥ प्रीत० ॥ ए सुख सुंदर मंदिर मालियाजी ॥ ४ ॥ ए तुम रमणी सरूप हो ॥ प्रीत० ॥ मोहन वेली हो गजगति गामनीजी तुम विरहे महाराय हो ॥ प्रीत० ॥ ए तुम हीणी हो दीणी भामनीजी ॥ ५ ॥ ए कामण सुख माल हो ॥ प्रीत० ॥ कोमल काया हो गुणमणि उरडीजी वोलो मीठडा वोल हो ॥ प्रीत०॥ निजर नि

थो मोत्तणी रे ॥ मह्रा० ॥ पूठे ठे वलतो पृथवीजी ईश ब्राह्मण० ॥ ए ॥ रूप नहीयो पुरवे निरख्यो जे राजन ताह्ररो रे ॥ मह्रा० ॥ परखीने जोवो पीक तंबोल इम कहिने ते ब्राह्मण पहु तो अपणे थानके रे ॥मह्रा०॥ विगड्यो राजन रूप अमोल ब्राह्मण०॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ निज तन निरखे रायजी उपनो मन वैराग॥ ए काया नहि माह्ररी तो सूं अवरस राग॥१॥ए जग सगलो कारिमो कारीमो जोवन रूप॥धन धरती सहु कारमी एम विचारे नृप ॥ २ ॥ राज काज सहु ठे रूने नीकलियो वनवास ॥ वैरागे संजम लियो सहु ने ठोडि निरास ॥ ३ ॥

ढाल ॥ प्रेक्षने कहे नृप चंद हो गुणरा नायक कागल देजोरे हाथ गुणावलीजी ॥ ए देशी॥

॥ राण्या पत्तणे ठे एम हो प्रीतम मोरा यह सुख लीणी हो तुम विना किम रहेजी एकल्ली निरधार हो ॥ प्रीत० ॥ किम मनवाली हो सुंदर थिर रहेजी ॥ १ ॥ विन अवगुण गुणवंत हो ॥ प्रीत० ॥ इम किम ठोरूी हो निसनेही थयाजी किण तुम लोपीजी कार हो ॥ प्रीत० ॥ किण तुम राजन हु

कम उथापियोजी ॥ २ ॥ किणथारी लोपीजी आण हो ॥प्रीत०॥ किण डुख दीधो हो साहिब राजनेजी ए सुंदरि सुवनीत हो ॥ प्रीत० ॥ जी जी जी करती हो हाजर तुम कनेजी ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ देखिवे में उत्तम कहा हे मृगलोचनीको प्रेमते प्रसन मुखपंकज प्रमानिये सूंघिवेमें कहा तेहि आनन सुगंधी पो न सुनिवेमें कहा तेहि वचन वखानिये ॥ स्वादुमें कहा हे तेहि अधरसुधाको पान परस कहा हे तन ताहिको सुगानिये कहा नव जोवनमें ध्यान करिवेके जोग भामनीको विभ्रम विलास जग जानिये ॥ ३ ॥ किणथाने दीधी कुसीखहो ॥ प्रीत० ॥ किण रे धूतारे हो राजन भोलियाजी राज तजो किण काज हो ॥ प्रीत० ॥ ए सुख सुंदर मंदिर मालियाजी ॥ ४ ॥ ए तुम रमणी सरूप हो ॥ प्रीत० ॥ मोहन वेली हो गजगति गामनीजी तुम विरहे महाराय हो ॥ प्रीत० ॥ ए तुम हीणी हो दीणी भामनीजी ॥ ५ ॥ ए कामण सुख माल हो ॥ प्रीत० ॥ कोमल काया हो सुं रडीजी वोलो मीठडा वोल हो ॥ प्रीत०॥

हालो हो गुणवंत गोरडीजी ॥ ६ ॥ थे छो म्हारे जीवन प्राण हो ॥ प्रीत० ॥ तुम विण अवला हो अंकुश केहवोजी किम जासी दिनरात हो ॥ प्री०॥ हिवडे विमासी हो राजन एहवोजी ॥ ७ ॥ निठुर थया कहो केम हो ॥ प्रीत० ॥ हंसकर पूछो हो सुख डुख वातमीजी राजन सह सवतीस हो॥ प्रीत० एह तुम सेवा हो करे दिन रातडीजी ॥ ८ ॥ इम कह्या वचन अनेक हो ॥ प्रीत० ॥ राजेसर राख्यो हो थिर मन आपरोजी इम विचरत षटमास हो ॥ प्रीत० ॥ सहु जन जापे हो राज मया करोजी ॥९॥ सुरपति ब्राह्मण रूप हो ॥ प्रीत० ॥ सहुने समजावि हो पाछा वालियाजी सुरपति दीधी सीख हो ॥ प्री०॥ मन वचन काया हो संजम पालियाजी॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवरने परणाम कर इन्द्र गयो निज ठाम॥ सनतकुमार महा रूपी पाले संजम ताम ॥ १ ॥ पाप करम जोगे करी प्रगट्यो रोग करूर ॥ गलित कोढ नामें कह्यो अशुभतणे अंकूर ॥ २ ॥ अति डुख पावे साधजी करणी डुक्कर कार ॥ अहियासे शुभ भावसूं अप्रतिवंध विहार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कररो कंकण तोरु दूजे दिन
हालियो प्रीतमजी ॥ ए देशी ॥

॥ इक दिन फिर आवे रूप वणावे इन्द्ररे मुनि वरजी वरु वैद्य कहावे नारु जोवावे वृन्दरे ॥ मु०॥ मुनि सनत जणावे वचन सुणावे कांन रे ॥ सु० ॥ आडंबर नावे मोटे दावे मान रे ॥ सु० ॥ १ ॥ हुं तो वैद्यक कहांऊं रोग मिटावुं जाण रे ॥ सु० ॥ तुम कोढ गमावुं दूर नशावुं ताण रे ॥ मु० ॥ इम बोले वाणी मनमें आणी राग रे ॥ मु० ॥ गोली गुण खाणी जाण पिछाणी तो लाग रे ॥ सु० ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ तव ऋषजी नाषे कांइ न राखे काण रे ॥सु० तुं तो सांचो ही नाषे सहु जन साखे वाण रे ॥सु० मंत्र यंत्रने जापे फेर न व्यापे जोय रे ॥ सु०॥ सहु पापनें कापि मुगती न आपे कोय रे ॥ मु० ॥ ३ ॥ सो तो औषध दीजे हरष धरीजे अंग रे ॥ सु० ॥ करुणा मोह कीजे यो जस लीजे रंग रे॥ सु० ॥ तव इन्द्र अपूठो मुनि दृढ दीठो सूर रे ॥ सु०॥ संजम गुण तुठो अमृत बूठो पूर रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ सुरपति गुण गावे सीस नमावे पाय रे ॥ मु० ॥ मुनि गरव न आवे इन्द्र सिधारे ठाय रे ॥ मु० ॥ मुनि चा

रित पाले दूषण टाले काय रे ॥ मु० ॥ सब पाप पखाले तन उजवाले जाय रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ शुन्न भावना भावे करम खपावे साध रे ॥ मु० ॥ अति वेदन पावे ध्यान गमावे व्याध रे ॥ मु० ॥ तीन लाख प्रमाणे सरव वखाणे आय रे ॥ मु० ॥ अण सण शुन्न जाणे अमर विमाणे जाय रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ दोय अरथ जणाया अमर कहाया एम रे ॥ मु० ॥ गत देव सिधाया तो अंत वताया केम रे ॥ मु० ॥ फिर केवल नाणी वदे जिन वाणी जेह रे ॥ मु० ॥ सांची कर जाणी नविक सुहाणी तेह रे ॥ मु०॥७॥ धन धन रुषिराया प्रणमुं में पाया नित्त रे ॥ मु० ॥ गुण हरषे गाया सनत सुहाया चित्त रे॥मु०॥७॥गुरु नंदराम कहाया तास पसाया जेह रे ॥ मु०॥ सिख किसन रचाया वयण सुणाया एह रे ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ कलशः ॥

॥ संमत पांडव बाण निधि शशि जय नगर सुख वास है,भाद्रव मासे मन हुलासे बीज सुकल उजास है ॥ श्रीसनत गायो मन सुहायो पायो परमानंद ए, कवि किसन पभणे धन्य मुनिवर चरन नमुं सुख कंद ए ॥१॥ इति श्रीसनतकुमार राजरुषि चोढालियो॥

॥ अथ विवेकमंजरी ॥

॥ दोहा ॥

॥ नमो देव अरिहंतजी गुरु गिरवा निगरंथ ॥ धर्म केवली नाषियो यह अपवर्ग सुपंथ ॥ १ ॥ कुमति लता का पण असी समकित सुगम उपाय ॥ वरनु विवेक मंजरी चतुर सुनो चित लाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ प्राणी करम समो नहि कोइ ॥ ए देशी ॥

॥ अपणा अवगुण आपन देखे देखे अवगुण परका ॥ यह विपरीत मिथ्याती सरधा दास कहावे हरकारे ॥१॥ प्राणी अनुनव ज्ञान विचारो ॥आंकडी॥ हिंसा करे हरष मन आणे धरम करम नहि जाणे ॥ परलेका तो जीव वखाणे ठाकुरकू पहिचानेरे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ठाकुर आप हराम करावे चोरी सूं पकडावे ॥ फिर उवाकूं गरदन मरावे यह तेरे मन आवे रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ इण वाता लायक नहि नायक उवे देखणका गरजी ॥ दुनिया उनकूं एव लगावे क्या सायवहे दरजीरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कुंण कुंण करम करे जगवासी साहिव यूं फुरमावे ॥ है परतीत तुंमारे मनमें मुजकूं मूल न नावे रे ॥ प्रा० ॥५॥

कर रेखा जिस सब कुछ देखा गुरु तिहुं भुवन भजे रे ॥ करता पुरष कहां छिप बैठो निजरन आयो मे रे रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ साहिबमें दोय बात नही हे क्यूं बदनामी दीजे ॥ हे करतूत शुभाशुभ अपणी अपणे ही शिरलीजे रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ साहिबकूं करता नहि माने जैनी जीपे जमकूं ॥ जैन बरोबर ज्ञान नही हम सब मत देख्या तमकूं रे ॥ प्रा० ॥८॥ किण करणी सूं साम कहाया बात बतावे तहां ते॥ निराकार लेखा कुंण मागे कागद कलम कहां तेरे॥ ॥ प्रा० ॥ ए ॥ चवदे राच चराचर देख्या छांनी वात न कांइ ॥ भणतो और कह्यो नहि करता हे अपणी विकसाई रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ सवही चीज हुकमसे हरिये हाकमसे क्युं डरिये ॥ पाप करतही पार उतरिये तो करणी क्युं करिये रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ हरप शोक दोनुं पर हरिये समता भाव विचरिये॥ साहिबके शिर दोष न धरिये दुख सुख अपणा भरिये रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ साहिब आप कहां ते आया जीव कहां ते लाया ॥ मात तात कुंण कुलमें जाया जात कहां कह लायारे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ कुंण सरूप उस साहिब केरा कहां साहिबका डेरा ॥ ए

ती वात मुझे वतलावो कैसा साहिव तेरा रे ॥ प्रा०
॥ १४ ॥ मेरा साहिवमें पहिचाणुं और कहा कोऊ
जाणे ॥ द्वीप समुद्र कही नहि संख्या नवसत सूढ
वखाणे रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ कूपक मीडक मान सरो
वर महिमा नाहि मनंता ॥ केवल ज्ञानी और अ
ज्ञानी अन्तर जाण अनंता रे ॥ प्रा०॥ १६ ॥ जसी
तथा असमान चिहुं गति जगत मुगति कहि लावे॥
कुण पहिली कुण पीछे कहिये जुगल कह्यो नहि
जावे रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ जीव अजीवरु इंडो पछी
वीज तरू नरनारी ॥ इत्यादिक प्रश्नोत्तर प्रभुजी न
हि भाष्या तिण वारी रे ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ किण विध
जीव जसा जग मांही किण विधि जीव उपाया ॥
मात न तात न जात जणाया आदन अंत वताया
रे ॥ प्रा० ॥ १९ ॥ यह अनादिकी थित है युंही
मति संसै मन आणो ॥ जीव अरूपी जगमें डोल्यो
आपो आप पिछाणो रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ जो ब्रह्मांड
तणीथित रचनासो कोउ करता नाही ॥ यह चेतन
तन करता हरता वंधन मुकति सिलाही रे ॥ प्रा०
॥ २१ ॥ उर कोऊ करता ठहिरावे कहि तन वणत
गुसाइ ॥ जो करतासो भुगता जाणो इणमें संसे

नाही रे ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ पाप पुन्य वेउ संगी मेरे सुख दुख करता जाणु ॥ नवग्रह भूत नवानी नैरं इणकूं नही पहिछाणुं रे ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ करता था पे उंर अज्ञानी ज्ञानी ज्ञान विचारे ॥ उण साहिव के सरव सरीखा नहि तारे नहि मारे रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २४ ॥ लोक कहे साहिव हे करता सोमेरे मनना वे ॥ जो कोउ वालियो वारस होवे तो युंनाड कटा वे रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ हुकम विना तो पातन हाले मुल्लांक्युं घर घाले ॥ कौण निसाफ किया काजीने जीव जवेह करगारे रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ पैदांह कर के सीस कटावे उवे साहिव है कैसा ॥ मूरख लोक लखे नाहिवाकूं उवे तो दरपण जेसा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २७ ॥ ज्युं दरपणमें सव कुछ दीसे दरपणमें नवि कारा ॥ त्युं उवे जोति सरूप विलोके सवकूं सवसे न्यारा रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ उणकी महिमा है उनही में नाम निरंजन धरता ॥ हेनाही नाही हे निरमल नहि करता नहि हरता रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ साहिव से मेलाप दुहेलो पंथ सुगुरु वतलावे ॥ फरचो होय चिहुं गति सेती तव पंचम गति पावे रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ साहिवके दरवार सिधावे फिर पीछो नहि

आवे ॥ असल रामको राज टिगाटिग झिग मिग जोति सुहावे रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥ एक न भूला दोय न भूला भूला सरव अज्ञानी ॥ एक न भूला ब्रह्म सुज्ञानी अध्यातम सरधानी रे ॥ प्रा० ॥ ३२ ॥ सुलटी वात सरव नय समजे वादन विवादन ववाके ॥ सो समकित सुध सरधा धारी भूल भरम नहि ताके रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥ कुण गुरु चेला ज्ञान डुहेला आप अकेला आया ॥ स्वांग धारि करि संत कहाया खोटा चलण चलाया रे ॥ प्रा० ॥ ३४ ॥ सांचो पंथ दिखावे सवकूं निरमोही निरदावे ॥ करणी करे करम सूं न्यारा सोही साध कहावे रे ॥ प्रा० ॥३५॥ समरस लीन सुमारग चाले दान दया अरु दमता ॥ ताकी निजर निरजन सेती शील संतोषी समता रे ॥ प्रा० ॥ ३६ ॥ अधिक निरागी मन वयरागी त्यागी माया ममता ॥ मुनिवर मोह विकलता वमता धरम शुकल सूं रमता रे ॥ प्रा० ॥ ३७ ॥ वीत रागकी केवल वाणी नहि आणी गुण थिरता ॥ ता कारण नर सुरग पयाले च्यारूं गतिमे फिरता रे ॥ प्रा० ॥ ३८ ॥ तीनुं वेद विसन विकलाई विरत सुरत नहि आइ ॥ जो आइ रुचितो न सुहाइ पाइ फेर

गमाई रे ॥ प्रा० ॥ ३९ ॥ आवा गमन निवारण कारण वात वताउं साची ॥ कनका मणी कुमति उ पावे याते करणी काची रे ॥ प्रा० ॥ ४० ॥ सव उ पाधि इण तेही उपजे वनवेली विसतारा ॥ इण दो नुसे होय निराला सो साहिवका प्यारा रे ॥ प्रा० ॥ ४१ ॥ साध नही अरु साध कहावे मुंहके वांधे प ट्टी ॥ मूंडिया मुनिवर नाम धरावे भेप भरम कीट ट्टी रे ॥ प्रा० ॥ ४२ ॥ याके घरमें वाघण वाकी कुम ता का मणकटी ॥ सोतो नाचन चावे एसे जैसे जा लम जटी रे ॥ प्रा० ॥ ४३ ॥ लोक दिखा मुहपति वांधी विसन गयो कछु नाही ॥ विन चारणिये पर दो कीनो पुरुप परायो मांही रे ॥ प्रा० ॥ ४४ ॥ ज्ञा न विन य त्रसथावर जंतु वचे प्रगट गुण दोइ ॥ म न वच काया जेणां करता आरोधिक पद होइ रे ॥ प्रा० ॥ ४५ ॥ कपडा धोवे सोतो धोवी रंगेसो रंगा रा ॥ कपटी पीला वेप वणावे यह तो जोग विगा रा रे ॥ प्रा० ॥ ४६ ॥ सहज भाव वरते सो साधू न ही रंगे नहि धोवे ॥ सव दुनियाकूं पूठ दिखावे शिवपुर साहमो जोवे रे ॥ प्रा० ॥ ४७ ॥ कलजुगमे कपटी धूतारा साधु समण कहावे ॥ साधु रस्व प

रिग्रह त्यागी सो तो विरला पावे रे ॥ प्रा० ॥ ४७ ॥ जेषधार कर जोडू जूला पंच महाव्रतधारी ॥ वीत राग कोइ विरला होयगा वहु दीसे घरवारी रे ॥ प्रा० ॥ ४ए ॥ अपणी करणी करम विटंवणां कुंण कुं ण वात चितारूं ॥ उंचा नीचा कुल नरनारी जनम मरण निरधारुं रे ॥ प्रा० ॥ ५० ॥ च्यारूं गतिमें जे डुखपाया परतख निजरां दीसे ॥ ज्ञानी वात प्रगट दिखलाइ केवलि विसवा वीसे रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ मेंही अपणो दोसत डुरजन डूजो कुणवत लाऊं ॥ मेंही जूल जरमको रागी कहितो क्या तुतलाऊं रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ मेंही अशुज करमको करता कुम ता कान घटाई ॥ मेंही अधम महा अपराधी सुम ता नाहि सुहाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ चोरीको गुड जोलो मीठो तोलो लखे हन कोई ॥ जवही लखे तव खून खरावी अधिक फजीती होई रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ५४ ॥ तो पिण मनुवा धीठ दीठ मूल उपाधि नमूंके ॥ जो कोउ वाकूं सीख समापे तो पिण डुगु णा जूकेरे ॥ प्रा० ॥ ५५ ॥ तूं तो जूखो जूत वंगा लो जातही जात पुकारे ॥ तूं तो प्यासो पर पुद्गल को पांचु मुख आहारे रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ कुंण कुंण

षट रस स्वाद न लीना पीना सागर पानी ॥ अब संतोष करो नवि प्राणी सुन सदगुरकी वाणी रे ॥प्रा० ॥ ५७ ॥ सागरमें पाणी नहि एतो जे तो परकूं रोयो ॥ परके कारण पच पचमूवो आपो आपन जोयोरे ॥ प्रा० ॥ ५८ ॥ पाप किया पर जन तन कारण करम उदे जब आया ॥ ते फल नोगवतां अति करुवा ज्ञानी आप बताया रे ॥ प्रा० ॥ ५९ ॥ किसकूं जोवे रोवे धोवे किसका मांके सापा ॥ यह तो बयरी बात विगोवे खोवे अपणा आपा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ६० ॥ सुखकूं फूरे सो सुख दूरे डुखकूं सुख कर माने ॥ सुख सरसूं डुख मेंर समाना मूढमति नहि जाने रे ॥ प्रा० ॥ ६१ ॥ गंधा जलसूं पिंक बंधाणो गंधो गंध नराणो ॥ ओर अनेक उपाधि नरित तन तापे तरुणि लोनाणो रे ॥ प्रा० ॥ ६२ ॥ सूधी समऊ नही डुनियाकी सब मतकी मति न्यारी ॥ बोवे बीज किसाण जमीमें किस विध कामित क्यारी रे॥प्रा०॥ ॥ ६३ ॥ हस्ती एक ठहुं मति लोचन ऊगरा जोर मचावे ॥ कैसे एक मिले कहो सरधा सबतो सुरगन जावे रे ॥ प्रा० ॥ ६४ ॥ सो सेणां मति एक अपरिये क्या आलमसे अरिये ॥ हारजीत दोनु परहरिये

मैंकी वांत विसरिये रे ॥ प्रा० ॥ ६५ ॥ मनकी सर
धा मनमें धरिये जिणसूं पार उतरिये ॥ मिथ्याती
सूं वाद न वरिये हांजी हांजी करिये रे ॥ प्रा० ॥
॥ ६६ ॥ कुगुरु कुसंगी हीणाचारी आगम सरव उ
थापे ॥ सो पापी पाखंडी परतख जो अपणी मति
थापे रे ॥ प्रा० ॥ ६७ ॥ ताकी संगति जहरन पीवो
जीवो अरथ अमीमें ॥ सरव सराफ न खावे खोटो
परख जुहार जमीमे रे ॥ प्रा० ॥ ६८ ॥ नरनव पा
य नही तुम चेतो चेतोगे किस गतिमें ॥ मोति मु
हीम लगी शिर उपर तुम लागे किस मतिमें रे ॥
प्रा० ॥ ६९ ॥ सवही कहे रे सांऊ सवे रे निश दि
न करत तगादा ॥ पाउपलक कोउ रहण न पावे पू
गे आण अवादा रे ॥ प्रा० ॥ ७० ॥ वहुत डुहेलो
नर नव पायो सो नर नव गुंजावे ॥ शोच विचार
करूं निशवासर पण कछु वन नहि आवे रे ॥ प्रा०
॥ ७१ ॥ में परमादी अरु विषवादी मोह पस्यो पि
ठवारी ॥ ताकी बाक अनादी अजहु उतरी नाहि
खुमारी रें ॥ प्रा० ॥ ७२ ॥ कुछ तो फिकर करो

१ 'मेना मेना कहतही मेंना रहि सुख पाय ॥ में में करती
वाकरी वैठी गलो कटाय ॥ १ ॥

म अपणो युं तोही मतिहारो च्यार दिनाकूं परन्नव जाणो परसूं नेह निवारो रे ॥ प्रा० ॥ ७३ ॥ मे अवतार धर्यो कलजुगमे मन वच काय कचाई ॥ साधु तणां गुण पूरण न पले तिण सर धा ठहराई रे ॥ प्रा० ॥ ७४ ॥ गुरुउपदेश कह्यो बहु तेरो न्निन न्निन न्नेद वखानी ॥ जिन वचनापे अमल न कीनो पीनो मदरा पानी रे ॥ प्रा० ॥ ७५ ॥ परमादीकूं ज्ञान न आवे यो कहिये सो यूंही ॥ मन डुष्टी कैसे समऊाउ सीख न माने क्यूंही रे ॥ प्रा० ॥ ७६ ॥ राजा परजा जेरु नरनारी वाला तरुणांवुढा ॥ आला सूका सर्व जलेगा ज्युं जंगलका कूमा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ७७ ॥ परघर[१] ठांम मांम घर घरका घरमे कर घर वासा ॥ घर घरमे केते घर घर हे घर घरमे मेवा सारे ॥ प्रा० ॥७७॥ कांधे करि मुरदा पहुंचावे रामही राम सुणावे ॥ अपणा होय हेतुसो साजन ठोकही ठोक जलावे रे ॥ प्रा० ॥ ७ए ॥ तुं तो मस्त मदोमत दीसे जैसें मुकना हाथी ॥ शोच नही उस दिनका तुमकूं कोण चलेगा साथी रे ॥ प्रा० ॥ ७० ॥ २ गनीम लग्यो हे केमे तिण एह धूम मचाई ॥

१ ' जिसमें आयुरूप न्नाडा देके रहना पमे वोही परघर.

जियकूं पकड कस्यो अपणे वस कैदी कह्योह न जाई रे ॥ प्रा० ॥ ७१ ॥ अपणी सोख विराणें घरमे वैठो मोज मनाई ॥ ताके तो फल एसें जैसे वनचर भांग चवाई रे ॥ प्रा० ॥ ७२ ॥ देखत भूली संझा फूली नाटक जिम न दुवेरा ॥ नंदीनाव तरु पंखी वादल जगत सराहि वसेरा रे ॥ प्रा० ॥ ७३ ॥ जो चेते तो चेतसवेरा जिण सूं होय निवेरा ॥ नहि तर फेरा ओर अवेरा कुंण तेरा कुंण मेरा रे ॥ प्रा० ॥७४॥ में इतवार कियो पंचाको पांचा मिल मति खोई ॥ इण पांचाको करे भरोसो सो नर दुखिया होइ रे ॥ प्रा० ॥ ७५ ॥ में जाण्यो ए खूव करेगे पंच परमेश्वर मिलिया ॥ पांचामे परमेश्वर नाही चोर चुगल बल वलियारे ॥ प्रा० ॥ ७६ ॥ झूंठो जग विवहार कहावे परभव कामन आवे ॥ जो पाले सो सुध मन सेती सो निश्चे फल पावे रे ॥ प्रा० ॥ ७७ ॥ विण पूंजी गुण ज्ञान गमारा किरिया करत पसारा ॥ वोतो पंथ निरालो सवसूं यह तो भरम भंगारा रे ॥ प्रा० ॥ ७८ ॥ लिखे लिखावे पढे पढावे सुणे सुणावे सवही ॥ किरिया कष्ट करे वहु विधसूं मुगति न पावे कवही रे ॥ प्रा० ॥ ७९ ॥ होय

जगति जुगतिसूं जगगुरु जोगी जवही ॥ जिस दि
न मनुवा निरमल होगा मुगति लहेगा तवही रे ॥
प्रा० ॥ ८० ॥ विरच विषेसु अलख अराधे साधा
साथ सगाई ॥ नाइ नरम नजीक न राखे त्यागे तृ
ष्णावाइ रे ॥ प्रा०॥ ८१ ॥ मोह करमकूं पूठ दिखा
वे देखे तुरत तमासा ॥ काया कुटणी करम धरम
की मनकी पूरे आसारे ॥ प्रा० ॥ ८२ ॥ पांचाको
मेलाप दुहेलो तिण विन ज्ञाता झूरे ॥ कवहु जोग
मिलेगो सांचो सेवक साम हजुरे रे ॥ प्रा० ॥८३॥
क्या दुनियांसे सगपण तेरा लेहमां नरकानाता ॥
तापे ते मगरूरी पकडी पांचु केरस राता रे ॥ प्रा०
॥ ८४ ॥ मोटो पापी परव दिवाली महा अधरमको
घातो ॥ पग पग पापकातकी पुन्यम कुगुरु करमको
नातो रे ॥ प्रा० ॥ ८५ ॥ जीव जवेह करस्यादी मा
ने घर वकरीद मनाइ ॥ हे मुल्लाको करम कसाइ
इक दमडी दुखदाइ रे ॥ प्रा० ॥ ८६ ॥ दसरावेकूं
भेसो मारे सतुर विदारेईदी ॥ हिन्दू मुसलमान
दोउ सरिखा सुणवे गाफलगीदी रे ॥ प्रा० ॥ ८७॥
सवकूं देख नेकवदसवमे ज्युं सागर गिर धरिया ॥
हे अपणी करणीको कारण जहर सुधारस भरिया

रे ॥ प्रा० ॥ ९८ ॥ लंकाकीतो नकल बणावे रावण रूप रचावे ॥ रामचंद लिछमन चढ आवे रावणकूं ठेहरावे रे ॥ प्रा० ॥ ९९ ॥ लिछमनजी रावणकूं मार्यो दिवस विजेदशमीकूं ॥ रामचन्द्र सीतासूं मिलिया राज भभीषणजीकूं रे ॥ प्रा० ॥ १०० ॥ रावणके घर शोक भयोहे बहु परिवार विख्याती ॥ सो डुसरावो डुनिया माने मूरख लोक मिथ्याती रे ॥ प्रा० ॥ १०१ ॥ धरम करमकी वात न माने ज्ञान विना गुणहीणां ॥ दोनू तीन खंमके नायक पदमोटो परवीणा रे ॥ प्रा० ॥ १०२ ॥ निश दिन करम करे जगवासी कुल किरिया मिफमानी ॥ एक अरथ अनरथ हे डूजी तीजी फिर समदानी रे ॥ प्रा० ॥ १०३ ॥ चोथी भरम धरमके हेते कुगुरु कुदेव पुजेरा ॥ दरसन ज्ञान गयो घट जाके ता घट नाहि उजेरा रे ॥ प्रा० ॥ १०४ ॥ गोगा मोगा मूरख माने संरूप मकर बणावे ॥ सती शीतला माता मोटी कहतां सरम न आवे रे ॥ प्रा० ॥ १०५ ॥ लरका खावे नेण गमावे पूरी षोम लगावे ॥ यह तो रोग लोक नहि समजे उदर व्यथा कहिलावे रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १०६ ॥ नगर कोटमे देवी डुरगा ज्वाला जाय जु

हारे ॥ जाती जुलम करे मुख आगे जीव हणे न निवारे रे ॥ प्रा० ॥ १०७ ॥ ताकूं कहत नवानी माता धूड समज डुनियाकी ॥ यह तो रांक रसायण रूायण धरिये शिर जुनियांकी रे ॥ प्रा० ॥ १०८ ॥ एक रुद्राणी एक शूद्राणी देवी दोय कहावे ॥ एक मदिरा माटी मटकावे एक मीठो गटकावे रे ॥ प्रा० ॥ १०९ ॥ एक मिथ्यामतिमांहि वखाणी इक समकित जिनवाणी ॥ देवी दोय परीख्या करने सीसनमो नव प्राणी रे ॥ प्रा० ॥ ११० ॥ कुल देवीको करज उतारे करे कडाइ पूरी ॥ वेस सुहागणकूं पहिरावे राति जगावे रूमी रे ॥ प्रा० ॥ १११ ॥ एक पूतके कारण केते जतन किये वहु तेरे ॥ सात वरसको होण न पायो हंसलियो जम घेरे रे ॥ प्रा० ॥ ११२ ॥ यह मलेछ हम समकित धारी कैसे वणेही वणावा ॥ वटो लगे सो वात न नावे हे सवसूं निरदा वारे ॥ प्रा० ॥ ११३ ॥ रांक रसायण ढुंरूे वनमे मनमे धन अनिलाषा ॥ नाग विना कछु वनि नहि आवे तव दिखलावे आखारे ॥ प्रा० ॥ ११४ ॥ मांगे माल मुफतमे वेटा नूतांकूं फुसलावे ॥ करामात सव अपणी जाणो मेहनत सूं सुख पावे रे ॥ प्रा० ॥ ११५ ॥ नू

खा मरता मूंड मुडावे मोल विकाता आवइ ॥ भेष गहे पिण भेद न पावइ पंडित नाम धरावे रे ॥प्रा० ॥ ११६ ॥ अकल उपावे दाम कमावे इंद्री लाड ल डावे ॥ डुनियादार समान मिथ्याती निगुणा गुरु कहिलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११७ ॥ सतजुग मांहे चेला करता कलजुग मांहे चेली ॥ रात दिवस दोनु रहे भेला रहती नाहि अकेली रे ॥ प्रा० ॥ ११८ ॥ मूंड मुंडाय फिरे मतवाला साथे सरम न आवे ॥ चोथो वरत वचे घृत कैसे आग नजीक जलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ए ॥ जोगी जसकूं कान फडावे मूंड मुंडावे मुं डिया ॥ मन वच काया तिहु मुकलाया तोर तमासे गुडिया रे ॥ प्रा० ॥ १२० ॥ जंगम जय महादेव म नावे गावे गोपीचंदा ॥ जाडूगरीरा जती कहावे जा लम जैनी जिंदारे ॥ प्रा० ॥ १२१ ॥ संन्यासी अव धूत जटाधर भारी भंग चढावे ॥ राख लगावे नगन दिखावे वनमे वनफल खावे रे ॥ प्रा० ॥ १२२ ॥ षट दरसन केते सिर पटके भटके करम कुभावे ॥ राग द्वेष दोउं दलभारी तिनकूं क्यो न खपावे रे ॥ प्रा० ॥ १२३ ॥ वामण रामण डामण चामण विरला भेद लखावे ॥ कथा सुणावे गुरु कहिलावे गुंपती ख

रुग चलावे रे ॥ प्रा० ॥ १२४ ॥ कामी क्रोधी लोभी लंपट मद माता मतवाला ॥ राग द्वेष बहु पाप अठारे आश्रव सेवण वाला रे ॥ प्रा० ॥ १२५ ॥ अज इंद्री मद मेंगल घोरा मन नर काम विकारा ॥ गाय गहलता इण विध सेती यज्ञ करे विसतारा रे ॥ प्रा० ॥ १२६ ॥ दान पुन्यका धरम सुणावे भूल भरम नहि जावे ॥ वेल पिता पर बोजलदावे माता गाय पुजावे रे ॥ प्रा० ॥ १२७ ॥ माता मरके शुनी भई सो कूट निकाले बारे ॥ पिता भयो घरवेल विराणे ताकूं कुण चितारे रे ॥ प्रा० ॥ १२८ ॥ मात पिताका जब दिन आया न्याती नेहत बुलाया ॥ उनकूं पुन्य कहांसे पहुंचे पापी प्रेत जिमाया रे ॥ प्रा० ॥ १२९ ॥ मके जाय निवाज गुदारें मुल्ला बांग पुकारे ॥ बकरा बकरी पकड़ पछाडे मुरगा मुरगी मारे रे ॥ प्रा० ॥ १३० ॥ पर प्राणीके पुद्गल रोपे अपणो पुद्गल पोपे ॥ एक रतूत भरोसे भोला सुगति कहो किम होसे रे ॥ प्रा० ॥ १३१ ॥ जख पे कंवर पीर अवलिया आलम मिलकर ध्यावे ॥ ठडिया जाय चराक चढावे चोकी भरकर आवे रे ॥ प्रा० ॥ १३२ ॥ भोंदू लोक भरममें भूला जाहर पी

र मनावे ॥ देव बहुत सेव्या सुख कारण सो कहु सांच न पावे रे ॥ प्रा० ॥ १३३ ॥ चाहे साम सुहाग सपूती ईसर गवर वणावे ॥ नाचे कूदे अंग दिखावे गावे ढोल वजावे रे ॥ प्रा० ॥ १३४ ॥ पूजा करम करे कर जोमी कर सिणगार सवाया ॥ तो पिण पतिका सुख नहि देखा सुत नहि गोद खिलाया रे ॥ प्रा० ॥ १३५ ॥ सुत जाया कैवार खिलाया व्याह्या वनिता लाया ॥ अंत काल कोउ कामन आया इम केवलि फुर माया रे ॥ प्रा० ॥ १३६ ॥ हय गय रथ पायक परिवारा मात पिता सुत दारा ॥ इणमें तेरा कोन संगाती मनमें सोच विचारो रे ॥ प्रा० ॥ १३७ ॥ काया कुमति करी नहि वसमे सुमति सुप्यारन पकरी ॥ विकथा वचन मरम मुख भाषे वात कहे उर अकरी रे ॥ प्रा० ॥ १३८ ॥ मन विसतार दसूं दिस पसरे थिरत ध्यानसु न करी ॥ सुगुरु कहे क्या जोग कमाया पांचू जीतन जकरी रे ॥ प्रा० ॥ १३९ ॥ समताके सन मुख नहि आवे ज्युं नाहरके वकरी ॥ ममताके सनमुख यूं ध्यावे चाक फिरे ज्युं चकरी रे ॥ प्रा० ॥ १४० ॥ लोक लाजमें लाग रह्या हे लाख लगे ज्युं लकरी ॥ सुगुरु

कहे क्या माला पकरी मकर वणाया मकरी रे॥ प्रा० ॥ १४१ ॥ मोह समान सवल नहि दूजो वंधण और अनेरा ॥ मोह धरम गुण ज्ञान गमावे अंदर होय अंधेरा रे ॥ प्रा० ॥ १४२ ॥ मोह तणे वस सव परिजनकूं मान रह्यो मन मेरा ॥ सुगुरु कहे तु देख दिवाना यह डुरजन हे तेरा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १४३ ॥ ठाप निसाणी डाम लगावे पहिली फेरु नरावे ॥ गया पिरागे पिंरु नरावे न्हावे मूंठ मुंनावे रे ॥ प्रा० ॥ १४४ ॥ कासी करवत गले हिमाले मोन रहे वनवासी ॥ केसे आप निपाप नयोतु हिरदे सोच विमासी रे ॥ प्रा० ॥ १४५ ॥ वद्रीनाथ पहाडा वीचमें ठीके चडकर जावे ॥ जगंनाथने जग नरमायो नात सहु मिल खावे रे ॥ प्रा० ॥ १४६ ॥ सेतवांध रामेसर लिठमन व्रजमें कान कहावे ॥ वेजनाथ वन खंड विराजे झूंटी कला दिखलावे रे ॥ प्रा० ॥ १४७ ॥ कला दिखावे काला गोरा कल जुग में सकलाई ॥ तेल सिंदूर ठफावे ध्यावे पूजे लोक लुगाई रे ॥ प्रा० ॥ १४८ ॥ नागा नूखा नूत नवानी क्या देवे क्या लेवे ॥ केवल राम अमर अविनाशी ताकूं क्युं नहि सेवे रे ॥ प्रा० ॥ १४ए ॥ जम नांजा

थ बहुत नरनारी जिणको गंदो पाणी ॥ तण जल सेती पिंम पखाले मुगति सुहेली जाणी रे ॥ प्रा० ॥ १५० ॥ जाप जपे पिण सापस पूंछो मोरा मधुरी वाणी ॥ आगो पीछो सरव दिखावे ठाकुरकी पट राणी रे ॥ प्रा० ॥ १५१ ॥ अडसठ तीरथको गुरु पोह कर ताहि पिता कर माने ॥ कडवी तुंबी होय न मीठी मन मीठो किणवाने रे ॥ प्रा० ॥ १५२ ॥ सत्यशील सोई जल निरमल ब्रह्मज्ञान भर आणी ॥ मनको मेल कटे इण जलसूं सो सरधा परमाणी रे ॥ प्रा० ॥ १५३ ॥ शशि सूरजकूं सीस नमावे नाम निरंतर लेवे ॥ एतो आठो पहर मुसाफर मुगति सुगति नहि देवेरे ॥ प्रा० ॥ १५४ ॥ अपणी करणी पार उतरणी पूछो वेद विज्ञानी ॥ और विधाता मूढ वखाणे भूला भरमकु ध्यानी रे ॥ प्रा० ॥ १५५ ॥ के जाहर सरव सुलतानी मक्का और मदीना ॥ खाजा मीरा हसन हुसेना पीर मदार मकीना रे ॥ प्रा० ॥ १५६ ॥ गाजीखीदर नवि मुरतजा अली अमर अली असमाना ॥ मुसलमान कोउ अलख पिछाणे अवर सहु मसताना रे ॥ प्रा० ॥ १५७ ॥ भेरूं भूत भवानी ब्रह्मा संकर सील सतीकूं ॥ आखातीज

कहे क्या माला पकरी मकर वणाया मकरी रें॥ प्रा० ॥ १४१ ॥ मोह समान सवल नहि दूजो वंध ए और अनेरा ॥ मोह धरम गुण ज्ञान गमावे अंदर होय अंधेरा रे ॥ प्रा० ॥ १४२ ॥ मोह तणे वस सव परिजनकूं मान रह्यो मन मेरा ॥ सुगुरु कहे तु देख दिवाना यह डुरजन हे तेरा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १४३ ॥ ठाप निसाणी डाम लगावे पहिली रूड भरावे ॥ गया पिरागे पिंड भरावे न्हावे मूंठ मुंमावे रे ॥ प्रा० ॥ १४४ ॥ कासी करवत गले हिमाले मोन रहे वनवासी ॥ केसे आप निपाप भयोतु हिरदे सोच विमासी रे ॥ प्रा० ॥ १४५ ॥ वद्रीनाथ पहाडा वीचमें ठीके चढकर जावे ॥ जगंनाथने जग भरमायो भात सहु मिल खावे रे ॥ प्रा० ॥ १४६ ॥ सेतवांध रामेसर लिठमन व्रजमें कान कहावे ॥ वेजनाथ वन खंड विराजे झूंटी कला दिखलावे रे ॥ प्रा० ॥ १४७ ॥ कला दिखावे काला गोरा कल जुग में सकलाई ॥ तेल सिंदूर ठगावे ध्यावे पुजे लोक लुगाई रे ॥ प्रा० ॥ १४८ ॥ नागा भूखा भूत भवानी क्या देवे क्या लेवे ॥ केवल राम अमर अविनाशी ताकूं क्युं नहि सेवे रे ॥ प्रा० ॥ १४९ ॥ जम नांजा

य वहुत नरनारी जिणको गंदो पाणी ॥ उण जल सेती पिंड पखाले मुगति सुहेली जाणी रे ॥ प्रा० ॥ १५० ॥ जाप जपे पिण सापस पूंठो मोरा मधुरी वाणी ॥ आगो पीठो सरव दिखावे ठाकुरकी पट राणी रे ॥ प्रा० ॥ १५१ ॥ अडसठ तीरथको गुरु पो ह करताहि पिता कर माने ॥ कडवी तुंवी होय न मीठी मन मीठो किणवाने रे ॥ प्रा० ॥ १५२ ॥ स त्यशील सोई जल निरमल ब्रह्मज्ञान उर आणी ॥ मनको मेल कटे इण जलसूं सो सरधा परमाणी रे ॥ प्रा० ॥ १५३ ॥ शशि सूरजकूं सीस नमावे ना म निरंतर लेवे ॥ एतो आठो पहर मुसाफर मुगति मुगति नहि देवेरे ॥ प्रा० ॥ १५४ ॥ अपणी करणी पार उतरणी पूठो वेद विज्ञानी ॥ और विधाता मू ढ वखाणे जूला जरमकु ध्यानी रे ॥ प्रा० ॥ १५५ ॥ के जाहर सरव सुलतानी मक्का ओर मदीना ॥ खा जा मीरा हसन हुसेना पीर मदार मकीना रे ॥ प्रा० ॥ १५६ ॥ गाजीखीदर नवि मुरतजा अली अ मर अली असमाना ॥ मुसलमान कोउ अलख पि ठाणे अवर सहु मसताना रे ॥ प्रा० ॥ १५७ ॥ जेरूं जूत जवानी ब्रह्मा संकर सील सतीकूं ॥ आखातीज

दिवाली होली राखी राम रतीकूं रें ॥ प्रा० ॥१५८॥ गंगा जमना ग्रह कुलदेवी गणपति वीर विहारी ॥ आतमराम लखे कोई विरला युं भुले नर नारी रे॥ प्रा० ॥ १५९ ॥ उंचो कुल उंचो पद सवकू उंचो नाम सुहावे ॥ कोट करावे नगर वसावे कूपक वाग खणावे रे ॥ प्रा० ॥ १६० ॥ नाम रहे सो ठाम न पाया चोंडू गुरु भरमाया ॥ लख चोरासी तुं फिर आया अजहु नाम न धायारे॥ प्रा० ॥ १६१ ॥ आवत काल ढिनु ढिनु नेरा गाफल क्या गुमरावे ॥ मुंदे आण दसुंदर वाजा भाज कहूं कहा जावे रे ॥ प्रा० ॥ १६२ ॥ कंठ गहे जव जावन आवे सेंना सें न वतावे ॥ पहिली चेत सुगुरु समझावे युं क्या जन मगमावे रे ॥ प्रा० ॥ १६३ ॥ जगमें आय जमा सव खाइ कौन कमाइ कीधी ॥ नीति धरमकी करी अनीती रीती करमकी लीधी रे ॥ प्रा० ॥ १६४ ॥ परकी तात करे क्या तुझमें कुण कुण वात न वीती ॥ सुगरु कहाय सरस सव खोइ अजहु अजव फजीती रे ॥ प्रा० ॥ १६५ ॥ लख चोरासी फिरतां तूं नर आय वसेरालीनां ॥ फेर कहाकूं चलना होगा फिकर न कीना रें ॥ प्रा० ॥ १६६ ॥ लाग र

हा दुनियां दो जगमे आपा आप न चीनां ॥ परकी तात सुणावत परकूं कहवेकूं परवीणा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १६७ ॥ आगम अरथ सुणो सदगुरुपे सुनता कर मज कटे ॥ वचो नही तुम विकथासेती कुणसूं घ डाइ कट्टे रे ॥ प्रा० ॥ १६८ ॥ हांसल कोन विराणी वाते क्या लाहालब खट्टे ॥ नाहक निगुणा मुंड प चावे रसना राम न रट्टे रे ॥ प्रा० ॥ १६९ ॥ ना गुरु खाऊं कान विंधाउं नामे सीस गुथाउं ॥ नां दुख पां ऊ कुगति सिधाउं नामे कुगुरु कहांऊ रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १७० ॥ नां पाथरकूं सीसनमाउं नामे तीरथ जाउ ॥ नां कलजुगिया देव मनाउ ना मे उणकूं ध्याउ रे ॥ प्रा० ॥ १७१ ॥ स्वारथ आप परम परमारथ विक लारथ मोहजाल ॥ जरमारथमे जुल जटकणां कर मा रथमे काल रे ॥ प्रा० ॥ १७२ ॥ संवर मारग स्व र्ग मुगतिको सो सवकूं सुखदाई ॥ जिनके सनमुख समता आइ उसकी सफल कमाइ रे ॥ प्रा०॥१७३॥ जिण करणीसूं जिनजी पहुता सो करणी सुखदाइ॥ उवे निरमोही नाहि निवाजे अपणी खपकर जाइ रे ॥ प्रा० ॥ १७४ ॥ हिंसा धरम अने रामाने जयणा जैन जणाइ ॥ जेनी पिण हिंसा वतलावे क्या जैनी

अधिकाइ रे ॥ प्रा० ॥ १७५ ॥ कूम्रा पंथी ढुंडा पापी मदिरा मांस आहारी ॥ उंच नीच सब ञेलाजीमे जग पूजे अनाचारी रे ॥प्रा० ॥ १७६॥ केजल न्हावे जसमलगावे केते अलख जगावे ॥ के जस गावे ज गति कहावे के ते मुंरु मुंमावे रे ॥ प्रा० ॥ १७७ ॥ के तन तावे जोगकमावे केते वाल उंचावे ॥ के फ ल खावे कान फडावे के ते सवद सुणावे रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १७७ ॥ के ज्ञानी केध्यानी मोनी केअमली अवधू ता ॥ के तपिया के जपिया जोगी के वनंवास विगुता रे ॥ प्रा० ॥ १७ए ॥ के नख मोटा के कर ठोटा के ना गा नखराला ॥ समकित विनसहु वाल अज्ञानी दे खो पट मत वालारे ॥ प्रा० ॥ १७० ॥ सीता राम न जाणे रीता साच कहु सुण मीता ॥ पांचे इंद्री जो गन जीता गीता पढ क्या कीतारे ॥ प्रा० ॥ १७१ ॥ त प तपता जपमाला जपता देखे नकल निवाजी ॥ सब परपंच पेटके कारण कवित कला नटवाजी रे ॥ प्रा० ॥ १७२ ॥ जेनी होयकर जमना न्हावे सोधी नाम धरावे ॥ जेनी होकर जीव जलावे गुरुकी कबर करावे रे ॥ प्रा० ॥ १७३ ॥ जेनी होयकर गरज ग नावे मुंमिया मुंठ चलावे ॥ जेनी होयकर वाग ल

गावे क्या परकू समझावे रे ॥ प्रा० ॥ १८४ ॥ जैनी जीव जतन कर चाले झूटी वात न झाले ॥ जैनीकु मति करमकूं टाले निज आतम उजवाले रे ॥ प्रा० ॥ १८५ ॥ जैनी धूम धरम नही धोरे पाप नजीक न ढेरे ॥ जैनी प्रेम परमसूं जो रे परसूं ना तो तोरे रे ॥ प्रा० ॥ १८६ ॥ पाथरहीका देव वणाया पाथरहीकी कुट्टी ॥ पाथरकूं परमेश्वर मानें क्या हिरदेकी फुटी रे ॥ प्रा० ॥ १८७ ॥ तीरथ पूजा दान दिढावे सांची सरधा लूटी ॥ हिंसारंभ धरम बतलावे षटकाया जिण लूटी रे ॥ प्रा० ॥ १८८ ॥ पाथरहीका देव देहरा पाथरका चोवारा ॥ धरम करम किणने वतलाऊं सवही पाप डुवारा रे ॥प्रा०१८९॥ जो में साचो ज्ञान विचारूं कछु परगट नहि छाने॥ वले विसेषे पाप देवलमें धरम गेडकर माने रे ॥ प्रा० ॥ १९० ॥ पूजा करम करे बहु तेरा मनमें आशा मोटी ॥ हिंसा मांहि धरम परूपे यह तो सरधा खोटी रे ॥ प्रा० ॥ १९१ ॥ प्रतिमा देव धरम हिंसासे आगम अनरथ वांणी ॥ भेष धारीकूं गुरु कर माने ए मिथ्या सरधांनी रे ॥ प्रा० ॥ १९२ ॥ हिंसा करम तणा फल कडुवा जहरसमान . -

यां ॥ मूरख मनमें मूलन बुजे ए मारग डुखदाया रे ॥ प्रा० ॥ १ए३ ॥ पाहन धेनु पय नवि आपे चंद किरण नहि वाले ॥ तिम हिंसामे धरम न होवे स्यूं कुमती भ्रम घाले रे ॥ प्रा० ॥ १एध ॥ देव निरंजन गुरु गुणवंता दया धरम सुध वाणी ॥ ज्ञान विज्ञान विवेक विचारे ए सम कित सरधानी रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १एए ॥ वीतरागकी ठवी निरागी क्या देख्या फलदाई ॥ जोलो मूल मिथ्यात न जावे गरज सरे नहि कांई रे ॥ प्रा० ॥ १एद ॥ पहिली देव धरम गुरु तीनुं सांच कूट परखीजे ॥ फिर पीछे तप जप किरियासूं आतम कारज कीजे रे ॥ प्रा० ॥ १एउ ॥ जिन कलपी जिनराज कहावे जिणकूं कुण नहि ध्यावे ॥ पिण कलजुगिया परतख पापी हिंसा मग तवतावे रे ॥ प्रा० ॥ १एउ ॥ हिंसा मगत मिथ्याती माने ज्ञाताको मन नावे ॥ देव निरंजन जोति सरूपी ताकूं सीस नमावे रे ॥ प्रा० ॥ १एए ॥ सिद्ध खेत जहे चेतालो जहां उवे साहिब मेरा ॥ अनंत चोवीसी मांहि समाई जिगमिग जोति उजेरा रे ॥ प्रा० ॥ २०० ॥ उण देवाकूहुं नित वांदू में उण पदकूं ध्याऊ ॥ उवे मूजकूं देखे निश वासर कोन

ठवी वतलाऊ रे ॥ प्रा० ॥ २०१ ॥ समेत सिखर सि
तरंजे जावे वैलां वोज लदावे ॥ धुरकी सरधा सो
ही सरधा उर पलट नहि आवे रे ॥ प्रा० ॥२०२॥
साधु अनंता सीधा सो तो शिवपुरमांहि विराजे ॥
सो थानक तुमकूं नहि सूझे स्वर्गसिखरपर ठाजे
रे ॥ प्रा० ॥ २०३ ॥ देखादेखी सवही जावे कर-
जोरी जसगावे ॥ पूजा पाती प्रेम लगावे पावक जी-
व जलावे रे ॥ प्रा० ॥ २०४ ॥ सीस नमाय करे नि-
त सेवा केसे सदगति पावे ॥ इस मूरतकूं परतख
देख्या उवे तो याद न आवे रे ॥ प्रा० ॥ २०५ ॥ ल-
डकी खेले घुडिया सेती वालपणे वचकानी ॥ खेल
खिलोना भेद न समझे भामन भोग भुलानी रे ॥
प्रा० ॥ २०६ ॥ गोणे जाय गुपति गुडखायो असल
नकल उर आनी ॥ तैसे जूंटी साची मानी मूढ मि
थ्या मति वानी रे ॥ प्रा० ॥ २०७ ॥ परमेश्वरकूं क्या
पहिचाने मूढमती मतवारा ॥ परमेश्वरकूं जे पहि-
चाने जिसके उर उजवारा रे ॥ प्रा० ॥ २०८ ॥ क्या
पाथरमें हे परमेश्वर जिसकी जोति उजाहारा ॥
पाथरमें परमेश्वर नाही हे परमेश्वर न्यारा रे ॥ प्रा०
॥ २०९ ॥ दरव निखेपे गरज न सरसी जोवो हिर

देवि मासी ॥ भाव धरीने साहिब सेवो जिम टल जाय चोरासी रे ॥ प्रा० ॥ २१० ॥ दरव पूजासे प्रभु नहि रीजे वीतो देव निरागी ॥ भाव पूजा भगवंतरी करता सब दुख जावे भागी रे ॥ प्रा०॥२११॥ किसकूं ध्याऊ किसकूं गाऊ किसकूं सीस नमाऊं॥ देहरा सरमे बहिरा बैठा मेळण पासन जाऊं रे ॥ प्रा० ॥ २१२ ॥ क्या जल न्हाऊ क्या फल खाऊ क्या देखुं दिखलाऊ ॥ एति बात मुजे बतलावो उन चरने चितलाऊ रे ॥ प्रा० ॥ २१३ ॥ गुंगा देव गुरू गुणहीणा उनसे क्या कछु पावे ॥ उवे तो आप अचेतन दावे जावे मूल गमावे रे ॥ प्रा० ॥२१४॥ जेसा गुरू तेसा पूजेरा मिथ्या बात सुहावे ॥ उवे मुजकूं क्या बाच सुनावे क्या समझे समझावे रे ॥ प्रा० ॥ २१५ ॥ के गंगाजल जमना न्हावे के पाषाण पुजावे ॥ के ऊंचापग शिर लटकावे के किरिया दिखलावे रे ॥ प्रा० ॥ २१६ ॥ के सुचि सोधन सूग निमाणा के नख केश वढावे ॥ ब्रह्मज्ञान आतम विन परचे पार ब्रह्म नहि पावे रे ॥ प्रा० ॥ २१७ ॥ जल जठरागन प्यास बुझावे तनकी तपत मिटावे॥ जल जगदीश न मुग्ध मिलावे करम जमान घटा-

वे रे ॥ प्रा० ॥ २१८ ॥ कुधरम त्याग कुगुरुकी संगति क्या षटकाय संतावे ॥ ममता मार कह्यो कर मेरो ज्यूं निरभय पद पावे रे ॥ प्रा० ॥ २१९ ॥ आतमघाती मूढ मिथ्याती आपो आप वखाणे ॥ जालम जाती पूजा पाती परमेश्वर नहि जाणे रे ॥प्रा० ॥ २२० ॥ मारण मरण सही सव तीरथ भोळू भरम निवारो ॥ तारण तिरण नही जल जमना निश्चे एह अवधारो रे ॥ प्रा० ॥ २२१॥ अमल कहे सो आमल कहिये अकल कहे सो अकली ॥ सांच कहे सो साधू कहिये नकल करे सो नकली रे ॥ प्रा०२२२॥ धरम करे सो धरमी कहिये पाप करे सो पापी ॥ वाद करे सो वादी कहिये थाप करे ज्यो थापी रे॥ प्रा० ॥ २२३ ॥ क्रोध करे सो क्रोधी कहिये मान करे सो मानी ॥ दंभ करे सो दंभी कहिये दान करे सो दानी रे ॥ प्रा० ॥ २२४ ॥ जोड करे सो जोडा कहिये राग करे सो रागी ॥ राग द्वेष तज भये निरागी सो कहिये वैरागी रे ॥ प्रा० ॥ २२५ ॥ गुदडी मांहि धका धक जैसे त्युं साजनका मेला ॥ खलक मुलक खुवी महवुवी छांडी ठेल अकेला रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २२६ ॥ हंस मुसाफर मारगलागा परिजन मिल

देवि मासी ॥ न्नाव धरीने साहिव सेवो जिम टव जाय चोरासी रे ॥ प्रा० ॥ २१० ॥ दरव पूजासे प्र न्नु नहि रीजे वीतो देव निरागी ॥ न्नाव पूजा नग वंतरी करता सव डुख जावे न्नागी रे ॥ प्रा०॥२११॥ किसकूं ध्याऊ किसकूं गाऊ किसकूं सीस नमाऊं॥ देहरा सरमे वहिरा वैठा मेवण पासन जाऊं रे ॥ प्रा० ॥ २१२ ॥ क्या जल न्हाऊ क्या फल खाऊ क्या देखुं दिखलाऊ ॥ एति वात मुजे वतलावो उ न चरने चितलाऊ रे ॥ प्रा० ॥ २१३ ॥ गुंगा देव गु रू गुणहीणा उनसे क्या कडु पावे ॥ उवे तो आ- प अचेतन दावे जावे मूल गमावे रे ॥ प्रा० ॥२१४॥ जेसा गुरू तेसा पूजेरा मिथ्या वात सुहावे ॥ उवे मुजकूं क्या वात्त सुनावे क्या समजे समजावे रे ॥ प्रा० ॥ २१५ ॥ के गंगाजल जमना न्हावे के पापाण पुजावे ॥ के ऊंचापग शिर लटकावे के किरिया दि खलावे रे ॥ प्रा० ॥ २१६ ॥ के सुचि सोधन सूग निमाणा के नख केश वढावे ॥ ब्रह्मज्ञान आतम वि- न परचे पार ब्रह्म नहि पावे रे ॥ प्रा० ॥ २१७ ॥ जल जठरागन प्यास वुजावे तनकी तपत मिटावे॥ जल जगदीश न मुग्ध मिलावे करम जमान घटा-

रे ॥ प्रा० ॥ २३५ ॥ धरम विवेक विना गुन संगति फिर फिरवो चोरासी ॥ किसनलाल कहे चेतसयां ना फिर पीछे पिछतासी रे ॥ प्रा० ॥ २३६ ॥

॥ दोहा ॥

सज्जन वृन्द सुहावनी मन भाविनी तमाम ॥ वरनी विवेकमंजरी किसनलाल अभिराम ॥ १ ॥ कहुं प्रगट कहु गुप्त हे लीज्यो अर्थ सुधार ॥ कवि कोविद करुणा करी कीज्यो पर उपगार ॥ २ ॥

इति विवेकमंजरी ॥

॥ मातसाकंभ राजरानी लाज तुं रख ले भवानी ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुरुकी सीख सुनो भाया करो जिन धरम छोरु माया ॥ सुभग फल पुन्य तणा गाया अशुभ फल अघका दरसाया ॥ वसुकर्माकी प्रकृती एकसो अडतालीस भिंन भिंन रसदे उदे हुवा ते इम भा ष्यो जगदीश निकाचित निद्धित बंध भारी २ ॥१॥ टरे नहि करम रेखटारी शुभाशुभ भुगते नरना री ॥ टेर ॥ प्रथम जिन मरुदेवी जाया नाभिकुल मं डन सुख दाया वरस एक अहार नहि पाया चरम जिन द्विज कुलमें आया संजमले तपस्या करी ग

मिल जूरे ॥ जन परजनसूं प्रीत वणाई हरष मनोरथ पूरे रे ॥ प्रा० ॥ २२७ ॥ ज्युं निद्राके वस नरनारी सोचे सुरतन कांई ॥ त्यूं यह चेतन जनमजनमकी खवर कहुं न वताई रे ॥ प्रा० ॥ २२८ ॥ जेसे वालो मद मतवालो विकल सरूपी झोले ॥ तेसे नाम करमके तोले जीव समज विन वोले रे ॥ प्रा० ॥२२९॥ पर ममता कर वंधन वंधे तव तहां नरक सिधाए॥ आरज देश अनारज कुलमें कुणकुण करम कमाए रे ॥ प्रा० ॥ २३० ॥ तप जप किरिया कष्ट प्रजावे सुर पदवी पिण पाई ॥ गति तिरयंच विगल थावरमें चिहुं नेदे वतलाई रे ॥ प्रा० ॥ २३१ ॥ केवल ज्ञानी ज्ञान दिवाकर पांचे गति परकासी ॥ पांचोकी चरचा जिन मतमें उर अज्ञान अज्यासी रे ॥ प्रा० ॥ २३२ ॥ दन्तकथा कहि जग नरमावे मुजकूं आवे हांसी ॥ आप करे शिरदे साहिवके जे नविना जगवासी रे ॥ प्रा० ॥ २३३ ॥ लोनी मित कूगुरुकी संगति ए दोनुंसे झरिये ॥ डुरजनको वेसास न करिये अजल विना क्युं मरिये रे ॥ प्रा०॥२३४॥ सदगुरु सीख सदा उर धरिये मोह करमसूं लरिये॥ ए पर वचन आराधी तरिये दोनुं डुख परहरिये

रे ॥ प्रा० ॥ २३५ ॥ धरम विवेक विना गुन संगति फिर फिरवो चोरासी ॥ किसनलाल कहे चेतसयां ना फिर पीछे पिछतासी रे ॥ प्रा० ॥ २३६ ॥

॥ दोहा ॥

सज्जन वृन्द सुहावनी मन जाविनी तमाम ॥ वरनी विवेकमंजरी किसनलाल अजिराम ॥ १ ॥ कहुं प्रगट कहु गुप्त हे लीज्यो अर्थ सुधार ॥ कवि कोविद करुणा करी कीज्यो पर उपगार ॥ २ ॥

इति विवेकमंजरी ॥

॥ मातसाकंज राजरानी लाज तुं रख ले जवानी ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुरुकी सीख सुनो जाया करो जिन धरम छोरु माया ॥ सुजग फल पुन्य तणा गाया अशुज फल अघका दरसाया ॥ वसुकर्माकी प्रकृती एकसो अडतालीस जिंन जिंन रसदे उदे हुवा ते इम जा ख्यो जगदीश निकाचित निद्धत वंध जारी २ ॥१॥ टरे नहि करम रेखटारी शुजाशुज जुगते नरना री ॥ टेर ॥ प्रथम जिन मरुदेवी जाया नाजिकुल मं डन सुख दाया वरस एक अहार नहि पाया चरम जिन द्विज कुलमें आया संजमले तपस्या करी

मिल जूरे ॥ उन परजनसूं प्रीत वणाई हरप मनोरथ पूरे रे ॥ प्रा० ॥ २२७ ॥ ज्युं निद्राके वस नरनारी सोचे सुरतन कांई ॥ त्यूं यह चेतन जनमजनमकी खवर कहुं न वताई रे ॥ प्रा० ॥ २२८ ॥ जेसे वालो मद मतवालो विकल सरूपी झोले ॥ तेसे नाम करमके तोले जीव समज विन वोले रे ॥ प्रा० ॥२२९॥ पर ममता कर वंधन वंधे तव तहां नरक सिधाए॥ आरज देश अनारज कुलमें कुणकुण करम कमाए रे ॥ प्रा० ॥ २३० ॥ तप जप किरिया कष्ट प्रज्ञावे सुर पदवी पिण पाई ॥ गति तिरयंच विगल थावरमें चिहुं ज्ञेदे वतलाई रे ॥ प्रा० ॥ २३१ ॥ केवल ज्ञानी ज्ञान दिवाकर पांचे गति परकासी ॥ पांचोकी चरचा जिन मतमें उर अज्ञान अज्यासी रे ॥ प्रा० ॥ २३२ ॥ दन्तकथा कहि जग ज्ररमावे मुजकूं आवे हांसी ॥ आप करे शिरदे साहिवके जे नविना जगवासी रे ॥ प्रा० ॥ २३३ ॥ लोज्ञी मित कुगुरुकी संगति ए दोनुंसे झरिये ॥ दुरजनको वेसास न करिये अजल विना क्युं मरिये रे ॥ प्रा०॥२३४॥ सद्गुरु सीख सदा उर धरिये मोह करमसूं लरिये॥ ए पर वचन आराधी तरिये दोनुं दुख परहरिये

रे ॥ प्रा० ॥ २३५ ॥ धरम विवेक विना गुन संगति फिर फिरवो चोरासी ॥ किसनलाल कहे चेतसयां ना फिर पीछे पिछतासी रे ॥ प्रा० ॥ २३६ ॥

॥ दोहा ॥

सज्जन वृन्द सुहावनी मन भाविनी तमाम ॥ वरनी विवेकमंजरी किसनलाल अभिराम ॥ १ ॥ कहुं प्रगट कहु गुप्त हे लीज्यो अर्थ सुधार ॥ कवि कोविद करुणा करी कीज्यो पर उपगार ॥ २ ॥

इति विवेकमंजरी ॥

॥ मातसाकंभ राजरानी लाज तुं रख ले भवानी ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुरुकी सीख सुनो भाया करो जिन धरम छोरु माया ॥ सुभग फल पुन्य तणा गाया अशुभ फल अघका दरसाया ॥ वसुकर्माकी प्रकृती एकसो अडतालीस जिंन जिंन रसदे उदे हुवा ते इम भा ख्यो जगदीश निकाचित निद्धित बंध भारी २ ॥१॥ टरे नहि करम रेखटारी शुभाशुभ भुगते नरना री ॥ टेर ॥ प्रथम जिन मरुदेवी जाया नाभिकुल मंडन सुख दाया वरस एक अहार नहि पाया चरम जिन द्विज कुलमें आया संजमले तपस्या करी

वारमो चक्री हुवो करमसे अंध आठमो रुव मस्यो वारी २ ॥ टेर० ॥ ६ ॥ अंजना मेण रेहासीता सुभ द्रा दवदंती गीता द्रोपदीमें वीतक वहु वीता घोर दुख सह्या मार पीता चंदनवाला नृप सुता मोलवि की अन मोल इत्यादिक सतियाने आवी करम दि या फक फोल शीलमें रही दृढता धारी २ ॥ टेर० ॥ ७ ॥ पाप घट रावनके ठायो कुवदकर सीता हर लायो राम दलवादल ले आयो चक्रसे लिछमनजी ढायो इत्यादिक वहु जीवने करमां किया फजीत व लिहारीमें उन पुरुषाकी करम कटकने जीत मुगति गढ लीधो सुखकारी २ ॥ टेर० ॥ ८ ॥ ठोरुदे कर्म वंध हेतूं हिये धर टूटणकावे तुं दया भव अरणवमें सेतु राख दिल तिस्योचाहे जे तुं किसनलाल साचो कहे चेत सकेतोचेत कर सुकृत गाफिल मत रहे तुं शि रपर आया श्वेत आतमा सुख पासीयारी२॥टेर०॥९॥

॥ नेपाल सहरसे आया महाराजा केसर सिंहजी ॥ ए देशी ॥

॥ सुज्ञानी जीवा परपरी वाद न कीजिये मतिवं ता प्राणी आगम साख सुन. लीजिये ॥ टेर ॥ पूठ

या अनारज देस भीम परीसा सुरनर तिरिका सह न किया तज देस पुरा कृत भुगत्या अवतारी २ ॥ टेरे० ॥ २ ॥ पांम्ववा राज सभा कीधी देख डुर योधन वररिझी हास निंदा सुणपर सिझी कपट क रि राजसिरी लीधी सात जणा वनवासमें भमिया पामर जेम वारे वरस लग वहु डुख देख्या ते कहि सकिये केम राज लियो डुरयोधन मारी ॥२॥ टेरे० ॥ ३ ॥ पुन्यसे माधव इण लोगी सायवी इंद्र जिसी भोगी द्वारका वाली जदजोगी संपदा सुपना जिम होगी भोगवतां डुख मानसी निकल्या वंधव दोय पांडव मथुरा जातां विचमें मरण प्रापति होय गया वलभद्र लेन वारी २ ॥ टेरे० ॥ ४ ॥ दशा डुर हर चंदकी आई अयोध्या नगरी छिटकाई गयो रिपु व हुल देश मांई भस्यो जल नीच घरे जाई वेची सु तारा लोचनी ते डुख कह्यो न जाय सुत मरणादिक कष्ट पड्या पिण सत नहि छोड्यो राय प्रग सुर हो- य कही विधि सारी २ ॥ टेरे० ॥ ५ ॥ कष्टसिरी पा ल वहुत पाया किया सो करम उदे आया ध्यान तिण नव पदका ध्याया उसीसे आनंद वरताया श्रे णक पिंजरेमें दियो कुरकट राजा चंद ब्रह्मदत्त नामे

वारमो चक्री हुवो करमसे अंध आठमो सुव मर्यो वारी २ ॥ टेर० ॥ ६ ॥ अंजना मेण रेहासीता सुभ्रद्रा दवदंती गीता द्रोपदीमें वीतक वहु वीता घोर दुख सह्या मार पीता चंदनवाला नृप सुता मोलवि की अन मोल इत्यादिक सतियाने आवी करम दिया ऊक ऊोल शीलमें रही दृढता धारी २ ॥ टेर० ॥ ७ ॥ पाप वट रावनके ठायो कुवदकर सीता हर लायो राम दलवादल ले आयो चक्रसे लिछमनजी ढायो इत्यादिक वहु जीवने करमां किया फजीत व लिहारीमें उन पुरुषाकी करम कटकने जीत मुगति गढ लीधो सुखकारी २ ॥ टेर० ॥ ८ ॥ छोरूदे कर्म वंध हेतूँ हिये धर हूटणकावे तुं दया भव अरणवमें सेतु राख दिल तिर्योचाहे जे तुं किसनलाल साचो कहे चेत सकेतोचेत कर सुकृत गाफिल मत रहे तुं शिरपर आया श्वेत आतमा सुख पासीथारी२॥टेर०॥९॥

॥ नेपाल सहरसे आया महाराजा केसर सिंहजी ॥ ए देशी ॥

॥ सुज्ञानी जीवा परपरी वाद न कीजिये मतिवंता प्राणी आगम साख सुन. लीजिये ॥ टेर ॥ पूछ

पीठे अवगुण वोले तो आपसमाधीनो कारण सम वायांग सूतरमें नाख्यो कीज्यो हिरदे धारणारे ॥सु० ॥१॥ दशवैकालिक मूल सूत्रमें अष्टम अध्ययन मझा र सेतालीसमी गाथामें कह्यो निंदानो परिहार रे ॥ सु० ॥ २ ॥ अन्य पुरुषने अवही देते जीव लहे दु ख जोर आवश्यक सूतरमें देखो पाप पनरमो घोर रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सुयगडांगमें निन्नवनरने कह्यो अ ज्ञानी बाल चतुरगतीमें भ्रमण करे शठ ते प्राणी चिरकाल रे ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ श्लोकः ॥

पक्षिणां काक चंडालः पशूनां चैव कुक्करः ॥ मु नीनां कोप चंडालः सर्व चंडाल निंदकः ॥ १ ॥ ख स्यापी पर निंदनीक नरतिणमें तेरा दोप ॥ परसन तारकरणमांही देखो किण विध जासी मोखरे ॥ पडेर ॥ हित शिक्षा सुन हिरदे धारो ज्युं पावो ॥ आलस निद्रा दूर निवारी लो जिनवर वहुत पाये सु० ॥ ६ ॥ वह्नी युग निधि इंदु स नव पदकां ध्याया १ आतमनिंदा अष्टक आ पिजरेमें दियो कुरक सु० ॥ ७ ॥

॥ किण मास्यो म्हारो मोर वताये
नणदी किण० ॥ ए देशी ॥

॥ मति जावो मोरा नेमपियातजके मति जावो रे० ॥ टेर ॥ जान जलूसवणी अति सुंदर कृष्ण आरूढ्या हवदे गजके ॥ मति० ॥ १ ॥ जो थारे मन या हुंती तो क्युं आया इतनी जांन सजके ॥मति० ॥ २ ॥ में द्युतिदामनी रूप पुरंदरी आप साख्यात मकर धजके ॥ मति० ॥ ३ ॥ वरसी दान दियो तजतोरन त्याग किया सव सावजके ॥ मति० ॥ ४ ॥ किसन कहे धन राजुल नारी मुगति गई संजम भजके ॥ मति० ॥ ५ ॥

॥ राग वसंत ॥

॥ देखो कल जुगरी ठाया यामें मालक वणी हे लुगायां ॥ टेर ॥ घरमें वेठी हुकम चलावे जोडे व की हताया घरको खावद ढुग मुग न्हाले जाणे डाय जे आया ॥ देखो० ॥ १ ॥ नाहरी ज्युं वा करे घुरका धूजण लागी काया ॥ जिणसूं ऋरता घर नहि आवे जाणे कालिका खाया ॥ देखो० ॥ २ ॥ घरखावदकने देखो मांगे कितना दाम कमाया ॥ रोक हुवे तो धरे निज पासे पुन परदेश पठाया ॥ देखो०

पीठे अवगुण बोले तो आपसमाधीनो कारण सम वायांग सूतरमें त्राप्यो कीज्यो हिरदे धारणारे ॥सु० ॥१॥ दशवैकालिक मूल सूत्रमें अष्टम अध्ययन मझा र सेंतालीसमी गाथामें कह्यो निंदानो परिहार रे ॥ सु० ॥ २ ॥ अन्य पुरुषने अवही देते जीव लहे उ ग्र जोर आवश्यक सूतरमें देखो पाप पनरमो घोर रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सुयगडांगमें निन्हवनरने कह्यो अ ज्ञानी बाल चतुरगतीमें भ्रमण करे शठ ते प्राणी चिरकाल रे ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ श्लोकः ॥

पक्षिणां काक चंडालः पशूनां चैव कुक्करः ॥ मु नीनां कोप चंडालः सर्व चंडाल निंदकः ॥ १ ॥ स्व स्यापी पर निंदनीक नरतिणमें तेरा दोष ॥ परसन तारंकरणमांही देखो किण विध जासी मोखरे ॥ ष्ट पडेर ॥ हित शिक्षा सुन हिरदे धारो ज्युं पावो कही ॥ आलस निद्रा दूर निवारी लो जिनवर ख बहुत पाय सु० ॥ ६ ॥ वहनी युग निधि इंदु स- तिण नव पदका ध्याया १ आतमनिंदा अष्टक आ णक पिंजरेमें दियो कुरक सु० ॥ ७ ॥

लाखां लोक हराया ॥ देखो० ॥ १२ ॥ सारी नारी नही छे सारखी किसन कहे सुन भाया ॥ प्रीतम कहण कदे नहि लोपे जाणे ईश्वर पाया॥देखो०१३॥

॥ राग वसंत व्रजहोरी ॥

॥ नित आया करो घरका सब राजी नित०

॥ ए देशी ॥

॥ करमां तणी केम कटेरे पासी करमां तणी० ॥टेर॥ रागरू द्वेष लग्या संग डोलत पाप अठारे दुखरासी ॥ करम[illegible] ॥ १ ॥ हिंसा करी ते हार हियाको करु[illegible] घरकी दासी ॥ करमां०॥ २ ॥ वांध[illegible] ।।भवमें येहिज भमावे लख चो-[illegible] ॥ कामदार थारे क्रोध वण्यो [illegible]य वणी रे मांसी ॥ करमां०॥४॥ [illegible] रे पाड्यो सम्यक् ज्ञान गयो रे [illegible]॥ ५ ॥ विषय कषाया लोभ संग [illegible] वनिता दिलभासी ॥ करमां० ॥६॥ स[illegible] गम्यो घट भीतर क्या ढुंढत मथुरा कासे[illegible]रमां० ॥ ७ ॥ किसन कहे [illegible] जे तो [illegible]त मिले पद अविनासी ॥

॥ ३ ॥ हजवे वोलणमें नहि लनके लाखे डोल व जाया ॥ मने करे तो हूणी होवे वेलोटो धनकाया॥ देखो० ॥ ४ ॥ मन माने जिहां फिरे मटकती मारी रीत उठायां ॥ गुंगट गाली हूर किया तब नेट हि वी अवलाया ॥ देखो० ॥ ५ ॥ दूख सोख्यालूं कांइ यन होवे घोती करे हे वनाया ॥ में न आइनव धु ल उडेठी थान्हारा घरकी माया ॥ देखो० ॥ ६ ॥ हाथ जोडने खांवद वोले में तो तूं मरपाया ॥ दूप पन डारी लरन राखदे तोही में लाख कमाया ॥ दे खो० ॥ ७ ॥ लायलंकारी मिली करकसा पाप उदे तुज आया ॥ मने करां नहि मतुप हो त्यांतो करो भुननका चाया ॥ देखो० ॥ ८ ॥ इतरा काया किए परहुन गया एक लुगाई लाया ॥ पेली पोठ बिचारी [illegible] अवकांइहे पिठतायां ॥ देखो० ॥ ९ ॥ तीधी [illegible] मिल गई थाने दलना नाहि खुलाया ॥ नि [illegible] ज नही हे थाने वोलो मगज मरायो ॥ दे [illegible] १० ॥ म्हा वितनू नहेन जगतमें सो अ हुत पाए ॥ तू दीने नाटरको जायो जवराकेइ नव पदवोः ॥ ११ ॥ नारी तेती करी मनाने सिरसेंनें क्रिया ॥ मार मरोनो वेठ जाय तो

मा जस जननी दादी जान दयासी रे ॥ मुनि० ॥ ॥ १ ॥ चारित चाचो नाव नतीजो काकी शुन्नकिरियासी रे ॥ मुनि०॥ २ ॥ उद्यम दास विवेक सहोदर बुद्धि कलत्र विन्नासी रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ ज्ञान सुपुत्र परमारथ पोतो तत्वरुची वरमासी रे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ दान सुदादो मार्दव मामो पुत्र वधू समतासी रे ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ आगम सुसरो सासू सुमती नावना श्रेष्ठ नुवासी रे ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ संजम सालो वहिन चेतना संघसगो सुविलासी रे ॥ मुनि० ॥ ॥ ७ ॥ अमर कुटंव किसन ढिग जिनके ते मुनि शिवपद पासी रे ॥ मुनि० ॥ ८ ॥

॥ राग ठुमरी ॥

॥ गुरुवचन सुनत मेरी नूल नगी ॥ टेर ॥ करम सुन्नाव नाव चेतनको निन्न पिछानिं जगी ॥ गुरु० ॥ १ ॥ निज अनुन्नूति सहज ता सोचिरुरुषतुस मेल पगी ॥ गुरु० ॥ २ ॥ वाद धुनी निरमल जलसे विमल नई गी ॥ गुरु० ॥३॥ संसयमोह नरमता निजातम सोजसगी ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ ज्ञान सुधारस पीवो सुगुरु सुवखान वगी।

॥ राग वसंत होरी काफी ॥

॥ खेलो रे जन ज्ञानकी होरी जरे जिम पापकी डोरी० ॥ खेलो रे० ॥ टेर ॥ नरन्नव पाय वसंत रुतुसम अनुन्नोफाग रमोरी ज्ञान गुलाल अवीर उडावो समता केसर रंग घोरी वुरा मुखसे नवकोरी ॥ खेलो० ॥ १ ॥ क्रोध मान मद धूड उमावो पाप करम न्नर जोरी रूोलची दान दया पिचकारी निज गुण होद न्नरोरी वृथा जलकूं मत ढोरी ॥ खेलो०॥ ॥ २ ॥ धरम शुकल दोय ताल वजावो न्नावनावंसरि सोरी डफ संतोष मृदंग महारुचि समकित वीण गहोरी प्रन्नु गुण गाय रिजोरी ॥ खेलो० ॥ ३ ॥ धीरज धोती जेणा कर जामो न्नाव न्नलो कुपटोरी विनय रुमाल विवेक पाग शिर न्नक्तिसुं शेली धरोरि शील शुन्न वेस नवोरी ॥ खेलो० ॥ ४ ॥ सुमति सखी संग फाग मचाव्रो कुमति संग तजदोरी किसन कहें जिन धरम अराधो शिव वधू वेगवरोरी मिथ्या मत ठोरू परोरी ॥ खेलो० ॥ ५ ॥

॥ पानीमें मीन पियासी ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिको कहिये गृहवासी रे मु०जाके न्नाव कुटंव गुणरासी रे ॥ मुनि० ॥ टेर ॥ धीरज तात क

मा जस जननी दादी जान दयासी रे ॥ मुनि० ॥ ॥ १ ॥ चारित चाचो भाव भतीजो काकी शुभकिरियासी रे ॥ मुनि०॥ २ ॥ उद्यम दास विवेक सहोदर बुद्धि कलत्र विभासी रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ ज्ञान सुपुत्र परमारथ पोतो तत्वरुची वरमासी रे॥ मुनि० ॥ ४ ॥ दान सुदादो मार्दव मामो पुत्र वधू समतासी रे ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ आगम सुसरो सासू सुमती भावना श्रेष्ठ भुवासी रे ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ संजम सालो वहिन चेतना संघसगो सुविलासी रे ॥ मुनि० ॥ ॥ ७ ॥ अमर कुटंब किसन ढिग जिनके ते मुनि शिवपद पासी रे ॥ मुनि० ॥ ८ ॥

॥ राग ठुमरी ॥

॥ गुरुवचन सुनत मेरी भूल भगी ॥ टेर ॥ करम सुभाव भाव चेतनको भिन्न पिछानि सुमति जगी ॥ गुरु० ॥ १ ॥ निज अनुभूति सहज ज्ञापकता सोचिररुषतुस मेल पगी ॥ गुरु० ॥ २ ॥ स्याद वाद धुनी निरमल जलसे विमल भई समभाव गी ॥ गुरु० ॥३॥ संसय मोह भरमता विघटी निजातम सोजसगी ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ किसनसु ज्ञान सुधारस पीवो सुगुरु सुवखान वगी॥ गुरु०।

॥ मारूरागमें नेम राजमतीके नव भव हो ॥ मत छांडो रे पिया कोइ थारे म्हारे नव भवकेरो साथ जीमति छांमो रे पिया ॥ टेर॥ धन पति नामे राज वीजी भव पेलामें आप ॥ धनवती राणीमें हुई जद प्रेम निभाधो धापजी ॥ मत० ॥ १ ॥ स्वर्ग सुधरमें देवताजी मित्रपणे अभिराम ॥ भव वीजामें स्नेह घणो छो अव किम तोडो स्वामजी ॥ मत० ॥ २ ॥ चित्रगती विद्या धरूजी भव तीजाके माय ॥ रतव ती पटरागनीजी में हुंती सुखदायजी ॥ मत० ॥३॥ माहेंद्रनाके निरजराजी भव चोथामे होय ॥ प्रेम प रस परिपोषताजी जीव एक तनु दोयजी ॥ मत० ॥ ४ ॥ अपराजित भव पांचमेजी आप हुवा नरना- थ ॥ प्रिय मति राणी प्रेम हुतो जिम चंद कमोदनी नी ॥ मत० ॥ ५ ॥ आरणे स्वर्गे त्रिदशाजी भ महाभाग ॥ चातक जल धरनी परेजी छो रागजी ॥ मत० ॥ ६ ॥ संखराय भव सात वरनार॥ दूर न मनसे हो वतांजी ॥ मत० ॥ ७ ॥ स्वर्ग पचीसमें उदार र हुवा भव आ- ॥ मत० ॥ ८ ॥

घरमें रही वरस च्यारसे जी पण सत केवल सार ॥ वरस एक छदमस्थ रही प्रभु पहली ही मुगति म झारजी ॥ मत० ॥ ए ॥ बाल ब्रह्मचारी महाजी राजमती रठ नेम ॥ कृष्ण कहे धन दंपतीजी तिणे अविचल कीधो प्रेमजी ॥ मत० ॥ १० ॥

॥ ढोल्यारी दासी गेदो मति तोमो ए०॥ए देशी॥

॥ मानव भव एलो मति हारो रे हांरे जीवा सु गुरु सिखामण धारो रे ॥ टेर ॥ दश दृष्टांते दोहि लो रे ॥ हां० ॥ लाधोयो मनुष जमारो रे ॥ मा० ॥ दान सियल तप भावना रे ॥ जी० ॥ रुचे सोहि क रो अंगीकारो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ नर भव आरज दे शमें रे ॥ हां० ॥ ऊंचे कुल दीर्घायू सारो रे ॥मा०॥ पुरणेंद्री शरीर निरोगता रे ॥ हां० ॥ पुन्य जोगे मिल्या अणगारो रे ॥ मा० ॥ २ ॥ सूतर सुणवो दो हिलो रे ॥ हां० ॥ सुध समकित सुविचारो रे॥मा० धरममें पराक्रम फोरवो रे ॥ हां०॥ मिल्या दश बो ल उदारो रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ सुखसर सब दुखमें र सारे ॥ हां० ॥ विषसंम विषय विकारो रे ॥ मा० ॥ फल किंपाक रीउपमा रे ॥ हां० ॥ मधुलिप्त जिम खरुग धारो रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ अथिरायु जिम जल

॥ मारूरागमें नेम राजमतीके नव नव हो ॥ मत छांडो रे पिया कोइ थारे म्हारे नव नवकेरो साथ जीमति छांडो रे पिया ॥ टेर॥ धन पति नामे राज वीजी नव पेलामें आप ॥ धनवती राणीमें हुई जद प्रेम निनायो धापजी ॥ मत० ॥ १ ॥ स्वर्ग सुधरमें देवताजी मित्रपणे अनिराम ॥ नव वीजामें स्नेह घणो छो अव किम तोडो स्वामजी ॥ मत० ॥ २ ॥ चित्रगती विद्या धरूजी नव तीजाके माय ॥ रत्नव ती पटरागनीजी में हुंती सुखदायजी ॥ मत० ॥३॥ माहेंद्रनाके निरजराजी नव चोथामे होय ॥ प्रेम प रस परिपोषताजी जीव एक तनु दोयजी ॥ मत० ॥ ॥ ४ ॥ अपराजित नव पांचमेजी आप हुवा नरना- थ ॥ प्रिय मति राणी प्रेम हुतो जिम चंद कमोदनी साथ जी ॥ मत० ॥ ५ ॥ आरणे स्वर्गे त्रिदशाजी न वरसमे महानाग ॥ चातक जल धरनी परेजी छो उतकृष्टो रागजी ॥ मत० ॥ ६ ॥ संखराय नव सात में जी जसोमती वरनार॥ दूर न मनसे हो वतांजी पूरन हु तो प्यारजी ॥ मत० ॥ ७ ॥ स्वर्ग पचीसमें शोनताजी सुहृदपणे उदार ॥ अमर हुवा नव आ- ठमें जी इण नवे तुम नरतारजी ॥ मत० ॥ ८ ॥

कंदा ॥ हद वेहद दोनुं ज्ञव दोखे जीवा जीव जि
णंदा रे ॥ ज्ञवि० ॥ ३ ॥ च्यारुं गति च्यारूं दरवाजा
धर गिर दीप समंदा ॥ सरव गतागति लख चोरा
सी ज्ञेदा ज्ञेद लखंदा रे ॥ ज्ञवि० ॥ ४ ॥ तिण अव
सर इंदरासन कंपे अवधि करी देखंदा ॥ नमसका
र केवल गुरु ज्ञानी इंद्र मुखे आखंदारे ॥ज्ञवि०॥५॥
इंद्र इंद्राणी मिलकर आवे पावां कमल ठवंदा ॥ गु
ण गावे नाटक दिखलावे अपछर अति आनंदा रे
॥ ज्ञवि० ॥ ६ ॥ अधर आकासे वाजा वाजे मधुरी
ध्वनि मन ठंदा ॥ दरव सुगंधा परिमल वासे मेह
क मेहक मे कंदा रे ॥ ज्ञवि० ॥ ७ ॥ देवी देव करे
वहु महिमा गिणत नही सुर वृंदा ॥ सकल सुरासु
र सवद सुणावे जै जै जै जिणचंदा रे ॥ ज्ञवि०॥८॥
कमलासन वेठी परकासे वाणी केवल कंदा ॥ संश
य दूर हरे ज्ञवि जनके धरम दया दाखंदा रे ॥ज्ञ०
॥ ए ॥ सत्यशील संतोष वतावे मारग मुगति मुणं
दा ॥ ज्ञान ध्यान धीरज मन थिरता करता करत
कहंदा रे ॥ ज्ञवि० ॥ १० ॥ ज्ञंजन कमठ मान मन
रंजन अश्वसेन कुलचंदा ॥ वंदत किसन युगल कर
जोमी मेटण ज्ञवडुख दंदा रे ॥ ज्ञवि० ॥ ११ ॥

अंजली रे ॥ हां० ॥ वीजलिनो झबकारो रे ॥मा०॥ इन्द्रजाल घन माल ज्युं रे ॥ हां० ॥ सुपना ज्युं अ निज्ञ संसारो रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन धन संपदा पा यने रे ॥ हां० ॥ गर्व करे सी गिवारो रे ॥ मा० ॥ पुदगलरी मुरछा वुरी रे ॥ हां० ॥ इम जाणि मम ता निवारो रे ॥ मा०॥ ६ ॥ सब कोइ स्वारथना स गारे ॥ हां० ॥ तुं किणरोने कुण थारो रे ॥ मा० ॥ मोहनी कर मरी जालमें रे ॥ हां० ॥ घेर लियो प रिवारो रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ संगति सारू व्रत आदरो रे ॥ हां० ॥ जिम होवे नव निसतारो रे ॥ मा० ॥ स्वर्ग मुगति सुख सो लहे रे ॥ हां० ॥ किसन धर म जस प्यारो रे ॥ मा० ॥ ८ ॥

॥ पदम प्रभु पावन नाम तिहारो ॥ एदेशी ॥

॥ दरव करमका वंधन काटे नाव करमका फंदा॥ नोकर मतका नाता तोडे नरम न नाव निकंदा रे ॥ १ ॥ नविका नज प्रनु पास जिनंदा जाकूं सेवत सुर नर वृन्दा रे ॥ नविका० ॥ आंकडी ॥ पुन्य पा पका परदा फाडे सोफाजल फर जंदा ॥ फटे अ ज्ञान नरमके वादल प्रगटे ज्ञान दिणंदा रे ॥नवि० ॥ २ ॥ लोका लोक निजर सब आवे वंधन वंध मु

वरसे सघन घन वीजो कहे भूमि सेतीखेती निपज ति हे तीजो कहे वीजसेती चोथो कहे हलसेती हाली सेती पांचमो वतावे सोही छति हे चछो कहे वेलसेती सातमो निखेदे यारखेती भाग्यसेती एसी हिये दरसति हे एक पक्षताने यामे वोही मिथ्या दृष्टि जीव कृष्णलाल माने सवेसोही जिनमति है ॥३॥

॥ अथ गीया छंदः ॥ प्रथम कोष्टक स्थाप पूरव नैरत कोंणे फिर धरो उत्तर दिश पुनि वायव कोंणे मध्यम कोष्टक फिर भरो विदिशि अगनी दक्षिण दिशिमें फिर ईशाने आणिये पछिम दिशि इम कि सन विधियुत विजय यंत्र वखाणिये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टादशमा जिन तणो जनंक[1] नाम सुखदाय॥ तावत अक्षर दूर कर वचे सोवे गदिराय ॥ ५ ॥ भूंअंवर[2] दोन्युं मिल्या नाम भणी जे तास ॥ किसन कहे तिन पापणी सव जग कीनो दास ॥ ६ ॥ एक वासरे मायने थिर न रहे परिणाम ॥ तपस्या कर णी किसनिया शूरवीररा काम ॥ ७ ॥ लगलग[3] कर तानां लगे मतलग मतलग लग्ग ॥ केर सांगरीना

---

१ 'सुदर्शन, २ 'भूख, ३ 'अधर,

॥ कलशः ॥

॥ नवसिंधु वर्धन चंद्रि कोपम कुमति ताप सु चंदनः समनक्ति तर निर्जर पुरंदर निकर विरचित वंदनः ॥ धन कुशलकारी दुरित हारी सकल जगद् निनंदन मंगलवनु नविनां नक्ति ननमा जन निरा मानंदन ॥ १ ॥

॥ मत्तगयंद ॥

॥ बुद्धि नुप्रापनिको फल एहि ज तत्त्व विचार करे जन कोइ देह निरोग नुप्रापनिको फल दान दया व्रत धारन होइ । प्रीति वदे सब लाकनमें जिमवो लन जान गिरा फल सोइ कृष्ण कहे धन प्रापतिको फल सुकृत काम लगे गुन जोइ ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ तीन कोस जारे उक्यासी लाख वारेसेंस नवने मिलर सण गोलो एक मानिरे आयो ऊर्ध्व लोक नेवो नामपट दिन पट पेर पट घरी पट पल पट जानिये ॥ ताको नाम गाज एक गेने अधो सातराज मानगाज कालेलाक जानने प्रमानिये नहमेव सत्यहे निनत्व हे किम्नलाल जाना देव नाप्यो

वरसे सघन घन वीजो कहे भूमि सेतीखेती निपज ति है तीजो कहे वीजसेती चोथो कहे हलसेती हाली सेती पांचमो वतावे सोही वति हे चठो कहे वेलसेती सातमो निखेदे यारखेती भाग्यसेती एसी हिये दरसति हे एक पक्षताने यामे वोही मिथ्या दृष्टि जीव कृष्णलाल माने सवेसोही जिनमति है॥३॥

॥ अथ गीया छंदः ॥ प्रथम कोष्टक स्थाप पूरव नैरत कोंणे फिर धरो उत्तर दिश पुनि वायव कोंणे मध्यम कोष्टक फिर भरो विदिशि अगनी दक्षिण दिशिमें फिर ईशाने आणिये पछिम दिशि इम कि सन विधियुत विजय यंत्र वखाणिये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टादशमा जिन तणो जनक[1] नाम सुखदाय॥ तावत अक्षर दूर कर वचे सोवे गदिराय ॥ ५ ॥ भूअंवर[2] दोन्युं मिल्या नाम भणी जे तास ॥ किसन कहे तिन पापणी सव जग कीनो दास ॥ ६ ॥ एक वासरे मायने थिर न रहे परिणाम ॥ तपस्या कर णी किसनिया शूरवीररा काम ॥ ७ ॥ लगलगं[3] कर तानां लगे मतलग मतलग लग्ग ॥ केर सांगरीना

---

१ 'सुदर्शन, २ 'भूख, ३ 'अधर,

लगे वोर मोगरी लग्ग ॥ ए ॥ सुलटावसु नहि कै
जिये वर न दोय लघु जोय ॥ उलटा गोमनकूं करे
जिम सुख वंछित होय ॥ ए ॥ सुलटावस करिये स
दा वरन दोय लघु जोय ॥ उलटा सव जगसें रहे
जिम सुख वंछित होय ॥ १० ॥ जिण कारण रावण
हण्यो डुख पाया रघुनाथ ॥ जोजन करता जूमिप
सामतना खो ञात ॥११॥ चंद पियारो विरहनी संजो
गनिकूं जान ॥ इण दोहारो अर्थ करे सो पंडित प
रवान ॥ १२ ॥ करनें करन करनी करी करन करनं
की कीन ॥ करंनी करनी करनकी कूकरनी करनी न
॥ १३ ॥ क्रोध विवेक ललाटमें काम लाज दो नैन॥
लोन्न दया हिरदे वसे जूपमान उरके न ॥ १४ ॥
तीतर वरनी वादली विधवा काली रेख ॥ वा वर से
वा घर करे इणमें मीन न मेप ॥ १५ ॥ आयु घटे
तृष्णा वढे घटवढ जाव विशेप ॥ करम रेख घटवढ
नही इणमें० ॥ १६ ॥ अण होणी होवे नही कोक
जतन कर देख ॥ होण हार सोही हुवे इणमें० ॥
॥ १७ ॥ पापी नरसूं प्रीतडी धरमी नरसूं द्वेप ॥ डु
रगति गामी जीव ते इणमें० ॥ १० ॥ निज आतम

१ 'मद, २ 'इन्द्रिया, ३ 'मन, ४ 'हातोमें, ५ 'हस्तिनी,

मेलो करे छिद्र पराया देख ॥ सो निर बुद्धी जीवहे इणमें० ॥ १ए ॥ अवसर पाय न चेतिया नर भव गयो अलेख ॥ ते नर बहु पिछतावसी इणमें० ॥२०॥ अब क्युं दाडुर थर हरे पकड्यो छेल भुजंग ॥ कारज तो तिनका सख्या जिण तामसमारी अंग ॥२१॥

॥ सवैया ॥ गुजरि एक चली पय वेचन षोम्हश चोकिही राजडुवारे एक गम्री भर दूध दियो जल गेर दियो तितनो इम सारे ॥ दंड दियो सब केरु पियो इक न्याव कियो सुधराज कुमारे आवत आदिम अंतिमके कहा दाम विचार कहो निरधारे ॥ २२॥

॥ कवित्त ॥

॥ च्यार छोर साधु एक श्रावक दिदार कर त्यागी हरि काय उपदेश दिलधारके पेली राखी हुंती तामे आधी पुरी छोरुदीनी दूसरा मुनिके पास तीजे हिसे छारके ॥ आठमां हिसाकी तजी तीसरा मुनीके जाय शेष रही च्यार छोरी चोथा अणगारके कृष्ण लाल कहे सारीके तीही वनास्पती करके हिसाव वोलो श्रावको विचारके ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक शेष चोवीसमें गिणत इसीपर जाण ॥ जिता सेष जितरा गुणा कर देखो परमाण ॥२३॥ कहण रहण नहि एकसी वहु मत लीनां हेर ॥ किसन लाल साची कहे कहण रहणमें फेर ॥ २४ ॥ होत कहा कथनी किये विन धारणा गिवार ॥ नर वरसो हि ज्यो सिंह ज्यो मन मतंगहनि मार ॥ २५ ॥ तन केतो त्यागी घने मन त्यागी कमलेख ॥ वातनके महाराज सव किसनलाल तो शेष ॥ २६ ॥ कथनी तो कथ हे घनी करनी करे न कोय ॥ रीतावाचे ऊंवरा धान कहांसे होय ॥ २७ ॥ कहण हरण इक सारखी ज्यो होवे संसार ॥ थावे तेहने अंजली यह जव पारावार ॥ २८ ॥ भेषधारि करनो कहा मन जीतनसे काम ॥ पेरु गिणनते काम कहा चोखि लिये जव आम ॥ २९ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन गुणवंत गुरु स्थिवरने वहु श्रुती तपसी वखाणिये नण्यो गुणे वार वार समकित विनेसार आवश्यकविधी शील शुद्ध मन आणिये ॥ ध्यान दोय तप दान व्यावच समाधीमान अ

पूरव ज्ञान भक्ति आगमैकी जानिये जैन पंथ थाप तो मिथ्यातकूं व्यापे जीवें वीस बोल तीर्थंकर गोत का पिछानिये ॥ ३० ॥

॥ सवैया ॥

॥ गुरु भक्ति किया भवमांहि रुले कवहु नरुले गुरु दुःख दिया अजरामर होय कषाय क्रिया कवहु न हुवे समता रुचिया जव अमृत पान किया जुमरे कवहु न मरे जन जहर पिया मुनिराज तिरे अति पाप किया कवहु न तिरे प्रभु नामलिया ॥ ३१ ॥

॥ कुंडलिया ॥

॥ झीणो मारग जैनको भाष्यो श्री भगवंत गुरु गम विन पार न ल हे कोटि करो बुधिवंत कोटि करो वुधवंत खंत धरि मनमें ऊंची तालो कवहु न खुले ठाम विन वैठाकूंची कृष्णलाल इम कहे सुणो नर वुधपर वीणो भाष्यो श्री भगवंत जैनको मारग झीणो ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्वेत कृष्ण दोउ वरन हे चरन नही वहु जा य ॥ मौनी वहु भाषी भणो अनयाची अतिचाय ॥ ॥ ३३ ॥ कागज सरिता घन घटा करसनेन दधि पा त्र ॥ अहि कंचुकि इत्यादि वहु अर्थ करो

त्र ॥ ३४ ॥ साध मिथ्या सुलटो करो उलट पापमें धार ॥ सुलटा नूपण नूपके उलटा गिणो असार ॥ ॥ ३५ ॥ सुलटा उलटा एक हे केवल अक्षर तीन॥ दुख पावे परआातमा मत नापो परवीन ॥ ३६ ॥

॥ घनाक्षरी छंदः ॥

॥ जीव नेद वाण शतत्रेसठ विचार उर अनिह या दिकताही दश गुणा कीजिये तीन करण तीन गुणा दूणा राग द्वेष वश तीन जोगस्यूंणा तिहु का ल ते धरी जिये साख अरिहंत सिद्ध आचारज उ वज्झाय साधू आा तमारी पट गुणाकर लीजिये गरा लाख चौवीस हजार एक शतवीस कृष्णलाल मि थ्या दुक्कत युं नित दीजिय ॥ ३७ ॥ ज्ञानका चतुर दश वाणं समकितकेरा वेद इरजारा नेज नापारा उ दार हे गुरुंमुनि एपणारा चोथी सुमतीरा हग पांच मीका दिगं निश नोजन छसार हे पंच महाव्रतकी पचीस नावना न नूल तीन गुपतीका अंक टाले अ णगार हे पांत्रव सलेखणारा धार उर कृष्णलाल सा धुजीका एकसो पचीस अतिचार हे ॥ ३८ ॥

॥ सवैया ॥

॥ श्रेणकराय सुपास उदायण पोटिल नाम म
हा अनगारे जान दृढायु सती सुलसा पुन रेवति ना
म जलो सुविचारे ॥ सुंदर श्रावक शंख रुपोखलि स
त्तक तीसरे अंग उचारे ये नव जीव तिर्थंकर गोत
उपार ज्यो वीर जिणंदके वारे ॥ ३ए ॥

॥दोहा॥ मृग पतंग अलि मीन गज पांचू येह निदान॥
इक इक इंड्री वश पड्या प्राण करे कुरवाण ॥ ४० ॥
कुच कपोल दृग नासिका निरखत कहा सुजान ॥
काम नगर वस ऊजरे ताके आई ठान ॥ ४१ ॥ मन
तो पूरा जद हुवे ज्यो मनला रे होय ॥ मन देई म
न तो लिये इम जाषे सच कोय ॥ ४२ ॥

॥ सवैया ॥

॥ जीमत देखि कटोरी अमोलक ठीके धरी ज
लसूं जर पागे वारी पियो नये घोट जरी तिन जाय
धरी जलमें अनुरागे ॥ जाग धनी पग खोजलियो
पुन जीमत पाण कह्यो लेहि सागे लाल कहे वुध
कोटि करो नहि जोर चले ठगको ठग आगे ॥४३॥
क्रोध मुखी पति जूतके जूत धरे तब ठोड गया वेहुं
आगे सिध साधक हो परदेश जमे धन पात्र कियो

द्विजकूं सुररागे नृप पुत्रके जाय लग्योजु मना कर
काम पड्या कह्यो आगइ सागे लाल कहे मर मान
वको कहा मारके आगल भूत ही भागे ॥ ४४ ॥
॥ दोहा ॥ भगसागर सबसे वडो भव सागरको हेतु ॥
जामें डुब्यो सकल जग किण हि न बांध्यो सेतु ॥
॥ ४५ ॥ भगसागर सबसे वडो भव अर्णवको हेतु॥
उतरि गये कोउ संत जन बांध ज्ञानको सेतु ॥४६॥
॥ सवैया ॥ कोडे चढ्यो आवे ठे तुं मुंडे पाटी बांध ईरू
निकल अगासूं ना तो पीट स्युं अवारके घाल झो
ली पातरामें आय झन्नो जम्म जेसो मुंम्क्युं मुंमायो
सारा ठोम्कि घरबारके ॥ कपडा मलीन महा दीस
ता अडोल दीसो शुची कोन देश जावो मांगो ओ
सवारके लाल कहे हात धोया रोटी तो न देवेता
ते चीकणी सुपारी जेसा लोक हे ढुंढारके ॥ ४७ ॥
॥ दोहा ॥ जीव अनंता मुक्तिमें गया रुजासी जाय॥
पिण खेतर रोके नही जिम विद्या घट मांहि ॥ ४८ ॥
आय काय धन धान तिम दोपद चोपद जान ॥ वर
न गंध रस फरस ये दश बोलाकी हान ॥ ४९ ॥ स्वै
रिणी वनिता दंत्र सो किम जाणे संसार ॥ बाहिर
बाजु रोवणो भीतर रोवण जार ॥ ५०॥ क्रोध कियां

प्रीती घटे मान विनयको नाश ॥ माया मित्राईपणो लोभे सरव विनाश ॥ ५१ ॥ उत्तम प्रीति दशांक ज्युं मध्यम नवका लेख ॥ अधम प्रीति वसु अंक ज्युं गुणाकार कर देख ॥ ५२ ॥

॥ शिखरणी ॥

॥ नताहक्कर्पूरे नचमलय जेनो मृगमदे फलेवा पुष्पे वा तव भवति याहक् परिमलः ॥ परंत्वेको दोष स्त्वयि खलु रसाले यदधिकः पिकेवा काकेवा लघु गुरु विशेषं नमनुते ॥ ५३ ॥ जमा हीरा पाहू विच मुगटमें काच शकलंन ही रे कायामें तनकभरभी दो ष समझे ॥ कहेगे ज्ञानी यूं यह जमनवालेकी शठ ता विकेगे तावेला रहतु वर हीरा किसनवो ॥ ५४॥ हुवा कवा जाके स्थिति सुभग उच्चैः सदनपे रहा हं सा नीचैः क्षिति पर नही मान मनमें ॥ गये उच्चैः कवा नहि वनत वो हंसक वहु रहे नीचै हंसा किस न कवही काक न वने ॥ ५५ ॥

॥ सवैया ॥

॥ प्यार करि वोले तासें वोलिये हजार वारताकी शुभ संगतिसूं प्रेम रस पीजिये टेढो होय रहे तासे चोगुणीसी टेढी गतिवाको कभी भूल भोर नासहु

न लीजिये ॥ मित्र वोही जाणिये ज्यो काम पड्या काम देवे एवदार आदमीको नरोसो न कीजिये नर कहा नारी कहा गेटो अरु वमो कहा आपको न चाहे ताके धूडला रे दीजिये ॥ ५६ ॥ गंधसार रूप रे ज्यो मक्षिका न वैठे आय चंदनको मोल तामें घाटतो न मानीहे मनीको परीख जाणे जोहरी जगतमांही हियो दृग अंग सोतो पाच काच जानी हे ॥ जाके ढिग देव द्रुम चिंतामणी काम धेनु ताके तो सदीव काल आनंद वखानी हे पक्षपात गानेकू रु आपहीकी ताने रूढ मूढ जो न माने तो हमारें कहा हानी हे ॥ ५७ ॥ मेंणदांते लोह चिणा चावे तो न पावे सुख पांव करि आगिखूं देताकूं दुख दानी है पिसुन पराई करे राईकी सुमेर जेती कुगतिको घर पाप पंदरमो गानी है नीच हुं में नीच महा निंदक चंमाल वुरो झूंठा आल देवे ताकूं नरक निसानी हे निंदकमें तेरा दोप कवहु न पावे मोख सोख जोख धोवी खर काग सो पिछानी है ॥ ५८ ॥

॥ शिखरणी ॥

॥ सदाव्यातावामाक्षणमपिनवामांगजप्रजुश्चिरंपीत्वावामाधररसमवामाजमदकम् ॥ नतारुष्टावामा नहि

खलु सुधामात्मजजिनोगतं हा तृष्णायुस्तदपिनगतः पार्श्वचरणे ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दान सियल तप भावको सुयश न जाके मांहि॥ किसन कहे तेहि ग्रंथको स्वपने हु देखिये नाहि ॥ ॥ ६० ॥ लाख वातकी एक हे क्यों करिये वकवाद॥ ज्यो पीवे सो जानही अनुभव रसको स्वाद ॥६१॥ अजे उदासी ना भयो देख जगत व्यवहार ॥ किस न कहे मुज जीवकूं लानत वार हजार ॥ ६२ ॥ आतम निंदा माहरी करतां नावे ओर ॥ दूषण देखूं पारका ए मुज मोटी खोर ॥ ६३ ॥ पेखत रागविलकों नयन ठरे सुख पोष ॥ वांचत हृदय प्रमोद दे परमारथसे मोख ॥ ६४ ॥ जो नर राग विलास सुंनि रीझयो नही लिगार ॥ सो पखपाती मूढ जन के वहुलो संसार ॥ ६५ ॥ भक्ति भावसूं में करूं पंडित सूं अरदास ॥ लीज्यो अर्थ सुधारके मत कीजो उपहास ॥ ६६ ॥ संसकरत जानू नही नहि पिंगलको ज्ञान ॥ कवि पंडित करियो कृपा लाल वाल सम जान ॥ ६७ ॥ सुसर कंठ गायन हुवे जाणे राग सुभेद ॥ श्रोता सुण रीझे सही राग पंचमो वेद ॥६८॥

भूल सुधारो करि कृपा दृष्टि दोषको जान ॥ किसन लाल विनती करे तिणपर दीज्यो ध्यान ॥ ६९ ॥ न्युनाधिक ज्यो में कह्यो विन उपयोगे कोय ॥ मन वच कायाये करी मिथ्या दुक्कृत मोय ॥ ७० ॥

॥ छप्पय मोढो ॥

॥ रुषन्न अजित जिन चंद वंदि संभव अभिनं दन सुमति पदम सूपाश चंद्र प्रभे दुख कन्दन सु विधिनाथ पुफदंत सियल श्रेयांस जिणंदा वास पूज्य भज विमल अनत सिरी धरम जिणंदा शांति कुंथु अरनाथ मल्लि मुनि सुव्रत स्वामी नमीनाथ रठनेम पास वंदू शिरनामी श्री महावीर चौवीस ये तीर्थं कर अशरन शरन तिर काल सदा कर जोरके किस् नलाल वंदत चरन ॥ ७१ ॥

॥ कवित्त ॥ महामुनि वुधरके पाट कुसलेल पूज्य जांके पाट पूज्यश्री गुमांनचंद जांनिये ॥ ताके पाट पूज्य श्री रतनचंद ज्ञाता भये ताके ज्येष्ट भ्राता गुरु रमा शशी मांनियें ॥ ताके सिष्यधीर मुनि उत्तम आचा रि गुनि ताहीकेसुसिष्य नंदरामजी पिछांनियें ॥ ताके सिष्य कृष्णलाल किधो वाललीलो ख्याल सुधारस संग्रे भाग प्रथम वखांनियें ॥ ७२ ॥

॥ सवैया ॥

चोवीसमां महावीर शूरवीर महाधीर वांणी मीं ठी खांरुखीर सिधारथ नंदहें नागनीसी नार जांन घटमें वेराग आंन जोग लियो जगत्रांन छोड्या मोह फंदहें ॥ चवदे हजारसंत तार दिया नगवंत करमां को कियो अंत पाया सुख वृन्द हें नणें मुनिचंद्र नांण सुणों हो नविकवांण महावीर ध्यांन धरतां उपजे आनंद हें ॥ १ ॥ पाप पंथपरहरें मोख पंथ पगधरे अनिमांन नहि करे निंदाको निवारीहें संसारको छोड्यो संग आलस नहीं छे अंग ज्ञान सेती राखे रंग मोटा उपगारी हें ॥ मनमांही निरमल जे सोहे गंगाको जल काटत करमदल नवतत्व धारि हें सं जमकी करे खपवारे नेदी धारे तप ऐसे अनगार ताकूं वंदना हमारीहें ॥ २ ॥ ज्ञान करी नरपूर वि कथासें रहे दूर तपस्या करन सूर मोटा अणगारी हें तरण तारण जाज आतमाका सारेकाज दोष सेती आणे लाज गुणांका नंडारी हें ॥ छोडे सव खोटा मत चोकी राखे समकित निरवद वोले सत पाप परिहारी हें विरकत रहें सदा लोन नही धारे कदा ऐसे अणगार० ॥ ३ ॥ तन सहे शीत ताप जि.

नजीको जपे जाप कर्मदल देवेकाप वहुत विचारी हें छोरु दिया धन धान ध्यावत विशुद्ध ध्यान सदा रहे सावधान कुमति विदारी हें ॥ सूंना घर समधारन करे देहीकी सार शील पाले खगधार विषे दूर वारीहें राग दोष मल धोय निरमल हुवा जोय ऐसे अणगार० ॥ ४ ॥ अखंड आचार पाले दोष सवे दूर टाले जनम मरन जाले ममताको मारी हें तपकर त न गाले नारी सामो नही न्हाले विषें दृष्टी पाठी वाले आतमा सुधारी हें ॥ छोड दिया रंग नाद नहि करे परमाद चाखे अनुभव स्वाद उगर विहारी हे वश करे तन मन जारत करमवन ऐसे अणगार० ॥ ५ ॥ ज्ञान ध्यान रहे लीन जैसे जल मांहि मीन प्रवचन रस पीन शुध गुणधारी हें इन्द्री पांच वस कीन क्राहा घणा परवीन देव गुरु धर्म तीन विशुध विचारी हें ॥ देहीने पाडत खीन होवे नही हीन दीन करम करें छीन छीन धरम का व्योपारी हें जथातथ पंथचीन मुगतीका रुंक दीन ऐसे अणगार ॥ ३ ॥ परीसा उपना धीर होवे नही दलगीर सैंठा रहे शूरवीर रूपनां लिगारी हें ममता नही शरीर परतणि जांणें पीर सचितन पीवे

नीर पाप परिहारी हें ॥ मारन करमभीर तप स्याका वाहे तीर राखे नही तकसीर आतमाको तारी हें मानो पेत राखे चीर कोफी नही एक तीर ऐसे अणगार० ॥ ७ ॥ जिनजीको लियो धम मेट दियो मिथ्यातम कामभोग दिया वम तजी रिध सारी हें साकर टाकरसम गाली वोल्या खाय गम दिवी छे आतम दम खिमा गुण भारी हें॥ वीसदो परी सा खम काट दिया निजकम जांको कासूं करे जम कुगति कुठारी हें आगममें रहेरम चाले नही धम धम ऐसे अ० ॥ ८ ॥ मुगतिको लेवे मग जोय जोय मेले पग मनमें न राखे दग तजी सब नारी हें डुरजननर मग गाल बोले मुखे अग होवे नही दग दग समता अपारी हें ॥ ज्ञान ध्यान रहेलग गुणांको नही छे थग उपदेशे तारे जग कुमति न सारी हे तपस्याको काढ्यो खग मारीने करम ठग ऐसे ॥ ए ॥ निरवदवोलें वेन सकल जीवाकासैंन चारितमें पावे चेन जगहितकारी हें सांचो जांणे मत जैन वीजा सहु माने फेन उपदेश देवे अने माया सब फारी हें वस राखे निज नैंन नारी सवे जांणे वहेन निर दोष लेवे लेण शुध ब्रह्मचारी हें ध्यांन धरे

दिनरेन समज्यां के कहण रहण ऐसे० ॥ १० ॥ करणी करे कठिन डुरवल करे तन उतारेकरम रण चोकरी घटारी हें अधिको न खावे अन तप करि दहे तन कोरी नहि एक कन ठत्ती रुध गारी हें ॥ मारीयो हे डुष्ट मन लिया वीस सात गुन हुवे न ही कृत घन सुदृष्टि निहारी हें चलो उपदेश दिन जुगतसुं तारे जन ऐसे० ॥ ११ ॥ किरिया कवाण कीध दयातणां वंध दीध सांचकी पण च सीध वहुत करारी हें तपस्याका किया वांण इरजानिसाण जांण वाजे हे मधुरी वांण ध्यानकी कटारी हें ॥ समकित सेल जाल धीरजकी धरी ढाल ज्ञान घोडे चढ्या लाल खिमातरवारी हें शीलसेना लईलार करमासुं करे रार ऐसे० ॥ १२ ॥ अकल वहुत ऊंडी सांचो पंथ लियो ढूंमी रात दिन ज्यांकी हुंमी प्रभुजी सीकारी हें ज्ञान तणी रही पीक नित्र नित्र करे ठीक सदा रहे नीरचीक माया सव डारी हें ॥ वेयालीस दोष टार निरदोष ले अहार संजमको वहे भार रीप न लिगारी हें तप तेज रह्या दीप परी साकूं लिया जीप ऐसे० ॥ १३ ॥ तजिया चंपेल तेल मान सवदिया मेल विपेरूप विपवेल उरथी उतारी

हें रात दिन ज्ञानरेल वधावे धरम वेल खेलत सुक्त
त खेल सांचा सुविचारी हें ॥ ठगारी कुमति ठेल
पांचूं मेल दिया पेल पंडिताई रेल पेल अवल अपा
री हें साहिते संजमसेल हणत करम हेल ऐसे०
॥ १४ ॥ नव हत ज्ञान नेट मिथ्यातम दियो मेट
सुरति लगाई ठेट खिमा गुणनारी हें शशि जेम
दीठसोम हुवे नही प्रति लोम देख देख चाले नो
म दया अधिकारी हे ॥ दिखावत शुध राह मेट दि
यो नवदाह सकल जीवारानाह पाप परिहारी हे
निन्न निन्न नाषे नेद मूल नही करे खेद ऐसे०
॥ १५ ॥ दिल साफ निशदिन नजतहे नगवन मि
थ्यासू न आणे मन ऐसी इगतारी हे अधिक न खा
वे अन तप करि दहे तन कोडी नही एक कन ठती
क्रुध ठारी हे ॥ धारत धरम धन ठोडे नहि एक
ठिन गोतम उपदीन धीर गुणधारी हे नलो उपदे
श मन जुगतिसूं तारे जन ऐसे ॥ १६ ॥ मिथ्या मो
ह उन मूल हिंसातजी लघु थूल फूंट नहि वोले
मूल तजी सव चोरी हे परिहरे मैथुन नवे विध त
जे धन रात नही नषे अन धरमका धोरी हे ॥ सु
गुरुकि धरी सीख कुपंथ न नरेवीख अली जेम ल

दिनरेन समज्यां के कहण रहण ऐसे० ॥ १० ॥ क
रणी करे कठिन दुरवल करे तन उतारेकरम रण
चोकमी घटारी हें अधिको न खावे अन तप करि
दहे तन कोमी नहि एक कन रती क्रध गारी हें ॥
मारीयो हे दुष्ट मन लिया वीस सात गुन हुवे न
ही कृत घन सुदृष्टि निहारी हें जलो उपदेश दिन
जुगतसुं तारे जन ऐसे० ॥ ११ ॥ किरिया कवाण
कीध दयातणां वंध दीध सांचकी पण च सीध वहु
त करारी हें तपस्याका किया वांण इरजानिसाण
जांण वाजे हे मधुरी वांण ध्यानकी कटारी हें ॥
समकित सेल झाल धीरजकी धरी ढाल ज्ञान घोडे
चल्या लाल खिमातरवारी हें शीलसेना लईलार
करमासुं करे रार ऐसे० ॥ १२ ॥ अकल वहुत ऊंडी
सांचो पंथ लियो ढूंमी रात दिन ज्यांकी हुंमी प्र
भुजी सीकारी हें ज्ञान तणी रही पीक भिन्न भिन्न
करे ठीक सदा रहे नीरभीक माया सव डारी हें ॥
बेयालीस दोष टार निरदोष ले अहार संजमको
वहे भार रीप न लिगारी हें तप तेज रह्या दीप परी
साकूं लिया जीप ऐसे० ॥ १३ ॥ तजिया चंपेल तेल
मान सवदिया मेल विषेरूप विषवेल उरथी उतारी

हैं रात दिन ज्ञानरेल वधावे धरम वेल खेलत सुकृ
त खेल सांचा सुविचारी हैं ॥ ठगारी कुमति ठेल
पांचूं मेल दिया पेल पंडिताई रेल पेल अवल अपा
री हैं साहिते संजमसेल हणत करम हेल ऐसे०
॥ १४ ॥ भव हत ज्ञान भेट मिथ्यातम दियो मेट
सुरति लगाई ठेट खिमा गुणभारी हें शशि जेम
दीठसोम हुवे नही प्रति लोम देख देख चाले भो
म दया अधिकारी हे ॥ दिखावत शुध राह मेट दि
यो भवदाह सकल जीवारानाह पाप परिहारी हे
भिन्न भिन्न भाषे भेद मूल नही करे खेद ऐसे०
॥ १५ ॥ दिल साफ निशदिन भजतहे भगवन मि
थ्यासू न आणे मन ऐसी इगतारी हे अधिक न खा
वे अन तप करि दहे तन कोडी नही एक कन ठती
रुध ठारी हे ॥ धारत धरम धन ठोडे नहि एक
छिन गोतम उंपदीन धीर गुणधारी हे भलो उपदे
श मन जुगतिसूं तारे जन ऐसे ॥ १६ ॥ मिथ्या मो
ह उन मूल हिंसातजी लघु थूल फूंट नहि वोले
मूल तजी सव चोरी हे परिहरे मैथुन नवे विध त
जे धन रात नही भषे अन धरमका धोरी हे ॥ सु
गुरुकि धरी सीख कुपंथ न भरेवीख अली भेम

हे जीव छोरी सवजोरी हें विरतक रहे सदा लोज्ज
नही धरे कदा ऐसे अणगार ताके पांवा धोक मो
री हे ॥ १७ ॥ परछन परगट मारे नही काय षट
कूरूंख देवे कट सत संमसेरी हे वर जिने मन व
ट उन मूल्या मद अठ कायासें तज्यो कपट ग्रंथ पा
स गेरी हे ॥ विचरत जोगवट नज्जपर जेम नट त
पसेती जवतट आतम उजेरी हे घणो साफ करि घ
ट रहे जिन नामरट ऐसे० ॥ १८ ॥ ज्ञान घोडे अ
सवार हुवा संत अणगार सजायना वाजासार वि
धिसम जायनें संजम सनाह टोप एको कर रह्या उ
प दया अवधिसु उंप करम समायनें ॥ दांन शील त
प जाव च्यारूं मोटा उमराव साथे हुवा समजाव
मनमें उमायने मुगति कि लारिमांय जंग करि वेग
जाय ऐसा अणगार ताकूं वंदू शिरनायके ॥ १९ ॥
काढत करम दल छोड दिया सवेछल पर ह्रव्या फू
ल फल जोवे नहि आरसी अनुकूल प्रतिकूल परी
सा अपरवल जपना रहे अचल सोही काज सार
सी ॥ मेट मिथ्या महामल ज्ञानतणी अटकल सि
खाईन परवल संसे सवटारसी आंणीने संतोष जल
मेट दीनी लोज्ज जल ऐसा गुरुधारो जीव तरे सो

ही तारसी ॥ २० ॥ संसारकी तजी लील सिद्धांतमे
करे कील सांचे मन पाले शील जोवे नही नारसी
डुरवल करि देह गिरवा गुणांरा गेह न्याती हूंती
तजो नेह माया जांणे ठारसी ॥ आतमारा टाले दोष
करमांरा करे शोष मुगतिका रुक मुनिवेगा ही व-
जारसी लेवे निरदोष दान मूल नही करे मान ऐ
सा० ॥ २१ ॥ भावनींद गई भाग जंबू जिम ऊठ्या
जाग विधीसूं लियो वेराग ठती रुध ठोरुनें मोह
तणी तजे नाग रंचक न धरे राग जगतकूं दियो त्या
ग महीदल मोरुनें ॥ वुझाइ भींतर आग दिलरा मे
टत दाग लवलेस नही लाग तप तन तोरुनें वस क
रे मन वागम्हलत मुगति माग ऐसा अणगार ताकूं
वंदूकर जोडनें ॥२२॥ सिद्धांत नांवे न सुनी मायातजी
हुवा मुनि गिरवा व होत गुनी अंगमें हुलासता भिन्न
भिन्न ज्ञान भनी चोखा गुण लेत चुनी दया करितारे
डुनी भलावेण भाषता ॥ हरषत पाप हणी घटमें अक
लघणी धारे जिनराज धणी डर नही आसता गीत
नाद तुछगनी वालदेव काम वनी ऐसा अणगार मु
नी सुख लहे सासता ॥ २३ ॥ अंगधरी उठरंग सुं
... करे भंग कुल शोभ

हे जीख ठोमी सवजोरी हैं विरतक रहे सदा लोभ
नही धरे कदा ऐसे अणगार ताके पांवा धोक मो
री हे ॥ १७ ॥ परठन परगट मारे नही काय पट
कूरूख देवे कट सत संमसेरी हे वर जिने मन व
ट उन मूल्या मद अठ कायासें तज्यो कपट ग्रंथ पा
स गेरी हे ॥ विचरत जोगवट नभपर जेम नट त
पसेती नवतट आतम उजेरी हे घणो साफ करि घ
ट रहे जिन नामरट ऐसे० ॥ १८ ॥ ज्ञान घोडे अ
सवार हुवा संत अणगार सजायना वाजासार वि
धिसम आयनें संजम सनाह टोप एको कर रह्या उं
प दया अवधिसु उंप करम समायनें ॥ दांन शील त
प भाव च्यारूं मोटा उमराव साथे हुवा समभाव
मनमें उमायने मुगति कि लारिमांय जंग करि वैठा
जाय ऐसा अणगार ताकूं वंदू शिरनायके ॥ १९ ॥
काढत करम दल ठोड दिया सवेठल पर हुया फू
ल फल जोवे नहि आरसी अनुकूल प्रतिकूल परी
सा अपरवल जपना रहे अचल सोही काज सार
सी ॥ मेट मिथ्या महामल ज्ञानतणी अटकल सि
खाईन परघल संसे सवटारसी आंणीने संतोप जल
मेट दीनी लोभ झल ऐसा गुरुधारो जीव तरे सो

ही तारसी ॥ २० ॥ संसारकी तजी लील सिद्धांतमे करे कील सांचे मन पाले शील जोवे नही नारसी दुरबल करि देह गिरवा गुणांरा गेह न्याती हूंती तजो नेह माया जांणे छारसी ॥ आतमारा टाले दोष करमांरा करे शोष मुगतिका रुक मुनिवेगा ही व-जारसी लेवे निरदोष दान मूल नही करे मान ऐसा० ॥ २१ ॥ भावनींद गई भाग जंबू जिम जम्या जाग विधीसूं लियो वेराग छती रुध छोडनें मोह तणी तजे नाग रंचक न धरे राग जगतकूं दियो त्याग महीदल मोडनें ॥ बुझाइ भींतर आग दिलरा मे टत दाग लवलेस नही लाग तप तन तोडनें वस करे मन वागम्हलत मुगति माग ऐसा अणगार ताकूं वंदूकर जोडनें ॥२२॥ सिद्धांत नांवे न सुनी मायातजी हुवा मुनि गिरवा व होत गुनी अंगमें हुलासता भिन्न भिन्न ज्ञान भनी चोखा गुण लेत चुनी दया करितारे दुनी भलावेण भाषता ॥ हरषत पाप हणी घटमेंअक लघणी धारे जिनराज धणी डेर नही आसता गीत नाद तुब्बगनी वालदेव काम वनी ऐसा अणगार मुनी सुख लहे सासता ॥ २३ ॥ अंगधरी छबरंग सुंदरीको तज्यो संग भाव नही करे भंग कुल

करसी आगम अरथ अंग चित्तमाहि धरे चंग ज्ञा
न जिस्यो तोयगंग दया मगवरसी राचत संजम
रंग आरत न धरे अंग जोरावर करे जंग पाप पर
हरसी लियां फिरे जैन लिंग रहे सदा एक रंग ऐ
सा अणगार ईश वेग शिववरसी ॥ २४ ॥ झींणो जै
नमन जाल शोधिया भीतर साल मुनी भय तजी
माल चित्त जाणें चंदणो लागो ज्ञानरंग लाल चाले
ऊर्पी तणी चाल सखरा लेवे सवाल निखरानि कं
दणो ॥ अनोपम ज्ञान आल खेलत उतम ख्याल
वेग सेव करी वाल नमी नाभीनंदणो घणो दृढ घाव
घाल पाप रिपू देत पाल ऐसा अणगार ताकूं वार वा
र वंदणो ॥ २५ ॥ भरमूं गयो अंधेर ग्रंथरास दीवी
गेर चाय नही धरे फेर शूरवीर सत्तमें मन दृढ जा
णे मेर शत्रु अघपरसेर हणतहे हेर हेर मुनी जि
न मत्तमें ॥ साही सन समसेर घोर काल लियो घे
र जमहीकूं कियो जेर चतुराई चित्तमें भगवंत वेंण
भेर वजावत वेर वेर ऐसा अणगार इश गहे शिवग
त्तमें ॥ २६ ॥ परम धरम पांम वरजीने भाववाम ह
नत हियारी हाम हूर तजे दामकूं गठत नगर गा
म थिर नही एक ठाम जतनासूं राखे जाम कानी करे

कामकूं ॥ घोर नारकीरीधाम तप करि टाले तास नीशदिन सिर नांम सुमरत सामकूं शूरपणे सगराम करीने सुधारे काम ऐसे अणगार ईश धावे शिव धामकूं ॥२७॥ कुमति जंजीर काट वहे शिवपुरवाट थिर करे नर थाट शूर अति सीमहे खंत धरी तजे खाट परदत्त लेवे पाट आंणे न हिये उंचाट निरम लनेम हे ॥ डुश्मन दियो दाट मयादया तणा मा ट शुध करे धरमवाट हियो गाडोहीम हें समता खजानो खाट करम दलदेवेकाट ऐसा अणगार ताकूं मेरी तसलीमहे ॥ २८ ॥ सहू मेट दीवीसंक पाप करी फंक फंक वरजीने मनवंक जपि जगदीशकू परहरे कामपंक फेर नही करे खंक रात दिन करे रंक काटे हे कलें सकूं ॥ अरीतणो खोवे अंक टालो नहि करे टंक देत हे मुगति रुंक डारदीवी रीसकूं अंजन मंजन अंखसोवे जिम दूध शंख ऐसा अणगार ताके पाय धरूं सीसकूं ॥२९॥ समकीत लही शुध घटमें वहुत वुध रीट जेम तजी रुध ममता मिटायनें दिल साफ जेम विध गिरवा गुणांरानि ध विद्यान्तणें वहु विध आलस उडायनें ॥ [illegible] दत्त मोहमद कार नही लोपेकद हेत कथा

करसी आगम अरथ अंग चित्तमाहि धरे चंग ज्ञा
न जिस्यो तोयगंग दया मगवरसी राचत संजम
रंग आरत न धरे अंग जोरावर करे जंग पाप पर
हरसी लियां फिरे जैन लिंग रहे सदा एक रंग ऐ
सा अणगार ईश वेग शिववरसी ॥ २४ ॥ भींणो जे
नमन भाल शोधिया भीतर साल मुनी भय तजी
माल चित्त जाणें चंदणो लागो ज्ञानरंग लाल चाले
रूपी तणी चाल सखरा लेवे सवाल निखरानि कं
दणो ॥ अनोपम ज्ञान आल खेलत उतम ख्याल
वेग मेव करी वाल नमी नाभीनंदणो घणो दृढ घाव
घाल पाप रिपू देतपाल ऐसा अणगार ताकूं वार वा
र वंदणो ॥ २५ ॥ उरमूं गयो अंधेर ग्रंथरास दीवी
गेर चाय नही धरे फेर शूरवीर सत्तमें मन दृढ जा
णे मेर शत्रु अष्टपरसेर हणतहें हेर हेर मुनी जि
न मत्तमें ॥ साही सन समसेर घोर काल लियो घे
र जमराईकूं कियो जेर चतुराई चित्तमें भगवंत वेंण
भेर वजावत वेर वेर ऐसा अणगार इश गद्ध शिवग
त्तमें ॥ २६ ॥ परम धरम पांम वरजीने भावग्राम ह
नत हियारी हाम दूर तजे दामकूं गठत नगर गा
म थिर नही एक ठाम जतनासूं राखे जाम कानी करे

कापी हें कषायनें पूजीने परमपद रिपुकर देत रद ऐसा अणगार ताकूं वंदू शिरनायनें ॥ ३० ॥ वुझा ई जीतर झाल काट दियो मोह जाल सिद्धांतकी चाले चाल खुली ज्ञान जोतहे माया नही राखे मूल किमहीन विलकुल जवजीवातणी डूल टाले मिथ्या ठोत हे ॥ अंगसे आलस ठोड गामपर ठोर ठोर जिनवेंण तणो जोर करत उदोत हे शूरपणे सगराम करीने सुधारे काम ऐसा अणगार ताकूं हमारी रूंडोतहे ॥ ३१ ॥ जगतकी तजी वुध वहु घट गइ सुद तारवानें वहु सुध अखंडत पोतहे सेंण जीम देत सीख सत्तवान तहावीख मीठी जांणे मुख दीख सिध्यातम ख्रोतहे प्रजूजीसूं धरे प्रीत गावे रूडा गुण गीतमांही वारे एक रीत तज्या सव तो तहे मुरन मुगति मांहि जेरवान वंठे नांहि ऐसा अणगार ताकूं हमारी रूंडोतहे ॥ ३२ ॥ ऐसा संत अणगार नमो सव नरनार नरन तारन हार मोटा गुणवानहे त्यांची सीखदेत मूल कुपंथ न पडे जूल सुमनिमें रह्या फूल समकित आयहे ॥ सवेया वीस मार गाया गुण आणगार आगमके अनुसार जगमें विख्यात हे नांमे मुनिचंद जांण सुनोहो नविकवांण वर्त्तीमी उलट आंण जण्यां डुख जातहे ॥३३॥इति॥

कापी हे कषायनें पूजीने परमपद रिपु कर देत रद ऐसा अणगार ताकूं वंदू शिरनायनें ॥ ३० ॥ वुजा ई जीतर जाल काट दियो मोह जाल सिद्धांतकी चाले चाल खुली ज्ञान जोतहे माया नही राखे मूल किमहीन बिलकुल जवजीवातणी डूल टाले मिथ्या गोत हे ॥ अंगसे आलस गोड गामपर गेर गेर जिनवेंण तणो जोर करत उदोत हे शूरपणे सगरास करीने सुधारे काम ऐसा अणगार ताकूं हमारी वंदोतहे ॥ ३१ ॥ जगतकी तजी वुध वहु घट गई मुद तारवानें वहु सुध अखंडत पोतहे सेंण जीम देत सीख सत्तवात तहावीख मीठी जांणे मुख दीख मिथ्यातम खोतहे प्रजूजीसूं धरे प्रीत गावे रुडा गुण गीतमांही वारे एक रीत तज्या सव तो तहे सुरन मुगति मांहि उरवात वंछे नांहि ऐसा अणगार ताकूं हमारी वंदोतहे ॥ ३२ ॥ ऐसा संत अणगार नमो सव नरनार तरन तारन हार मोटा गुणधानहे सांची सीखदेत सूल कुपंथ न पडे जूल सुमतिमें रह्या जूल समकित आथहे ॥ सवेया वीस सार गाया गुण अणगार आगमके अनुसार जगमें विख्यात हे जाणें मुनिचंद जांण सुनोहो जविकवांण वत्तीसी उचट आंण जण्यां डुख जातहे ॥३३॥इति॥